संस्थापक-
स्व.श्रीमती प्रभा शिवप्रसादजी शर्मा
संरक्षक-
श्रीमती निर्मला कमलकिशोरजी नागर, सेमली आश्रम
श्रीमती प्रतिभा आलोकजी मेहता, नई दिल्ली
श्रीमती विशाखा मौलेशजी पोट्टा, मुम्बई
श्रीमती नलिनी रजनी भाई मेहता, अहमदाबाद
श्रीमती शारदा विनोदजी मण्डलोई, इन्दौर
श्रीमती आशा ओमप्रकाशजी मेहता, भोपाल
श्रीमती उषा रमेशजी दवे, इन्दौर
श्रीमती अंजना सुरेन्द्रजी मेहता, शाजापुर
श्रीमती सुषमा सुभाषजी व्यास, भोपाल
श्रीमती प्रमिला आशीषजी त्रिवेदी, इन्दौर
श्रीमती प्रमिला ओमजी त्रिवेदी, रतलाम
श्रीमती शीला जगदीशजी दशोरा, इन्दौर
श्रीमती रमा सुरेन्द्रजी मेहता, उज्जैन
प्रधान सम्पादक-
सौ. संगीता दीपक शर्मा
सम्पादक-
सौ. दिव्या अमिताभ मण्डलोई
सौ. दमिता नवीन झा
सह सम्पादक-
सौ. रुचि उमेश झा
सौ. संगीता विनोद नागर
सौ. सुनिता धर्मेन्द्र भट्ट
सौ. अरुणा बृजगोपाल मेहता
सौ. सरोज पं. कैलाश नागर
सौ. नीलम राजेन्द्र शर्मा
सौ. नीता वाल्मिकी नागर
सौ. जया सुभाष नागर
सौ. पल्लवी जय व्यास
सौ. तृप्ति निलेश नागर
सौ. ममता मुकुल मण्डलोई
सौ. ज्योति राजेन्द्र नागर
सौ. वन्दना विनीत नागर
सौ. आशा योगेश शर्मा
सौ. संगीता प्रदीप जोशी
सौ. बिन्दू प्रदीप मेहता
सौ. पूजा अमित व्यास

सद्वचनों की वर्षा होती रहे...

नागर समाज में विभिन्न क्षेत्रों में बड़ी संख्या में गरिमामय गतिविधियों में संलग्न व्यक्तियों की लंबी फेहरिस्त है। एक नई शुरुवात के तहत सबसे पहले 'समाज के मार्गदर्शक' प्रवचनकारों का परिचय प्रकाशित किया जाएगा साथ ही संलग्न वार्षिक कैलेण्डर वर्ष 2010 में सभी प्रवचनकारों के सद्वचन को भी स्थान दिया गया है। भविष्य में समाज की हस्तियों को समूह के रूप में प्रस्तुत करते हुए पत्रकार, साहित्यकार, डॉक्टर, अधिकारी, इंजीनियर, शिक्षाविद्, उद्योगपति आदि का विवरण भी आगामी अंकों में प्रकाशित किया जाएगा। गत वर्ष से नागर कैलेण्डर के प्रकाशन की शुरुवात की गई जो इस वर्ष भी प्रस्तुत किया गया है। समाज विशेष का कैलेण्डर प्रकाशित किया जाना अपने आप में अनूठा कार्य है। हाटकेश वाणी द्वारा वाद-विवाद प्रतियोगिता के माध्यम से विचार क्रांति का जो प्रयोग शुरु किया गया है वह पूर्णतः सफल रहा है। साथ ही व्यंजन विधि प्रतियोगिता से समाज में स्वाद की नई बयार बह रही है। हमारे समाज के प्रतीक चिन्ह में कलम, कड़छी, बरछी के निशान के रूप में कलम एवं कड़छी के प्रयोग हेतु जयहाटकेश वाणी इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से प्रोत्साहित कर रही है। आपके विचारों को लेखन से 'वाणी' के रूप में बदलते हुए पत्रिका को निरंतर आकर्षक, रुचिकर एवं उपयोगी बनाने का सिलसिला जारी है। ग्रामीण-शहरी, गरीब-अमीर विभिन्न क्षेत्रों तक बसे नागरजनों को एकसूत्र में बांधने का कार्य 'वाणी' के माध्यम से किया जा रहा है। आगामी फरवरी में 'परिणय परिचय पत्रिका' का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसमें ज्यादा-से-ज्यादा विवाह योग्य युवक-युवती की जानकारी शामिल कर योग्य रिश्ते कराने का प्रयास किया जाएगा। जय हाटकेश वाणी की कोशिश है कि वह सम्पूर्ण परिवार के लिए उपयोगी बने। बच्चों के फोटो जन्मदिन एवं उपलब्धि स्वरूप प्रकाशित हों। विवाहयोग्य बच्चों के लिए सर्वोत्तम रिश्तों की खोज, समाजजनों के विचार एवं परिवार की धरोहर जिन्होंने हमारे सुखमय जीवन के लिए अपना सर्वस्व होम कर दिया है। उनके आदर्श जीवित रखते हुए उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाए रखना भी हमारा संकल्प है। **-संगीता शर्मा**

ज्यादातर लोग देश एवं समाज में फैल रही बुराईयों का जिक्र करते हुए चिंतित एवं निराश पाए जाते हैं दरअसल नकारात्मक सोच के बजाय सकारात्मक विचार रखते हुए जो लोग अच्छी बातों का प्रचार करते हैं या अच्छाई के लिए प्रयास करते है तो यह घोर अंधेरे में दिए की तरह है। बुराईयों के विरुद्ध समाज में जागृति फैलाते हुए सद्विचारों के माध्यम से आशा की लौ जलाने वाले प्रवचनकार अंततः धन्यवाद एवं बधाई के पात्र है।

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर फोन. 0731-2450018 फैक्स-0731-2459026 मो.94250-63129, 98260-95995, 94259-02495, 98260-46043, 93032-74678, 99262-85002, 93032-29908
Email-manibhaisharma@gmail.com, jayhotkeshvani@gmail.com

पं. मंडलोई का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणास्पद रहा

तीन नवम्बर को तीन भव्य आयोजन

निमाड़ के पितृ पुरुष और पूर्व मुख्यमंत्री पंडित भगवंतराव मंडलोई का शहरवासियों ने हृदय से स्मरण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किए। उपस्थितजनों ने उन्हें निमाड़ का गौरव बताते हुए उनके आदर्शों पर चलने की बात कही।

काका साहब भगवंतराव मंडलोई का संपूर्ण जीवन प्रेरणास्पद रहा है। उन्होंने राजनीति में संस्कार और आदर्शों को प्रतिष्ठापित किया है। निमाड़ के साथ ही प्रदेश के विकास में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। भावी पीढ़ी को उनके आदर्शों और जीवन से प्रेरणा लेना चाहिए। काका साहब के सेवाभावी और विकास कार्यों की गाथा शहर खुद कह रहा है। हिन्दू बाल सेवा सदन, रायचंद नागड़ा स्कूल, महारानी लक्ष्मीबाई स्कूल, पॉलिटेक्निक कॉलेज और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान सहित कई संस्थान काका साहब के जीते-जागते स्मारक हैं।

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और निमाड़ के पितृपुरुष पंडित भगवंतराव मंडलोई की 32वीं पुण्यतिथि पर मंगलवार को घंटाघर उद्यान में आयोजित पुण्य स्मरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए महापौर वीरसिंह हिंडौन ने यह बात कही। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधियों और गणमान्य नागरिकों ने काका साहब पंडित मंडलोईजी का स्मरण किया।

रघुपति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम

अतिथियों सहित नागरिकों ने उद्यान में स्थित मंडलोईजी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। इसके बाद प्रार्थना सभा में 'रघुपति राघव राजाराम, पतित पावन सीताराम...' की पावन धुन पर सभी ने पंडितजी का पुण्य स्मरण किया। प्रार्थना के दौरान गायक मनोज जोशी, दिलीप पटेल और अनिल गुहा के साथ हारमोनियम पर दीपक जोशी, भैयालाल बाकोरे, तबले पर निलेश लोने तथा ढोलक पर राजू नामदेव ने संगत की।

पत्रिका का विमोचन जीवन गाथा अर्पित

समारोह के दौरान अतिथियों द्वारा मासिक पत्रिका जय हाटकेश वाणी का विमोचन किया गया। भगवंतराव मंडलोई कृषि कॉलेज मे लगाए जाने के लिए कालेज के डॉ. पी.पी. शास्त्री को पंडितजी की जीवन गाथा पट्टिका और चित्र भेटं किया गया। जीवन गाथा का वाचन संदीप जोशी ने किया। संचालन आलोक जोशी ने किया। आभार राघवेन्द्रराव जोशी ने माना।

नागर समाज के गौरव पद्मभूषण पं. भगवंतराव मंडलोई की पुण्य तिथि पर खंडवा में विभिन्न आयोजन हुए। हमारे समाज की धरोहर पं. मंडलोई के आदर्श एवं जीवनदर्शन से प्रेरणा लेने के उद्देश्य से तीन नवम्बर को तीन बड़े आयोजन हुए अपरान्ह प्रतिमा पर माल्यार्पण के पश्चात अमोलकचन्द जैन जनता स्कूल में छात्र सम्मान समारोह के साथ वाटर कूलर फिल्टर भेंट। शाम को माणिक्य स्मृति वाचनालय में जीवन प्रबंधन के गुरु पं. विजय शंकर मेहता ने 'एक शाम हनुमान के नाम' पर व्याख्यान दिया। खास बात यह रही कि यह पं. मेहता का 200वां सम्बोधन था। तीन नवम्बर का दिन खंडवा के स्वर्णिम इतिहास के रूप में दर्ज किया जाएगा। प्रेरणादायी व्यक्तित्वों के जीवन दर्शन को याद रखना तथा उनका अनुकरण करना उन्हें जीवित रखने के समान है।

प्रतिमा के लिए सौंपा ज्ञापन

स्मरण समिति की ओर से मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान के नाम विधायक देवेन्द्र वर्मा को ज्ञापन सौंपा गया। इसमें भगवंतराव मंडलोई कृषि कॉलेज में पंडितजी की प्रतिमा स्थापना के साथ ही कालेज के लिए बीएम कॉलेज के स्थान पर पूरे नाम पद्मभूषण पंति भगवंतराव मंडलोई कृषि कॉलेज करने की मांग की गई।

मेधावी छात्रों का सम्मान

पुण्य स्मरण समिति द्वारा अमोलकचन्द जैन जनता स्कूल में मेधावी छात्र सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कक्षा 12वीं में 82.6 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विवेक विजयसिंह महोदिया और कक्षा 10वीं में 76.66 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले लखन बसंत गीर को एक-एक हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया। समिति की ओर से स्कूल में वाटर कूलर और फिल्टर भी भेंट किया गया। शुभारंभ सरस्वती वंदना और दीप प्रज्जवलन में हुआ। कार्यक्रम में विधायक देवेन्द्र वर्मा, महापौर वीरसिंह हिंडौन, अमिताभ मंडलोई और प्राचार्य के.आर. प्रजापति सहित कई गणमान्यजन उपस्थित थे।

सम्मान और परंपरा निर्वाह का दिन

स्वागत उद्बोधन देते हुए कांग्रेस नेता अमिताभ मंडलोई ने कहा आज का दिन काका साहब के स्मरण का दिन नहीं बल्कि खंडवा के सम्मान और परंपरा के निर्वाह का दिन है। मधुर व्यवहार और आदर्शों के कारण पंडितजी राजनीतिक और गैर राजनीतिक सभी लोगों के प्रिय रहे हैं। कार्यक्रम को संयोजक डॉ. मुनीष मिश्रा, विधायक देवेन्द्र वर्मा, पूर्व महापौर ताराचन्द्र अग्रवाल, चेंबर ऑफ कॉमर्स अध्यक्ष राजेन्द्र जैन, जवेरीलाल जैन, ओम सिकलीगर, एनएचडीसी संचालक राजेश डोंगरे ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर राणा सज्जनसिंह, शांतनु दीक्षित, गांधीप्रसाद गदले, फकीरचन्द जैन, नारायण नागर, गुरमीतसिंह उबेजा, पार्षद प्रकाश यादव, सुनील जैन, लव जोशी, विवक दीक्षित, सदाशिव भवरिया, रोटरी क्लब अध्यक्ष शरद जैन, अनिल बाहेती, प्रफुल्ल मंडलोई, गौरीशंकर वर्मा, डॉ. चैनसिंह वर्मा, संजीव मंडलोई सहित बड़ी संख्या में गणमान्यजन उपस्थित थे।

-प्रस्तुति- सरोज जोशी, खण्डवा

अपने संस्कारों को नए युग की टेक्नालॉजी से जोड़कर वैचारिक क्रांति करें

राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान का चतुर्थ अधिवेशन सम्पन्न

नई दिल्ली। राष्ट्रीय नागर ब्राह्मण प्रतिष्ठान का चतुर्थ अधिवेशन दिनांक 24-25 अक्टूबर 2009 को भारती विद्या भवन नई दिल्ली में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दिल्ली के सांसद जयप्रकाशजी अग्रवाल, विशेष अतिथि विश्व प्रसिद्ध अस्थि रोग विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ. पी.के. दवे एवं भारत सरकार के पूर्व शिक्षा सलाहकार प्रो. सोमदत्त दीक्षित तथा प्रतिष्ठान के प्रमुख केप्टन सी.एम.व्यास ने दीप प्रज्जवलित कर शुभारम्भ किया। सर्वप्रथम पं. महेश्वर जी पंचोली जूनागढ़ द्वारा स्वस्ती वाचन किया गया तत्पश्चात श्री किरणकांत मेहता एवं प्रेरणा मेहता उज्जैन द्वारा हाटकेश्वर वंदना की समधुर प्रस्तुती दी गई। बैठक के प्रारम्भ में मंचासीन सभी अतिथियों का दिल्ली मंडल द्वारा पुष्पहार से स्वागत किया गया। प्रतिष्ठान की सलाहकार समिति के सदस्य श्री विरेन्द्र याज्ञनिक मुम्बई ने मुख्य अतिथि को शाल एवं प्रतीक चिन्ह भेंट कर अभिवादन किया। प्रतिष्ठान के प्रमुख केप्टन सी.एम. व्यास द्वारा स्वागत भाषण दिया गया एवं प्रतिष्ठान की गतिविधियों एवं अधिवेशन संबंधी जानकारी से सदन को अवगत कराया। कार्यक्रम के विशेष अतिथि पदमश्री डॉ. पी.के. दवे ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सामाजिक एवं वैचारिक क्रांति हेतु इस प्रकार के आयोजन आवश्यक है। नागर समाज को अपने अन्तःकरण को टटोलने की आवश्यकता है। हमें अपने संस्कारों को अपनाते हुए आधुनिक युग की नई टेक्नोलॉजी को भी अपनाना होगा। उन्होंने युवाओं को इंगित करते हुए कहा कि अपना लक्ष्य ऊंचा रखे तथा उसे पाने का पूरा प्रयास करे, संकीर्ण विचारधारा को नहीं अपनावें, सामाजिक कार्य समाज के लिए करें तथा समाज की अच्छाईयों को अपनावें, पर्यावरण की रक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरुक रहे तथा तन,मन,धन से अपने आपको समाज को अर्पण कर दें फिर दुनिया की कोई ताकत आपको अग्रणी होने से नहीं रोक सकती।

प्रो. सोमदत्त दीक्षित ने कहा कि देवनागरी लिपि का आविष्कार नागर जन ने ही किया है। नागर समाज में प्रतिभाओं की कमी नहीं है आवश्यकता है उन्हें प्रेरित कर, प्रोत्साहित कर उनकी प्रतिभा को तराशना। उन्होंने कहा कि ब्राह्मण, ब्रह्मचारी एवं ब्रह्म आपस में जुड़े हुए है। जड़ हो या चेतन सभी में ब्रह्म है, मन एवं इंद्रियों का संचालन बुद्धि द्वारा होता है हमें उसका सही उपयोग कर रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहना चाहिए। दूसरों के दोषों को ढूंढने के बदले अपने दोषों को ढूंढने का प्रयास करना चाहिए।

प्रतिष्ठान के उप प्रमुख श्री नरेश राजा ने नागर जाति के इष्टदेव भगवान हाटकेश्वर एवं कुलदेवी माँ अम्बाजी के मंदिरों के रख-रखाव एवं सुविधाओं के संबंध में शासन से की जा रही कार्यवाही के बारे में सदन को अवगत कराया और सभी नागरजन से अनुरोध किया कि हाटकेश्वर यात्रा निकालकर अपने मूल स्थान गुजरात आकर अपने इष्टदेव एवं कुलदेवी के दर्शन का लाभ लें।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद जयप्रकाश अग्रवाल ने कहा कि ब्रह्म समाज ने सदा ही देश को दिशा दर्शन दिया है मैं अभिभूत हूं कि इतने विद्वजनों के बीच मुझे उपस्थित होने का अवसर प्राप्त हुआ। उन्होंने आश्वासन दिया कि दिल्ली में प्रस्तावित हाटकेश्वर धाम हेतु भूमि हस्तान्तरण हेतु शासन स्तर पर हर संभव प्रयास करुंगा ताकि आपका अगला अधिवेशन आपके अपने निज हाटकेश्वर धाम में आयोजित हो।

अधिवेशन को प्रतिष्ठान के उप प्रमुख श्री सूर्यकान्त जी नागर, कु. महाश्वेताबेन वैद्य एवं प्रतिष्ठान के सचिव राजेन्द्र नागर शाजापुर, पं. महेश्वरजी पंचोली जूनागढ़ ने भी संबोधित किया।

शाजापुर में सामूहिक विवाह सम्पन्न

शाजापुर। 22 नवम्बर रविवार को स्थानीय बालयोगी वाशु समाधि परिसर ऊं शांति आश्रम लालघाटी में पांच जोड़ों का सामूहिक विवाह समाज के लगभग 200 से अधिक लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। समारोह में शाजापुर के साथ इन्दौर, उज्जैन, खंडवा आदि क्षेत्रों के नागरजनों ने हिस्सा लिया। मप्र नागर परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र नागर, महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती निरुपमा संजय नागर, उज्जैन अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, श्री उपेन्द्र नारायण मेहता, देवास, ने आशीर्वचन दिया। मप्र नागर परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास ने स्वागत भाषण देकर हाटकेश्वर देवालय न्यास की गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। सामूहिक विवाह समिति के संयोजक युवा अध्यक्ष श्री हेमन्त दुबे ने संचालन किया। उपस्थित समाजजनों की भावना थी कि सभी नागर बहुल क्षेत्रों में प्रतिवर्ष सामूहिक विवाह आयोजित किए जाएं तथा दिखावें एवं शोबाजी में जो धन अपव्यय किया जाता है, उसे समाज उत्थान में खर्च किया जाए।

-सौ. ममता गोपालकृष्ण नागर
मो. 94250-34716

फन का फंडा

एक आदमी ने नाई से पूछा- कभी गधे की हजामत बनाई है?

नाई बोला- नहीं तो, पर आप बैठिए, मैं कोशिश करके देखता हूं।

स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार

इस वर्ष बेरछा के श्री महेश नागर को

इन्दौर। शिक्षा के क्षेत्र में समर्पित सेवा, उत्कृष्ट योगदान और असाधारण उपलब्धियों के लिए हर साल दिया जाने वाला 'स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार–2009' इस वर्ष बेरछा मण्डी के राज्य स्तरीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक श्री महेश नागर को दिया जाएगा। उन्हे ये पुरस्कार उज्जैन में आगामी 25 दिसंबर को नागर समाज के राज्यस्तरीय वार्षिक प्रतिभा सम्मान समारोह में प्रदान किया जाएगा। पुरस्कार के रुप में एक हजार रुपए नकद, स्मृति चिन्ह और प्रशस्ति–पत्र भेंट किया जाता है।

यह पुरस्कार नागर समाज के वरेण्य तथा देवास के पूर्व सहायक जिला शाला निरीक्षक स्व. रमाकांत नागर की स्मृति में उनकी पुत्री श्रीमती संगीता विनोद नागर, इन्दौर ने स्थापित किया है जो कि स्वयं भी शिक्षक हैं। वर्ष 2006 में यह पुरस्कार श्री हेमंत दुबे (शाजापुर), 2007 में सुश्री शीला व्यास (उज्जैन) तथा 2008 में श्री दिलीप मेहता (देवास) को प्रदान किया जा चुका है।

वर्ष 1978 से शिक्षा विभाग में कार्यरत श्री महेश नागर एक लोकप्रिय शिक्षक के रूप में शाजापुर जिले के बेरछा मण्डी मे पदस्थ रहे हैं। वर्ष 1991 में वे राज्यपाल द्वारा राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान से विभूषित हो चुके हैं। उनके पिता स्व. श्रीवल्लभ नागर भी राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक थे।

श्री नागर ने प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा की नवाचार पद्धति व औपचारिकेत्तर शिक्षा केंद्र के जरिए बेरछा और उसके आस पास के कई गांवों में निर्धन परिवारों के मवेशी चराने वाले तथा खेतीहर मजदूरी करनें वाले बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने की सार्थक पहल की है। जनशिक्षक के बतौर ग्रामीण क्षेत्रों में शाला भवनों के निर्माण तथा बाउन्ड्री वॉल तथा फेंसिंग आदि कार्यो के लिए जनसहयोग जुटानें में भी उनका सराहनीय योगदान रहा है। वे यूथ होस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, भारत स्काउट एवं गाइड तथा नेहरु युवा संगठन की रचनात्मक गतिविधियों में भी सक्रिय रहे हैं ।

–श्रीमती संगीता विनोद नागर
संयोजक
स्व. रमाकांत नागर स्मृति शैक्षिक उत्कृष्टता पुरस्कार

सहायता-सहयोग कोष के उद्देश्य

श्रीमती प्रभा शर्मा आकस्मिक चिकित्सा सहायता कोष का उद्देश्य है चिकित्सा में आकस्मिक रूप से लगने वाली राशि का इंतजाम। उचित चिकित्सा मार्गदर्शन एवं प्रभावित से समुचित सद्भावना। यह कोष देशभर के नागरजन जब वे इन्दौर में इलाज हेतु आते हैं तो उनके सहयोग हेतु बनाया गया है। कोष में जो भी सज्जन दानराशि देते हैं उनके नाम सिलसिलेवार प्रकाशित किए जाते है। परन्तु जिन्हें सहयोग किया जाता है उनके नाम प्रकाशित नहीं किए जाते। सहयोग पाने वालों के स्वाभिमान की रक्षा करते हुए अन्य स्थानों या रिश्तेदारों से सूचना प्राप्त कर स्वयं आगे बढ़कर कोष के प्रतिनिधि आर्थिक सहयोग करते हैं। जिन्हें आर्थिक सहयोग की आवश्यकता नहीं है उन्हें उचित मार्गदर्शन तथा संकट के समय संबल प्रदान किया जाता है। सहयोग एवं सहायता के लिए मो. 94250-63129 पर सम्पर्क करें।

-सम्पादक

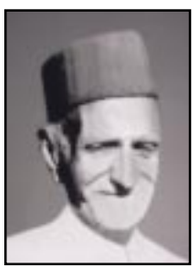

स्व. विद्याधरजी रावल सौ. सरदारीबाई रावल विद्या सहयोग कोष का उद्देश्य है नागर समाज के विद्यार्थी जो आर्थिक कारणों से पढ़ाई नहीं कर पा रहें हों उन्हें शिक्षण शुल्क की व्यवस्था करना। यदि शैक्षणिक सामग्री या शाला प्रवेश में दिक्कतें आ रही हो तो उनका समाधान। हमारा प्रयास है कि वास्तविक जरूरतमंद समाज के विद्यार्थियों के बारे में सूचनाएँ समाजबंधु हमें उपलब्ध करवाएं तथा हम आगे बढ़कर उनकी यथासंभव मदद करें। इस कोष से भी जिन्हें मदद दी जाती है उनके नाम प्रकाशित नहीं किए जाते हैं। उपरोक्त कोष में दानदाताओं के नाम अवश्य प्रकाशित किए जाते हैं। अतः कोष सम्बंधि पूछताछ एवं सहयोग के लिए कृपया मोबाइल नं. 94250-63129 पर सम्पर्क करें।

फन का फंडा

बेटा- पिताजी हम घर में जो भाषा बोलते हैं उसे मातृभाषा क्यों कहते हैं?

पिता- घर में तुम्हारी मां बराबर बोलती रहती है, पिता को बोलने का मौका ही नहीं देतीं।

मालवा उत्सव में घर जैसे व्यंजन उपलब्ध कराए देशी-विदेशी मेहमानों को

इन्दौर। आजकल क्षेत्रीय उत्सवों का चलन विशेष रूप से चल पड़ा हैं। जत्रा, मालवा उत्सव, निमाड़ उत्सव, इन्दौर उत्सव, मांडव उत्सव, महेश्वर उत्सव इत्यादि। इनमें कला, संस्कृति, गृह उद्योग, व्यवसायिकता, मनोरंजन, व्यंजन, क्षेत्र विशेष से सम्बंधित प्रदर्शन की प्राथमिकता के साथ अन्य व्यापकता का समावेश होता है।

इन्दौर के लालबाग में गांधी जयंती के साथ 2 से 6 अक्टूबर 2009 से पांच दिवसीय 'मालवा-उत्सव' आयोजन की खबर समाचार पत्र के माध्यम से देखने में आयी। विगत वर्ष 'जत्रा' के प्राथमिक अनुभव को देखते व जहन में रखते इस 'मालवा उत्सव' में क्यों न सार्थक प्रयास किया जायें? यह विचार दिमाग में आया। नागर परिवार एवं जोशी परिवार की बहू-बेटियों ने संकल्पित हो, उत्सव के व्यंजन खंड में एक स्टॉल आरक्षित कर क्यों न व्यंजन प्रेमियों को मालवी व्यंजन का रसास्वादन कराया जायें, सोचकर तैयारी में जुट गये।

श्रीमती जया नागर के नेतृत्व में दोनों परिवार की सम्मिलित सक्रियता से स्टॉल का स्वरूप साकर होने के साथ व्यंजन के प्रकार का निश्चय हुआ। उत्सव के व्यंजन खण्ड में अन्य व्यवसायिक संस्था व दुकान आदि के कई स्टॉल मालवी व आधुनिक खाद्य पदार्थ के विद्यमान थे। यहां स्वयं ही व्यंजन तय करना था। फलतः हमारे पारिवारिक स्टॉल पर 'पूरण-पोली' कढ़ी सहित। आल के मुठियां। मसाला-भात व्यंजन की व्यापक उपलब्धता के साथ आगत दीपावली त्योहार की दृष्टि से परिवारों में आवश्यकता को नजर रखते चिवड़ा (बिना तला)व चक्की के पेकेट्स की उपलब्धि का ख्याल भी रखा। मालव-उत्सव अवधि के दौरान ये सभी व्यंजन गृह-उद्योगी पारिवारिक स्वाद लिए प्रतिदिन ताजगी लिये ग्राहकों को प्रदाय किये। 'पूरण-पोली' जो कि महाराष्ट्रीयन व्यंजन है, लेकिन इसको भी मालवी-स्वाद की प्राथमिकता लिये-कढ़ी के साथ ग्राहकों की सन्तुष्टि करायी। ग्राहकों का सन्तोष ही हमारा ध्येय रहा इसीलिये स्टॉल पर उन्हें तत्काल ही गरमा-गरम तैयार कर व्यंजन प्रदाय किये। लौकी के मुठिये भी खाने-पीने के शौकिन प्रेमियों को स्वादिष्ट लगे। व मांग भी काफी रही। स्टॉल पर प्रदाय सभी व्यंजन ग्राहकों ने चटखारे लिये खाये व उनकी गुणवत्ता से सन्तुष्ट हुए। विश्वास कीजिये उत्सव की अवधि में, दो दिन की अकस्मात वर्षा के व्यवधान के बावजूद इन्दौर के व्यंजन प्रेमी शौकिन परिवार/ग्राहकों को आत्मीय भावना लिये, स्नेह, आजीजी पारिवारिक माहौल व सत्कार के साथ व्यंजनों का विशेषतः पूरण-पोली-कढ़ी व मुठिया का रसास्वादन लुत्फ के साथ कराया। उत्सव के दौरान विदेशी व्यक्तियों ने स्टॉल पर आकर पूरण पोली सेवन कर स्वाद व व्यंजन की प्रशंसा की। घर पर सेवन का आनन्द उठाने वाले परिवार। आगन्तुकों को स्टाल पर उपलब्ध सभी व्यंजन के पेकटेस मांग अनुसार देने की पूर्ति भी की गई। डायबीटिज पेशेन्ट्स के लिये उनकी मांग पर शुगर फ्री पूरण पोली की पृथक से व्यवस्था कर उनकी इच्छा पूर्ण की। इस सद्प्रयास को स्टॉल पर आने वाले प्रत्येक परिवार व्यक्ति व विदेशियों से सराहना मिली, वे व्यंजन की उत्कृष्टता, गुणवत्ता, समुचित मिश्रण, बनावट व स्वाद से तृप्ति महसूस कर मन में मिठास लेकर तारीफ करते गये। इन सबसे अधिक खासियत यह कि उत्सव में घरेलु किंचन में बनाये समान व्यंजन के पारिवारिक स्वाद ने खाने-पीने वाले इन्दौरी शौकिनों का मन मोह लिया। इसमें व्यवसायिकता की कहीं से भी कोई छाप नहीं थी। उद्यमिता के प्रति विगत अनुभव के साथ महिलाओं की प्रगति व दृढ़ता के साथ आगे बढ़ने की दिशा में नागर समाज की गृहणियों का एकल प्रयास अल्पावधि में ही सफलता की ओर कदम अहम् उपलब्धि व स्तुति योग्य है। इस प्रकार के प्रयास जागरुकता व महिला सशक्तिकरण की ओर कदम् दर कदम् होएंगे। यह अपेक्षा की जा सकती है।

-पी.आर.जोशी, इन्दौर

प्रतिभावान मास्टर प्रतिश लव मेहता का सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र भारत सरकार में 'थियेटर ड्रामा' हेतु चयन

उज्जैन। नागर ब्राह्मण समाज के उभरते हुए बाल कलाकार व मप्र नागर ब्राह्मण परिषद उज्जैन के महासचिव लव मेहता एवं उज्जैन नागर महिला मण्डल की उपाध्यक्ष श्रीमती नेहा मेहता के सुपुत्र मास्टर प्रतिश मेहता का चयन भारत सरकार के सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली में 'थियेटर ड्रामा' के अन्तर्गत हुआ है। जिसके अन्तर्गत बाल कलाकार प्रतिश मेहता को भारत शासन की ओर से प्रति वर्ष विशेष छात्रवृत्ति प्रदान की जावेगी।

वर्तमान में संस्कृति मंत्रालय भारत शासन द्वारा 20 जुलाई से 26 जुलाई 2009 तक आंध्र प्रदेश के हैदराबाद स्थित शिल्परमण आर्ट एवं क्राफ्ट सोसायटी में आयोजित कार्यशाला में भाग लेकर मा. प्रतिश ने थियेटर ड्रामा के विभिन्न रूपों को प्रस्तुत किया जिसमें 'अश्वत्थामा' के पात्र के प्रस्तुती करण पर विशेष प्रशंसा प्राप्त की साथ ही आपने समापन दिवस पर दिनांक 26 जुलाई 2009 को सम्पूर्ण कार्यक्रम में एंकरशीप (संचालन) कर उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

उल्लेखनीय है कि मा. प्रतिश उक्त कला के साथ ही क्रिकेट में भी अन्डर 16 के संभाग व राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में उज्जैन का प्रतिनिधित्व करते है। आपकी उक्त सफलता पर माता-पिता, दादी माँ, चाचा-चाची के साथ-साथ समाज के श्री दिलीप मेहता, मनीष मेहता, हेमन्त व्यास, योगेन्द्र त्रिवेदी, हेमन्त त्रिवेदी आदि ने बधाई देते हुए शुभकामनाएं व्यक्त की है।

-दिलीप मेहता
डी-22, वेद नगर, उज्जैन

महिला मंडल की बैठक में बोन्साई पौधों की कार्यशाला

इन्दौर। नागर महिला मंडल की आगामी बैठक 19 दिसम्बर 09 शनिवार को आयोजित की गई है जिसमें विशेष रूप से बोन्साई पौधों के बारे में जानकारी दी जाएगी। श्रीमती पद्मा कालानी जिन्हें बोन्साई पौधों के सम्बंध में विशेषज्ञता हांसिल हैं वे नागर महिला सदस्यों को उपरोक्त पौधों की देखभाल के बारे में जानकारी देंगी। गागर में सागर समाने जैसे ही बड़े-बड़े पेड़ों को गमले में उगाने की कला का लाभ लेने हेतु सभी महिला सदस्य अध्यक्ष श्रीमती उषा दवे के निवास 'मंशा' 20/7, साउथ तुकोगंज इन्दौर पर आमंत्रित है। इस सूचना को ही निमंत्रण मानें तथा चिर परिचितों को भी सूचित करने का कष्ट करें।

-श्रीमती मीना त्रिवेदी 'सचिव',
नागर महिला मंडल

राज्यस्तरीय समारोह का 24 एवं 25 दिसम्बर को उज्जैन में आयोजन

उज्जैन। मप्र नागर ब्राह्मण छात्र प्रोत्साहन समिति के 32वें राज्यस्तरीय समारोह का दो दिवसीय आयोजन निम्नानुसार किया जावेगा।

सांस्कृतिक समारोह- दि. 24 दिसम्बर 09 गुरुवार सायं 7.30 बजे
स्थान- कालिदास अकादमी कोठीरोड, उज्जैन
प्रतिभा सम्मान समारोह- 25 दिसम्बर 09, शुक्रवार दोप. 2 बजे
स्थान- विक्रम कीर्ति मंदिर कोठी रोड, उज्जैन

नागर रत्न स्व. श्री विष्णुप्रसादजी नागर की स्मृति में आयोजित समारोह के प्रायोजक रहेंगे- श्री नरेश राजा, अध्यक्ष समग्र गुजरात नागर परिषद (महामंडल), अहमदाबाद एवं श्री वीरेन्द्र व्यास अध्यक्ष, मप्र नागर ब्राह्मण परिषद (शाजापुर)। विगत वर्षों के अनुसार इस वर्ष भी आमंत्रण-पत्र नहीं छपवाए गए हैं नागर ब्राह्मण समाज का ये सार्वजनिक समारोह है। अतः समस्त नागर ब्राह्मण परिवार सादर आमंत्रित हैं। उक्त दो दिवसीय समारोह का आयोजन समिति द्वारा आप सबके स्नेह, सहयोग, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से प्रतिवर्ष किया जाता है। यह उल्लेखनीय है कि दानदाताओं से प्राप्त राशि बैंक/पोस्टऑफिस में सावधि जमा है जिससे प्राप्त ब्याज का ही उपयोग समिति आयोजन हेतु करती है। अतः समस्त नागरजनों से आर्थिक सहयोग हेतु अनुरोध है जिससे पुरस्कार द्वारा छात्रों का उत्साह वर्धन होकर समारोह की गरिमा निरन्तर बढ़ती रहे।

रमेश मेहता 'प्रतीक', अध्यक्ष
अशोक व्यास, सचिव
दिलीप त्रिवेदी, कोषाध्यक्ष

नवदुर्गोत्सव के अन्तर्गत 'प्रतिभा सम्मान' समारोह भी आयोजित

उदयपुर (राजस्थान)। दिनांक 19.9.2009 से 27.9.2009 तक आदि शक्ति अंबाजी की आराधना स्वरूप, नागर समाज उदयपुर द्वारा नवदुर्गोत्सव नागरों की मोठीपोल में नित्य पूजा-अर्चना-आराधना के साथ रात्रि में गरबों का आयोजन सानन्द खुशनुमा वातावरण में समाज के नागर परिवारों के समागम के साथ मनाया गया। 19 को देवी घटस्थापना के साथ प्रतिदिन आरती उपरांत रात्रि 9 से 12 बजे तक विभिन्न राजस्थानी लोक गरबों में पुरुष महिलाओं ने पूर्ण उत्साह आध्यात्मिक समर्पण से आनन्द के साथ गरबे किये। अद्‌भूत भक्ति मय वातावरण निर्मित हुआ। अष्टमी पर पूजन-हवन मात्र वंदना पूर्णकर नवमी पर गरबे उपरान्त विसर्जन किया। प्रतिदिन लगभग 100 से 200 नागर समाज के व्यक्तियों की उपस्थिति से आयोजन सफल रहा। अंतिम दिन नागर समाज की सभा में 'प्रतिभा सम्मान' किया गया। इस में स्वर्गीय श्री यशवन्तलाल नागर स्मृति पुरस्कार जो प्रतिवर्ष उच्चतर माध्यमिक परीक्षा बोर्ड अथवा सीबीएससी विश्व विद्यालयीन परीक्षा में सर्वोच्च प्रतिशत अंक अर्जित करने वाले विद्यार्थी को, उनके पुत्र सर्वश्री निर्मल प्रकाश नागर द्वारा वितरण किया।

मोनिका- सत्येन्द्र नागर (उदयपुर)

ग्रामीण क्षेत्र के युवकों को जोड़ने-सक्रिय करने का संकल्प

म.प्र नागर ब्राह्मण युवक परिषद का प्रांतीय सम्मेलन सम्पन्न

उज्जैन। 8 नवम्बर को उज्जैन में स्थानीय नृसिंहघाट पर मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण युवक परिषद का प्रांतीय सम्मेलन संपन्न हुआ। युवक परिषद के प्रदेश अध्यक्ष हेमन्त व्यास के संयोजन में हुए इस कार्यक्रम में प्रदेश कार्यकारिणी के लगभग सभी सदस्यों ने भाग लिया।

उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता मप्र नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र व्यास ने की। विशेष अतिथि के रूप में श्री प्रवीण त्रिवेदी (इन्दौर), महिला मण्डल प्रांताध्यक्षा श्रीमती नीरूपमा नागर (इन्दौर), मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र नागर (शाजापुर) श्री अनिलजी नागर (शाजापुर) एवं नागर समाज उज्जैन के अध्यक्ष श्री योगेन्द्र त्रिवेदी थे।

स्वागत भाषण युवक परिषद के प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमन्त व्यास द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने प्रदेश के ग्रामीण अंचलों से ज्यादा से ज्यादा युवकों को परिषद से जोड़ने, समाज हेतु युवकों में जागरुकता उत्पन्न करना, अ.भा. अधिवेशन उज्जैन में आयोजित करना, सामुहिक विवाह, यज्ञोपवित, युवक-युवति परिचय सम्मेलन आयोजित करना, मध्यप्रदेश में नागर समाज की जनगणना, मध्यप्रदेश स्तर की समाज की टेलीफोन डायरेक्ट्री एवं निवास का पता संगृहित करना, समाज हेतु स्नेह नगर उज्जैन में नई भूमि खरीदने पर विचार आदि विषयों पर चिन्तन किया गया। युवक परिषद के पथ प्रदर्शक श्री केदार रावल (इन्दौर) एवं डॉ. हेमन्त दुबे (शाजापुर) ने युवाओं का मार्गदर्शन किया। इसके पश्चात् मुख्य अतिथि श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, श्रीमती निरूपमा नागर एवं श्री राजेन्द्रजी नागर ने अपनी विशिष्ट शैली में युवाओं को संबोधित किया और विशेष अतिथि श्री प्रवीण त्रिवेदी तथा डॉ. नरेन्द्र नागरजी के उत्साहवर्धक आशीर्वचन के पश्चात् बारी थी मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद के अध्यक्ष जुझारु, कर्मयोद्धा श्री वीरेन्द्र जी व्यास की आपके ओजस्वी उद्‌बोधन से युवा लोग बहुत प्रभावित हुए।

इसके पश्चात समाज की उभरती प्रतिभा जिन्होंने अपने क्षेत्र में नागर समाज का नाम गौरवान्वित किया ऐसे श्री दीपक रावल (इन्दौर) के शासकीय अधिवक्ता, उच्च न्यायालय इन्दौर नियुक्त होने पर एवं श्री दिनेश शर्मा सरपंच ग्राम इटावा का सम्मान श्री हेमन्त व्यास ने अतिथियों के साथ किया। अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किये गये एवं आभार श्री कुश मेहता ने माना। युवक परिषद के महासचिव श्री राजेन्द्र प्रकाश व्यास ने मंच संचालन किया एवं कोषाध्यक्ष श्री आशीष मेहता ने कार्यक्रम संचालन में विशेष भूमिका निभाई।

-आशीष मेहता
कोषाध्यक्ष, मप्र नागर युवा परिषद

फन का फंडा

एक दोस्त दूसरे से- यार सिगरेट पीने वाले कभी बूढ़े नहीं होते।

दूसरा दोस्त- भाई ऐसा क्यों?

पहले ने कहा- क्योंकि वे बूढ़े होने से पहले ही भगवान को प्यारे हो जाते हैं।

।। श्री गणेशाय नमः ।।

विजय स्टील डेकोर

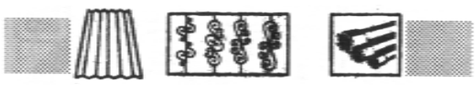

35, धनवन्तरी नगर, जी-1, राजसुधा अपार्टमेन्ट,
दधिची चौराहा, इन्दौर फोन 2321578,
मो. 98268-32786, 98936-24291

।। श्री सांई नमामि नमः ।।

फाइबर शीट मनभावन रंग एवं डिजाईन्स में रेडी स्टॉक में उपलब्ध
घर में बाल्कनी एवं सीढ़ीयों में उपयोग होने वाली
Railing Stair Case/Casting/Wrought Iron/Stainless Steel, Brass Exclusive
G.P. Fitting "Spring", Sanitary Fitting Gold Line. C.P.
की सम्पूर्ण श्रृंखला व सभी कम्पनियों के.जी.आई.पाइप के विक्रेता
सभी प्रकार के हार्डवेयर का सामान इन्दौर शहर के मूल्य पर
आपकी कालोनी में उपलब्ध
R.K. Dave (Pappu)

अल्पायु में सामुद्रिय प्रशिक्षण में श्रेष्ठतम केडेट्स का स्वर्णपदक

इन्दौर। माध्यमिक शिक्षा की पूर्णता उपरान्त, विद्यार्थियों के हेतु कौन से विशेष अध्ययन के प्रति विभिन्न विकल्पित राहें ज्ञानोर्पाजन हेतु सामने बिखरी हुई रहती है। अभिभावक के साथ अभिरूचि/आत्म-विश्वास संकल्प व परस्पर समन्वय पूर्वक विचार-विमर्श हो तो राह चुनना सहज हो जाता हैं।

मेरे नाती ने 'मर्केन्टाईल नेवी' के प्रति लगन होने से उस ओर अपने कदम बढ़ाये। 'वारटर-इन्टरनेशनल मेरीटाईम स्टडीज' के अन्तर्गत थाईलेण्ड में अपना प्रथम अभियान सफलता पूर्वक पूर्ण कर लिया। इस पूर्व समुद्रीय प्रशिक्षण में विभिन्न देशों, भारत, थाईलैण्ड, बंगला देश, नेपाल के डिग्रीधारी शिक्षित 48 केडेट्स के समूह में अल्प आयु 17 वर्षीय कुमार सत्यव्रत (बेटा-प्रदीप-चारुमित्रा) जाधव ने सर्वश्रेष्ठ केडेट का स्थान अर्जित किया एवं उसे श्रेष्ठ केडेट के स्वर्ण पदक से अलंकृत किया गया। इसी के साथ समूह में श्रेष्ठ टर्न-आऊट एवं श्रेष्ठ पॉवर ऑफ कमाण्ड के रजत पदक भी संस्था ने प्रदान किये। इन उपलब्धियों से कुमार सत्यव्रत ने नागर समाज को गौरवान्वित किया। इन उपलब्धियों की सफलता लिये कुमार सत्यव्रत अगले अभियान पर जाने के प्रति उत्साहपूर्वक प्रतिक्षारत है। इस प्रतिभा के प्रति समाज हर्षित हो अभिनंदन करता है।

-पी.आर. जोशी, इन्दौर

कु.मालिनी नागर को 50 लाख रुपये की शिष्यवृत्ति स्वीकृत

विश्व आरोग्य संगठन द्वारा आयोजित 'शिष्यावृत्ति' परिक्षा वर्ष 2008-09 में कुमारी मालिनी (खुशबू) नागर सुपुत्री श्रीमती जयश्री-अनिलकुमारजी नागर, बांसवाड़ा तथा श्रीमती चन्द्रकांता-उमाशंकर व्यास की नाती एवं श्रीमती सीमा-सुनिल कुमार व्यास आणंद गुजरात वाले की भानजी ने उपरोक्त परीक्षा 95प्रतिशत अंकों से पास करके सम्पूर्ण राजस्थान में सर्वप्रथम स्थान प्राप्तकर समस्त नागर समाज का नाम गौरवान्वित किया है। साथ ही आगे एम.पी.टी. के अध्ययन के लिए अमेरिका में जाते-आते रहने व पढ़ाई की सम्पूर्ण व्यवस्था हेतु उपरोक्त संस्था द्वारा 50 लाख रुपये की शिष्यवृत्ति भी स्वीकृत की गई है।

श्री हेमन्त व्यास की पदोन्नति न्यायालय उपाधीक्षक बनें

उज्जैन। स्व. श्री इन्द्रनारायणजी व्यास के सुपुत्र श्री हेमन्त व्यास (लेखापाल कुटुम्ब न्यायालय उज्जैन) की पदोन्नति न्यायालय उपाधीक्षक के पद पर न्यायिक जिला झाबुआ में हुई है। आपने 31 जुलाई 09 को पदभार ग्रहण कर लिया है। आपको बधाई।

धन्वन्तरी जयंती महोत्सव में वैद्य बालकृष्ण व्यास का सम्मान

उज्जैन। प्रतिवर्षानुसार उज्जैन में कार्तिक कृष्णपक्ष त्रयोदशी गुरुवार 15 अक्टूबर 2009 को प्रातः 10.30 बजे से आयुर्वेद प्रवर्तक भगवान श्री धन्वन्तरी जयन्ती महोत्सव का आयोजन श्री शर्मा आयुर्वेदिक भवन वैद्यनाथ शो-रुम धन्वन्तरी आयुर्वेद फ्रीगंज में आयोजित हुआ।

इस अवसर पर श्री अवन्तिका देशी चिकित्सक मंडल द्वारा वैद्य बालकृष्ण व्यास उज्जैन को शालश्रीफल, पुष्पहार और प्रशंसा पत्र द्वारा सम्मानित किया गया।

इस महोत्सव की अध्यक्षता माननीय वैद्य एस.एन. पाण्डे प्रान्ताध्यक्ष म.प्र. आयुर्वेद सम्मेलन ने की। मुख्य अतिथि माननीय श्री प्रेमचन्द गुड्डु सासंद उज्जैन, विशेष अतिथि माननीय श्री पवन जैन पुलिस महा निरीक्षक उज्जैन, विशेष अतिथि माननीय डॉ. बटुकशंकर जोशी सदस्य भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद भारत सरकार रहे।

-कृष्णकान्त शुक्ल
सी-59, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड, उज्जैन

कु. श्रद्धा का सम्मान एवं नकद पुरस्कार

उदयपुर। कुमारी श्रद्धा नागर बिटिया श्री अरुण राय-सौ. वीणाराय नागर द्वारा वर्ष 2008-09 के सत्र के अन्तर्गत केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक बोर्ड, की परीक्षा में 88.00प्रतिशत अंक अर्जित कर उत्कृष्ट श्रेणी में उत्तीर्ण हुई। फलस्वरुप कुमारी श्रद्धा नागर को सर्वश्री निर्मल प्रकाश नागर द्वारा उनके द्वारा स्थापित स्वर्गीय श्री यशवन्त लाल नागर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित कर छात्र प्रतिभा को रु. 5001/- प्रदान कर पुरकृत किया गया। श्री नागर ने छात्रा को अपना विद्याध्यन निरन्तर रख स्त्री शक्ति को हर क्षेत्र में मजबूत कर आगे बढ़ने के प्रति प्रेरणा दें उत्साहित किया। समाज के उपस्थित व्यक्तियों ने भी हर्षोल्लास के साथ प्रशंसा कर कु. श्रद्धा को आशीर्वाद सह उत्साह बढ़ाया।

मोनिका-सत्येन्द्र नागर (उदयपुर)

व्यास परिवार द्वारा एक लाख, रूपये से अधिक की घोषणा

पीपलरावां। स्थानीय नागर परिषद के सदस्य श्री चन्द्रकांत व्यास एवं क्षेत्र के प्रसिद्ध चिकित्सक श्री प्रदीप व्यास के पिता सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक पं. श्री कन्हैयालाल व्यास का गत 09 नवम्बर को 92 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो जाने पर उनकी अंतिम यात्रा में भारी संख्या में नागरिक, पत्रकार, कर्मचारी एवं अधिकारियों ने भाग लिया। इनकी निजी कृषि भूमि पर आयोजित अंतिम संस्कार के पश्चात मप्र नागर परिषद अध्यक्ष वीरेन्द्र व्यास शाजापुर, भगवताचार्य एवं ज्योतिषाचार्य पं. श्री जनेष चन्द्र नागर, पूर्व जनपद उपाध्यक्ष श्री गोपालकृष्ण व्यास। दोनों इकलेरा माताजी। पत्रकार भूपेन्द्र नागर, बाबूलाल सोनी, दाऊद खां पठान। पूर्व सरपंच रशीद द्वारा मौन रखकर सामुहिक श्रद्धांजली दी गई। शोक सभा का संचालन नागर परिषद शाखा पीपलरावां के अध्यक्ष पत्रकार श्री हरिनारायण नागर ने किया। पश्चात स्व. पं. श्री व्यास के त्रयोदशा कर्म के अवसर पर आयोजित श्रद्धांजली कार्यक्रम में उनके पुत्र श्री चन्द्रकांत व्यास एवं डॉ. श्री प्रदीप व्यास भ्राता द्वय (पीपलरावाँ) तथा सौ. निर्मला देवी-पं. जनेषचन्द्र नागर इकलेरा माताजी द्वारा अपने पिता स्व. पं. श्री कन्हैयालाल व्यास के त्रयोदशा कार्यक्रम के अवसर पर उनकी स्मृति में उनके परिवार की ओर से परिषद अध्यक्ष श्री हरिनारायण नागर ने स्थानीय नागर धर्मशाला में निर्माणाधीन सभागृह हेतु रु. 51000/- प्रदान करने की घोषणा की। इसी तरह भ्राता द्वय द्वारा स्थानीय सरस्वती शिक्षा मंदिर तथा श्री गणपति मंदिर हेतु इक्कीस-इक्कीस हजार रुपये तथा अम्बा माता मंदिर पालीपुरा हेतु रु. 5000 के साथ ही बाल प्रतिभा प्रोत्साहन समिति उज्जैन एवं शाजापुर हेतु पांच-पांच हजार रुपये इस प्रकार कुल एक लाख आठ हजार रुपये प्रदान करने की घोषणा की गई।

विष्णु नागर पर वृत्तचित्र

शाजापुर। स्थानीय नागनागिनी मोहल्ले में जन्मे हिन्दी के वरिष्ठ कवि, व्यंग्यार, कथाकार एवं 'संडे नईदुनिया' के संपादक विष्णु नागर के जीवन एवं रचनाकर्म पर आधारित वृत्तचित्र का निर्माण इन्दौर दूरदर्शन द्वारा किया जा रहा है। 24 नवम्बर को दूरदर्शन की टीम द्वारा प्रोड्यूसर तथा कथाकार प्रभु जोशी के नेतृत्व में नगर में दृश्यांकन किया गया। दूरदर्शन की यह टीम श्री नागर के नागनागिनी रोड स्थित पुराने निवास स्थान भी गई और इस मोहल्ले के अनेक स्थलों का दृश्यांकन एवं श्री नागर के बचपन के परिचितों से साक्षात्कार लिए गए। टीम ने उनके बचपन के मित्र कवि नरेन्द्र गौड़ एवं अरुण व्यास से भी साक्षात्कार लिए गए। यह टीम उन स्कूलों एवं महाविद्यालय भी गई जहां श्री नागर ने पढ़ाई की थी। इनमें किला स्थित प्राथमिक विद्यालय, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय क्रमांक 1 व 2 तथा नवीन शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय भी पहुंची और दृश्यांकन किया। श्री नागर को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी का शिखर सम्मान प्राप्त हो चुका है।

झाबुआ नागर समाज का अनूठा निर्णय

एक व्यक्ति एक बार अध्यक्ष बनें का प्रस्ताव पारित

झाबुआ। दिनांक 22.10.2009 को नागर ब्राह्मण परिषद द्वारा 15वां अन्नकूट महोत्सव श्री गायत्रीमाता मंदिर पर बड़ी धूम-धाम से मनाया, दोपहर 1बजे आतिशबाजी के साथ महाआरती की गई, व महाप्रसादी का सहभोज किया, आयोजन से पूर्व समाज के अध्यक्ष श्री राजेश नागर द्वारा अन्नकूट उत्सव समिति का गठन सर्व सम्मति से किया था जिसमें श्री देवेन्द्र कोठारी, श्री नारायण प्रसाद नागर एवं श्री महेश नागर (भोले) एवं महिला ईकाई की श्रीमती कोमल बेन नागर व श्रीमती आशा नागर को प्रभारी बनाया था जिन्होंने सफलता पूर्वक महोत्सव सम्पन्न करवाया।

समारोह के पूर्व समाज के संरक्षक श्री घासीराम नागर की अध्यक्षता में बैठक रखी गई, जिसमें वर्तमान अध्यक्ष श्री राजेश नागर जो पहले भी दो बार अध्यक्षपद का निर्वाह कर चुके है ने प्रस्ताव रखा कि समाज के प्रत्येक सदस्य को अध्यक्ष पद दिया जाना चाहिए, व एक बार अध्यक्ष बनने के बाद उन्हें दोबारा अध्यक्ष न बनाया जाकर उनके अनुभव का लाभ लेवें। व नई कार्यकारिणी का गठन किया जावे। उक्त प्रस्ताव का समर्थन करते हुए पिटोल के वरिष्ठ सदस्य श्री पुनमचन्द नागर ने प्रस्ताव रखा कि कार्यकारिणी का गठन श्री हाटकेश्वर जयन्ति पर किया जाए जिसे सर्व सम्मती से मान्य कर तय किया गया। व हाटकेश्वर जयन्ति की व्यवस्था हेतु सर्व सम्मती से उत्सव समिति का गठन कर श्री घासीराम नागर, श्री महेश नागर, श्री सुभाष नागर, श्री राजेश नागर, श्री शशांक नागर, श्री हरीविट्ठल कोठारी एवं महिला समिति की श्रीमती कोमल बेन नागर प्रभारी बनाये। समारोह में समाज के श्री लक्ष्मीकान्त नागर, मेघनगर से श्री जितेन्द्र नागर महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा बेन कोठारी सहित समाज के 80 सदस्यों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया। आभार समाज के सचिव नारायण प्रसादजी नागर ने माना।

-सुभाषचन्द्र नागर, उपाध्यक्ष
नागर ब्राह्मण परिषद, झाबुआ
मो. 94251-92147

जीवन का महत्व जानना है तो मृत्यु के परिणाम को जानों

यदि वास्तव में अपने जीवन का महत्व क्या है का आंकलन करना हो तो अपनी मृत्यु के पश्चात के परिणामों पर विचार करना चाहिये। तब पता लगेगा कि आपका जीवन किस जीव के लिये आवश्यक है किस के लिये आप आवश्यक नहीं है कौन आप पर आश्रित है कौन-कौन है किन पर आप बोझ है।

आश्चर्य होगा आपको हमारी वर्तमान जीवन शैली पर हम पर कोई आश्रित नहीं है। हम रहे या ना रहे जीव-जीवन बढ़ता रहेगा।

मुकुल व्ही मंडलोई 'एड्व्होकेट'
सुदामा नगर, इन्दौर फोन 2484370

जन्मदिन की बधाई

श्रीमती किमीता रितेश मेहता
जन्मदिनांक 11.12.1981
सुपुत्री- प्रद्युम्न-राधा नागर,
उज्जैन

आशुतोष नागर
जन्मदिनांक 14.12.1994
सुपुत्र- प्रद्युम्न-राधा नागर,
उज्जैन

मितव्य
जन्मदिनांक 17.12.2008
सुपुत्र- सुमित-मिकिता नागर
नाना-नानी- प्रद्युम्न-राधा नागर,
उज्जैन

संसार में पदार्पण जन्मदिन हर्षोल्लास के साथ बधाई

1- श्रीमती सौ. अलका जोशी 8.12.09
2- श्री चि.आशुतोष जोशी 10.12.09

3- श्री चि.अमित जोशी
14.12.09

4- श्री प्रदीप जाधव
24.12.09
शुभाकांक्षी- पी.जोशी परिवार-528, उषानगर, एक्स., नागर परिवार-54, प्रकाश नगर, जाधव परिवार 14, जती कालोनी एक्स., तिवारी परिवार1027, माणक चौक, महू

मुकेश आत्मज डॉ. रामरतन सुमित्रा शर्मा
जन्मदिनांक 25.11.1964
46वीं साल गिरह

चि. हर्षित
सुपुत्र- मुकेश-मनीषा शर्मा
जन्मदिनांक 25.11.1991
19वीं सालगीराह
सुमित्रा सदन 63, रविन्द्र नगर,
उज्जैन फोन 0734-2516603

चि. कपिल रावल
22 नवम्बर (सुपुत्र-राजेन्द्र - सौ. मीनाक्षी रावल)
निवास- हाकिम वाडा, रतलाम

मधुर मिलन की छठी वर्ष गांठ
25 नवम्बर 2009

मनोज-सौ. तृप्ति मित्रा तिवारी (जोशी)
(महू म.प्र.)
विकास- विजय पथ पर दाम्पत्य जीवन आनन्दमय सुखी हो
पी.जोशी-उषा नगर एक्स., जया नागर, प्रकाश नगर, प्र. जाधव परिवार इन्दौर जती कालोनी

नरेन्द्र मेहता
25 दिसम्बर
चरित्र अवि मेहता
दक्ष नताशा वोरा
मेहता शर्मा परिवार की ओर से बधाई
-सौ. गायत्री मेहता

मा. सुयश नागर
(सुपुत्र-गजेन्द्र-संगीता नागर)
22 दिसम्बर
इन्दौर मो. 94254-80957

मा. जाग्रत व्यास
(सुपुत्र- अतुल-रुपिका व्यास)
चतुर्थ वर्षगांठ
राऊ
मो. 98263-52749

जन्मदिन की बधाई

कु. यशस्वी शर्मा
सुपुत्री-दीपक-संगीता शर्मा
दिनांक 24 दिसम्बर
मो. 94250-63129

कु. मिष्टी शर्मा
सुपुत्री-मनीष-सीमा शर्मा
दिनांक 29 दिसम्बर
मो. 99262-85002

प्रथम वैवाहिक वर्षगांठ की शुभकामनाएं

श्रीमती वंदना - श्री द्विजेन्द्रजी व्यास, झाबुआ
दिनांक 23-11-2009
शुभाकांक्षी- राजेश नागर एवं परिवार (झाबुआ)

फन का फंडा

एक अफ्रीकन अपने तोते को लेकर एक बार में पहुंचा। बार टेंडर ने पूछा, 'अरे इसे तुम कहां से ले आएं?
तोता बोला, अफ्रीका से।

प्रेम

सृष्टि के सभी जीवों से प्रेम करो, यह तो दार्शनिकता की बात है। साधारण मानव अत्यन्त प्रियजन में अगाध प्रेम का आलम्बन ढूंढता है। हृदय में अपार शांति सहेजकर रखने के लिये। मिला तो मिला न मिला तो न सही। उससे करुणा का भाव उपजता है पर अपने पर ही करुणा उपजे तो यह स्थिति दयनीय हो उठती है। प्रेम का पूर्णानन्द लेना हो तो ध्यान से देखिये एक अबोध बच्ची को अपनी गुड़िया से बतियाते हुए या छोटे बालक को अपने पपी के साथ खेलते हुए। आपके हृदय में सच्चा प्यार है तो आप उस दृश्य को देखकर मगन न हों, ऐसा हो ही नहीं सकता। इसमें न लोभ होगा न स्वार्थ न दिखावा न छलावा। जिन्दगी रुकती नहीं। प्रेम पाने खोने के झकोले झेलती गुजर ही जाती है।

-श्रीमती शांति जोशी, इन्दौर
फोन 0731-2550555

वैवाहिक (युवक)

मितेश राकेश कुमार नागर
(विसनगरा)
जन्मदिनांक 25 सितम्बर 1981
(मंगल है)
शिक्षा- बी.कॉम., डी.सी.ए. कम्प्यूटर, सी.बी.सी.
कार्यरत- सुपरवाइजर, एच.आर.प्रशासन अदानी इनर्जी लिमिटेड अहमदाबाद में
सम्पर्क सूत्र- 79, गणगौर घाट, उदयपुर (राज.)
फोन 0294-2420343, मो. 99825-08235

परितोष अपूर्व ज्योति व्यास
जन्मदिनांक 22.2.1980
शिक्षा- एम.कॉम., सी.ए.
वार्षिक आय 7.5 लाख
कार्यरत- महेन्द्रा एंड महेन्द्रा प्रा.लि. अहमदाबाद
सम्पर्क- 'कमला सदन', 80ए, वीणा नगर (सुकल्या), इन्दौर फोन 0731-2572060

अचीत कपिल नागर
जन्मदिनांक 19.11.1986
शिक्षा- एम.बी.ए.
सम्पर्क- बलकेश्वर, आगरा (उ.प्र.)
मो. 098570-67788, 0562-3294577

दशोरा नागर, 27/5.10''/कौरव्य गौत्र/आद्य नाड़ी/मांगलिक नहीं/एम.एस (इनफार्मेशन टेक्नालॉजी), अमेरिका में सीनियर आय.टी. ऑडिटर के पद पर प्रथम शीर्ष कंपनी में कार्यरत् (संपूर्ण परिवार इन्दौर में) के लिये अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित एम.सी.ए./इंजीनियर/सी.ए. या समकक्ष, योग्य तथा सुंदर ब्राह्मण कन्या के प्रस्ताव आमंत्रित है। जन्म तिथि, समय व फोटो के साथ दशोरा या अन्य नागर वंशीय को प्राथमिकता।
ईमेल-akhileshster@gmail.com
मो. 09826161234

वैवाहिक (युवती)

कु. स्मृति अशोक नागर
जन्म दिनांक 3.12.1983
(समय 4.30 शाम-पचोर)
शिक्षा- बी.ए.
एवं
कु. माधुरी अशोक नागर
जन्मदिनांक 22.1.1986 (प्रातः 6 पचोर)
शिक्षा-एम.ए. अध्ययनरत डिप्लोमा इन ब्यूटीशियन
सम्पर्क-230,अनूप नगर, इन्दौर फोन 2575645,
मो. 93015-26865, 93002-94621

रितु नटवरलाल व्यास
जन्मदिनांक 22.7.1982
समय प्रातः 5.25 दौसा (जयपुर)
शिक्षा बी.एस.सी. साईंस मैथ्स
कार्यरत- शिक्षण संस्थान में
सम्पर्क- 693, सुदामा नगर, इन्दौर
फोन 0731-2482274

कु. अनिता कमला प्रसाद नागर (मांगलिक)
जन्मदिनांक 18.05.1985
दोपहर बाद
शिक्षा-बी.एस.सी. (गणित) एम.सी.ए.
सम्पर्क-15/144,शिक्षक कालोनी, राजगढ़ (ब्यावरा)
फोन 07372-254691,मो. 99265-85003

फन का फंडा

एक घर के बाहर जाकर भिखारी ने आवाज लगाई- भगवान के नाम पे कुछ दे दे बाबा।

घर के अंदर से आवाज आई, बीवी घर पर नहीं है। थोड़ी देर बाद आना।

मुझे बीवी नहीं, रोटी चाहिए, भिखारी ने जवाब दिया।

संयुक्त परिवार में बढ़ जाते हैं सुख, बंट जाते हैं दुख

समय के साथ-साथ समाज में कई बदलाव आये। समय जिस गति से पिछले कुछ सालों में भागा या यूं कहे कि जितने अधिक परिवर्तन आए उतना परिवर्तन पहले कभी देखने में नहीं आया। इसी परिवर्तन में एक सबसे बड़ा परिवर्तन आया है संयुक्त परिवारों का विघटन। देखते ही देखते पिछले कुछ वर्षों में ज्यादातर परिवार टूट कर बिखर गए और एकल परिवार की अवधारणा ने जन्म ले लिया। संयुक्त परिवार जिसमें घर के सभी लोग एक साथ रहा करते थे। जिसमें दादा-दादी, ताऊ-ताई, काका-काकी और छोटे-छोटे बच्चे सभी एक साथ एक-दूसरे की भावनाओं का आदर करते हुए कम साधन सुविधाओं में भी साथ-साथ रहकर अपेक्षाकृत अधिक सुखी जीवन का निर्वहन किया करते थे। घर के मुखिया 'दादाजी' के संरक्षण में सभी सदस्य एक साथ एक जुट होकर सुख-दुख में साथ निभाया करते थे। साथ-साथ उत्सव मनाने का आनन्द ही कुछ हुआ करता था। और परिवार पर आई मुसीबत तो दादाजी पल में दूर कर देते थे। छोटे-छोटे बच्चों के लिये तो रिश्तों की भरमार थी। सभी सदस्य उन्हें बहुत प्यार करते व उनकी देखभाल करते। उन्हें अपनी समस्याओं के समाधान के लिए केवल माता-पिता पर ही निर्भर नहीं रहना पड़ता था। बच्चों की समस्याएं निपटाने का जिम्मा तो दादाजी के पास था। दादीजी कहती 'मेरा राजा बेटा' और बच्चा खुश हो जाता। और किसी दिन एक सदस्य भी बाहर जाता तो घर में किसी को अच्छा नहीं लगता। लेकिन ये क्या? एकल परिवार की मानसिकता, धन की दौड़, 'स्व' कीभावना व अहं के भाव ने परिवारों को तोड़ के रख दिया। अब सीमित सदस्य हुआ करते हैं एक चिंटु एक चिंकी और उसके मम्मी पापा बस ये हो गया परिवार। और कभी बच्चे न हो तो सिर्फ पति-पत्नी।

-शकुन्तला नागर
1-ए-2 हाउसिंग बोर्ड कालोनी, गांधी नगर, चित्तौड़गढ़ मो. 93514-19658

रिश्ते ही रिश्ते

'निःशुल्क परिणय परिचय पत्रिका'

का प्रकाशन

जी हाँ! फरवरी 2010 का अंक आपके लिए योग्य रिश्तों की सौगात लेकर आएगा।
विवाह योग्य युवक-युवती का विवरण एवं पासपोर्ट साईज रंगीन फोटो 10 जनवरी 2009 तक हमारे पास अवश्य भेज देवें। (प्रकाशन निःशुल्क) निम्नलिखित प्रोफार्मा में

फोटो यहां लगावें

नाम .....

पिताजी का नाम .....

जन्म दिनांक..... स्थान.....

कार्यरत .....

ऊंचाई ..... वजन..... सम्पर्क/पता .....

.....फोन..... मोबाईल.....

नागर समाज की आवाज जय हाटकेश वाणी आप अभी तक सदस्य बनें या नहीं? आकर्षक रुचिकर उपयोगी तीनों विशेषताओं से परिपूर्ण

सदस्यता आवेदन पत्र

मैं .....

पूरा पता (पिनकोड सहित) .....

.....

मासिक जय हाटकेश वाणी का तीन वर्ष हेतु सदस्य बनना चाहता हूँ। जिसके लिए निर्धारित शुल्क 250/- रु. नगद/चैक/ ड्राफ्ट द्वारा निम्नलिखित पते पर भेज रहा हूँ। मैंने यह शुल्क आपके खाते पंजाब नेशनल बैंक A/C नं. 0212002100245085 में जमा किया है।

श्रीमान संपादक महोदय

मासिक जयहाटकेश वाणी

20, जूनी कसेरा बाखल (खजूरी बाजार) इन्दौर

फोन. 2450018 फैक्स-2459026 मो.9425063129

Email-manibhaisharma@gmail.com
jayhotkeshvani@gmail.com

वाद-विवाद प्रतियोगिता-5

पत्र-पत्रिकाओं के असली मालिक होते हैं पाठक

सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में दुरुह कार्य है, प्रकाशन प्रारम्भ करना तो फिर भी आसान है किन्तु उसकी नियमितता बनाए रखना आसान नहीं है। जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन जब समाचार पत्र समूह से जुड़े परिवार ने प्रारम्भ किया तो कुछ जगह विरोध के स्वर उठे, खासकर यह प्रश्न कि जब एक पत्रिका का प्रकाशन उज्जैन से हो ही रहा है तो इन्दौर से क्या आवश्यकता पड़ गई ? यह भी कहा जाता कि वह समाज द्वारा प्रकाशित है और यह पारिवारिक है। वास्तव में ज्यादा स्थानों से पत्रिकाओं का प्रकाशन होना कतई आपत्तिजनक नहीं है सवाल यह है कि जो व्यक्ति पत्रिका प्रकाशित कर रहा है वह उसकी नियमितता बनाए रखने में सक्षम है या नहीं तथा जो वादे-इरादे वह समाजजनों से करे उन्हें पूरा कर सकता है या नहीं? पूर्व में कुछेक घटनाएं हुई है कि जोर-शोर से पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरु हुआ और उन्होंने बीच में ही दम तोड़ दिया। मेरा मत है कि पत्रिका प्रकाशन के लिए केवल सदस्यता शुल्क से काम नहीं चलता। उसके लिए समाज के व्यवसायी वर्ग से विज्ञापन तथा शासकीय सुविधाओं का लाभ लेना भी अनिवार्य है। निश्चित रूप से नियमित पत्रिका का प्रकाशन कर उसे सदस्यों तक बराबर पहुंचाना आसान काम नहीं है। यही नहीं उसे रुचिकर एवं आकर्षक बनाना भी एक बड़ी चुनौती है। यह सब कर सकने में सक्षम जय हाटकेश वाणी के प्रकाशकों का इस क्षेत्र में अनुभव काम आ रहा है। वे अपने सम्पर्कों के माध्यम से शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सुविधाएं प्राप्त कर पा रहें हैं साथ ही पाठकों की भावनानुरुप पत्रिका को रुचिकर बनाने हेतु प्राप्त सुझावों पर अमल भी कर पाते हैं। खासकर सभी वर्गों को साथ ले चलने की नीयत से विशेष सफलता प्राप्त हो रही है। यह बात आप भी मानेंगे कि पत्र-पत्रिकाओं के मामले में 'छाप' लगने की बड़ी बुरी व्यवस्था है। फलाँ पत्र उस पार्टी का है, किसी की विचारधारा पार्टी विशेष के साथ होती है उसी प्रकार पत्रिकाओं पर भी छाप लगती है। अपने आप को निष्पक्ष बनाए रखना बहुत कठिन कार्य है। साथ ही अपने विरोधियों के जवाब में 'मौन' सबसे ज्यादा कारगर है। अपने कार्य एवं व्यवहार के द्वारा ही अपनी निष्पक्षता एवं योग्यता का प्रदर्शन करना उचित है। यदि सही ढंग से कार्य किया जाए तो एक सही पत्रिका कई भूमिकाएं निभाह सकती है- एक विचारोत्तेजक आंदोलन, बच्चों को समाज के संस्कार-संस्कृति की जानकारी, विवाह-सम्बंध में सहायक और समाज की धरोहर-प्रमुख हस्तियों को जीवित रखने का कार्य। आज का युग प्रोपोगंडा का है। कोई सामाजिक आयोजन है तो उसके बारे में पहले से माहौल बनाना जिससे आयोजन सफल हो सके। तथा बाद में उसका शानदार कवरेज एवं फोटो कि जो उस कार्यक्रम में न जा पाए वे पछताये। जिस प्रकार से उज्जैन से प्रकाशित हाटकेश्वर समाचार पहले व्यक्ति द्वारा ही प्रारम्भ एवं प्रकाशित किया जाता रहा बाद में उसे जीवित रखने के लिए संगठन ने हाथ में लिया। अतः सवाल यह नहीं है कि पत्रिका का प्रकाशन कौन कर रहा है। सवाल यह है कि वह समाज के हित का ध्यान रख रहा है या नहीं या वह उसे नियमित रखने में सक्षम है या नहीं। जय हाटकेश वाणी का प्रकाशन भी शिवांजली ट्रस्ट की गतिविधियों का प्रचार करने के उद्देश्य से ही करना निश्चित हुआ था। किन्तु मात्र एक उद्देश्य के बजाय उसे सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय बनाने का प्रयत्न किया गया। मात्र एक जगह नहीं देश में कहीं भी समाज हित की बात हो या कार्य हो तो उसको हम बढ़ावा दें। समाज में वैचारिक क्रांति करें क्योंकि विचार एवं उसका मंथन ही अतंतः कार्यरूप में परिणित होता है। अतः इसे बहस या वाद-विवाद का विषय बनाने के बजाय यह निर्णय किया जाए कि पत्र या पत्रिकाएं उनके प्रकाशकों की बपौती नहीं होती। जो उन्हें खरीद कर पढ़ते हैं उन्हें पसंद करते हैं वे ही उनके असली मालिक है। कोई व्यक्ति अपनी कुबत एवं पहचान का फायदा यदि समाज को दिलाता है तो उसकी कतई आलोचना नहीं होना चाहिए। एक-दो-तीन नहीं ओर भी पत्रिकाएं प्रकाशित होनी चाहिए क्योंकि प्रतिस्पर्धा बढ़ने से पूर्व से प्रकाशित पत्रिकाओं का आकर्षण निखरता है। सभी समाजजन इन सभी पत्रिकाओं का पोषण एवं प्रोत्साहन करें क्योंकि सम्पर्क के लिए यह सबसे शानदार माध्यम है खासकर वर्तमान परिवेश में। पत्रिकाओं का प्रकाशन समाज स्तर पर हो या व्यक्तिगत स्तर पर सेवाकार्य भी किसी भी स्तर पर हो समाज को उसका सही-सही लाभ मिलना चाहिए यही महत्वपूर्ण है बाकि सब बाते सब विवाद व्यर्थ हैं।

-संगीता शर्मा

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
कार्यालयः सिविल लाईन्स, खण्डवा 450 001 (म.प्र.)
उज्जवल एवं सुरक्षित भविष्य हेतु
भारतीय जीवन बीमा की अभिनव योजनाओं की विश्वसनीय जानकारी हेतु
संजय पंडित (अध्यक्ष क्लब सदस्य) 34-बी, सांईनाथ कालोनी ए सेक्टर तिलक नगर के पास, इन्दौर फोन 0731-2904072, मो. 94248-32201
शशिकांत पंडित एवं श्रीमती कामिनी पंडित विगत 29 वर्षों से कार्यरत मो. 94259-50023, 96694-00322 काल मुखी (खंडवा)
दिव्यकांत पंडित एवं श्रीमती अपर्णा पंडित आंचलिक प्रबन्धक क्लब सदस्य नागदा जिला उज्जैन मो. 94259-86344, 9827275268

वाद-विवाद प्रतियोगिता-5

समाजहित सर्वोपरी

सर्वप्रथम तो मैं सम्पादकजी से यही कहना चाहूंगी कि सामाजिक कार्य या समाज के हित में किया गया कार्य इतना महान होता है कि ये कार्य आप कैसे करते है, क्यों करते है आदि बातें गौण होती है। समाज का हर परिवार पूरे समाज का एक अंग होता है, जब हमारा हाथ पूरे शरीर की सफाई अच्छे से कर सकता है तो एक हाथ रूपी परिवार, शरीर रूपी समाज की सफाई क्यों नहीं कर सकता?

यदि हम पारिवारिक स्तर पर समाज सेवा कार्य करते है तो उस कार्य में परिवार के सभी सदस्य किसी न किसी रूप से स्वतः जुड़ जाते है, इसके कारण सर्वप्रथम तो परिवार में एकता आती है, जब पूरा परिवार एक साथ काम करेगा तो उनमें आपसी प्रेम, समझ और विश्वास बढ़ेगा, इससे परिवार के बच्चों को समाज के प्रति अपने दायित्वों की समझ आती है, वे सामाजिकता के साथ-साथ टीम के रूप में कार्य करना और मुश्किलों का हल निकालना सीखते है। यदि हमारे समाज का कोई परिवार सक्षम है और स्वेच्छा से समाज के सुधार या कल्याण हेतु कोई भी कार्य करना चाहे तो हम सबको उनका स्वागत करना चाहिये और इस पुनित कार्य में अपना यथा सम्भव सहयोग भी देना चाहिये। हमें सोचना चाहिये कि ये समाज हमारा है और इसकी भलाई चाहे एक व्यक्ति करें या परिवार या फिर कोई समूह इससे क्या फर्क पड़ता है। हमें तो उन परिवारों को प्रेरणा बनाकर अपने परिवार को भी समाज सेवा के लिये प्रेरित करना चाहिये। यदि सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है (चाहे वह किसी भी स्तर पर हो) तो इससे निश्चित ही समाज के लोग करीब आते है, एक-दूसरे की खुशियों और दुख में सम्मिलित होने के साथ-साथ, हम दूसरों को अपने विचारों और भावनाओं से अवगत करा सकते है। पत्रिका के माध्यम से आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं के कारण कई प्रतिभाएं सामने आती है। सामाजिक पत्रिका के कारण हमें समाज से जुड़ी विभिन्न जानकारी मिलती है, हमें घर बैठे ही पूरे देश में चल रही नागर समाज की गतिविधियों का पता चल जाता है, इस तरह से एक सामाजिक पत्रिका पूरे समाज को मोतियों की तरह एक डोर में पिरोकर रखती है। अंत में, मैं यही कहना चाहूंगी, जिस पत्रिका हाटकेश्वाणी के माध्यम से मैं अपने विचार व्यक्त कर रही हूं और आप सभी पढ़ रहे हैं, ये पत्रिका भी एक परिवार द्वारा प्रकाशित की जाती है।

समाज सेवा में हाटकेशवाणी का विशेष योगदान सर्वविदित है, यह लोकप्रियता ही है कि हमें हर माह बेसब्री से इसका इंतजार रहता है। हाटकेशवाणी के द्वारा सभी समाजबंधुओं को समाज की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। पत्रिका के माध्यम से बधाई संदेश, यात्रा स्मरण, पुण्यस्मरण, समाज से जुड़े मुद्दों पर ज्वलंत चर्चा, महापुरुषों के बारे जानकारियों के साथ-साथ हमें अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर मिलता है।

-कु. डिम्पल नागर, झाबुआ 94240-64104

वाद-विवाद प्रतियोगिता-5

जो समाजहित की बात करेगा वही दिलों पर राज करेगा

पत्र-पत्रिका व्यक्तिगत हो या समाज के वे पाठकों के दिल में तभी जगह बना पाते हैं जब वे पाठकों के हित की बात करते हैं। सामाजिक पत्रिका का ताना-बाना भी कुछ इसी तरह का है जो पत्रिका रुचिकर, आकर्षक एवं उपयोगी होगी उसे ही पाठक पसंद करेंगे तथा वह दिन प्रतिदिन लोकप्रिय होती जाएगी। पत्रिका को पाठकों के नजरिए से समझना देखना होगा। जय हाटकेश वाणी ने समाज के पाठकों की कसौटी पर खरा उतरने का प्रयास किया है। समय की मांग के अनुसार बदलाव एवं उन्नत तकनीक का उपयोग जरूरी है। निश्चित ढर्रे में बंधे रहने के बजाय नया सोच विकसित करना तथा उसे समाज में प्रस्तुत करना आवश्यक है। पाठकों की सहमति पा सके ऐसी बातों का प्रकाशन आज समय की मांग है। अतः सामाजिक पत्रिका चाहे वह किसी भी स्तर पर प्रकाशित हो, उसे अपने आपको समय की मांग के अनुसार ढलना होगा। यदि रुचिकर एवं आकर्षक होने के साथ वह उपयोगी है तो उसकी मांग बनी रहेगी अन्यथा वह चलन से बाहर हो जाएगी। समाज में जागरुकता फैलाने तथा उत्थान का कार्य कभी भी अनुचित नहीं होता।

-रामरतन शर्मा
सुमित्रा सदन, रविन्द्र नगर, उज्जैन
मो. 98267-23870

फन का फंडा

मुन्ना भाई - ये कइसा लोचा है सर्किट कि डॉक्टर लोग ऑपरेशन करते वक्त पेशंट को बेहोश कर देते हैं?

सर्किट- भोत शाणा होते हैं ये लोग। अगर पेशंट को बेहोश न करें तो वह ऑपरेशन करना सीख लेगा न।

विपक्ष

वाद-विवाद प्रतियोगिता-5

आपस में जुड़े और जरूरतमंद की मदद करें... यही सेवा है, सद्भावना है

सामाजिक कार्य में कई गतिविधियां होती हैं।

जैसे-

1. एक-दूसरे से जुड़ना।
2. विचारों का आदान-प्रदान।
3. प्रतिभा प्रदर्शन एवं प्रोत्साहन।
4. सामाजिक स्तर पर सहायता।
5. सुखः-दुःख में भागीदार होना।

एक-दूसरे से जुड़ने तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिए सामाजिक पत्रिका का सम्पादन यदि समाज के किसी एक परिवार द्वारा हो रहा है और उसमें समाज के अन्य व्यक्तियों को भी महत्व दिया जा रहा है तो यह अनुचित कहां हुआ? क्योंकि उसमें यदि समाज की सभी गतिविधियों की जानकारी दी जा रही है व समाज के प्रत्येक व्यक्ति की प्रतिक्रिया व सुझाव भी आमांत्रित है। जो भी प्रकाशित किया जा रहा है वह सबके सामने हैं। हम अपनी बात स्वतंत्र रूप से सबसे कह सके। ऐसा हर व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं है। यदि कोई परिवार आपको ऐसा मौका दे रहा है तो उसमें बुराई क्या है? अतः सामाजिक पत्रिका का सम्पादन एक ही परिवार द्वारा किया जाना सिर्फ तब अनुचित है जब समाजके अन्य व्यक्तियों को सम्मिलित न किया जाए। सेवाकार्य- सामाजिक स्तर पर किसी जरूरतमंद व्यक्ति की सहायता करना तथा सुख-दुख में सम्मिलित होना ही समाज को संगठित बनाता है। अपने से जो भी बन सके दूसरों की सहायता करे यही सच्ची सेवा या सेवा कार्य है।

आज के व्यस्त समय में हम चाह कर भी किसी की मदद या सेवाकार्य के लिए समय नहीं निकाल पाते हैं। यदि समय और साधन आपके पास है तब भी आप उस व्यक्ति की तलाश में रहेंगे जो जरूरतमंद है। यह भी एक कठिन कार्य है। क्योंकि कोई भी दान या सेवा जरूरतमंद व्यक्ति की हो तो ही सही है। कई बार अनुचित व्यक्ति भी उसका लाभ उठा लेते हैं। ऐसी स्थिति में आप स्वयं तय नहीं कर पाते कि किसकी मदद की जाए व किस तरह से की जाए। निश्चय ही ऐसा कार्य कुछ लोग मिलकर करें। कोई संस्था, संगठन या समूह बनाकर करें तो आसानी होती है। अपना संगठन या संस्था बनाकर आपने कार्य आरम्भ कर भी लिया तो वहां भी नाम, पद, अधिकार की लड़ाई जरुर आ जाती है तब वह कार्य 'समाज-सेवा' कम 'नाम-प्रसिद्धि' ज्यादा हो जाता है। हमारी संस्कृति में दान चाहे वह तन,मन,धन, श्रम किसी भी तरीके से किया जाए उसका बहुत महत्व है। दान से बढ़कर कोई पुण्य कार्य नहीं है। और यही दान 'गुप्त-दान' के रूप में हो तो 'सोने पे सुहागा' का कार्य करेगा।

अर्थात् कोई परिवार समाज सेवा का कार्य प्रारम्भ कर रहा है उसमें आपने अपना यथासम्भव सहयोग दिया तो यह अनुचित कहां हुआ? एक परिवार के द्वारा बोया गया सत्कार्य का अंकुर सबके सहयोग से एक बड़ा वृक्ष का रूप ले सकता है। यदि सभी समाजजन इस वृक्ष को सिंचित करेंगे तो यह वृक्ष पल्लवित होकर समाज को अच्छे फल दे सकेगा। जरूरत है सभी के निःस्वार्थ भाव से जुड़ने की। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में निष्काम भाव से कार्य करने का उपदेश दिया है। अतः नाम के स्वार्थ को छोड़ दें तो हम सच्ची निःस्वार्थ सेवा कर सकते हैं। यदि कोई पूरा परिवार समाज सेवा में संलग्न है तो यह निश्चित ही गौरव का विषय है। अतः यदि पारिवारिक स्तर पर कोई कार्य हो रहा है और हम भी जुड़ सकते हैं तो जुड़ कर उसे सामाजिक रूप दिया जा सकता है। यदि परिवार आपको जोड़ना नहीं चाहता है और उसे पारिवारिक स्तर पर ही रखना चाहता है तो उसका प्रतिसाद उसमें निहित स्वार्थ के कारण उसे उचित नहीं मिलेगा। अन्यथा यह अनुचित नहीं है।

-अल्पना दवे
259 'सी' राजेन्द्र नगर
मो. 2321470

।। जय महाकाल ।। ।। श्री हाटकेश्वराय नमः ।। ।। जय सिद्धनाथ ।।

पं. पियूष नागर (मोन्टू गुरु)

पितृ दोष एवं काल सर्पदोष विशेषज्ञ

मो. 09907528115, 09200153163

निवास- 33/2, वराही माता की गली, कार्तिक चौक, उज्जैन (म.प्र.)
कार्यस्थल- सिद्धनाथ घाट, भैरवगढ़, उज्जैन (म.प्र.)

अपने गिरेहबान में झांकने की कोशिश

जय हाटकेश वाणी पत्रिका के पाठको की भावना को जानने के लिए प्रतियोगिता का विषय रखा गया है जो एक साहसिक कदम है। व्यक्तिगत स्तर पर या पारिवारिक स्तर पर कोई सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन करता है या समाज सेवा का कार्य करता है तो परिवार का सराहनीय, साहसिक और प्रशंसनीय कदम है। काबिले तारीफ है। इसमें कुछ भी अनुचित नहीं है। अनुचित कहने वालों एवं आलोचना करने वालों को कहो कि आप भी प्रकाशन करो समाज सेवा करो आपको कौन रोकता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है समाज की गतिविधियों को सामाजिक बुराईयों को अच्छाईयों को मार्गदर्शन देकर समाज को दर्पण दिखाकर वास्तविक एवं सही तस्वीर पत्रिका के प्रकाशन के माध्यम से पेश करना समाज की सेवा है हम कहां है कहां खड़े है समाज में जागरुकता लाना भी हमारा कर्तव्य हैं। चाहे वह व्यक्तिगत हो चाहे पारिवारिक हो यह उस परिवार की सकारात्मक सोच है। पत्रिका प्रकाशन एवं समाज सेवा करने में आलोचना भी खूब होती है एवं समाज के प्रबुद्धजन भी इसमें पीछे नहीं रहते है। खुद कोई भी कार्य नहीं करेंगे लेकिन जो करेगा उसकी आलोचना पहले करेंगे। सकारात्मक सोच कम और नकारात्मक सोच ज्यादा होती है।

अकेले गांधीजी ने भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने का स्वप्न देखा था जो होने कर दिखाया, गांधीजी आगे बढ़ते गये और कांरवां जुड़ता चला गया। पारिवारिक स्तर पर यदि कोई सामाजिक कार्य करता है तो उसमें बुराई क्या है? समाज को नई दिशा देना नई रोशनी देना और नया मार्गदशन देना यह एक साहसिक कदम है चाहे वह पत्रिका प्रकाशित करके हो अथवा सामाजिक कार्य करके। समाज का परिचय सम्मेलन करके विवाह का आयोजन करके, धर्मशाला का निर्माण करके गरीब जाति बन्धुओं की आर्थिक सहायता करके समाज के हित में कार्य करना यह सब समाज सेवा है। इसको अनुचित कहना और आलोचना करना उनके प्रति अलन्याय करना है। परिवार भी तो समाज का अंग है बिना परिवार के समाज का कोई अस्तित्व नहीं है फिर समाज के लिए जो समर्पित है उसको अनुचित कहना उचित नहीं कहा जा सकता है। जहां तक आलोचना का प्रश्न है तो संतनृसिंह मेहता, कबीरदासजी, सूरदासजी, मीराजी, नामदेवजी, मोहम्मद साहब आदि सन्तो की भी समाज के लोगो ने आलोचना की थी बुराईयां की थी और अपमान भी किया था परन्तु ये सब संत इसकी परवाह न करते हुए निस्वार्थ भाव से समाज को अपने वचनों से प्रकाशित करते रहे। इसलिए जो व्यक्तिगत या पारिवारिक रूप से सामाजिक पत्रिका का प्रकाशन करता है सामाजिक कार्य करता है वह निडर निर्भय होकर इस साहसिक कार्य को करता है कुछ समय बाद आलोचक अपने आप आत्म चिन्तन करके हतोत्साहित हो जायेंगे। समाज हित में पत्रिका का प्रकाशन करते रहें सामाजिक हित में कार्य करें। अनुचित, आलोचना की परवाह नहीं करें। जय हाटकेश।

-रमेशचन्द्र नागर
3 छ 9 विज्ञान नगर, कोटा

व्यक्तिगत स्तर पर प्रकाशित पत्रिकाओं की बाढ़

अग्रवाल समाज, माहेश्वरी समाज आदि में व्यक्तिगत स्तर पर बड़ी संख्या में पत्रिकाओँ का प्रकाशन हो रहा है। नागर समाज की ही अहमदाबाद से हाटकेश मित्र विगत 14 वर्षों से धवल सुमन चंद रावल द्वारा प्रकाशित की जाती है सम्पूर्ण गुजरात में इसका प्रसार है। आगरा से प्रकाशित 'नागर समाचार' श्री गजानन्द त्रिवाडी द्वारा देशभर में प्रसारित किया जा रहा है। दरअसल समाज के संगठनों में आम तौर से गिने-चुने लोगों की सक्रिय भागीदारी रहती है। पता नहीं क्यों पूरा समाज संगठनों से नहीं जुड़ पाता जबकि पत्रकारिता ऐसा माध्यम है जो सबको जोड़ सकता है। अच्छे विचारों का प्रवाह वह समाज में कर सकता है। अतः समाज, परिवार या व्यक्ति तीनों में श्रेष्ठ वही है जो समाजहित में काम करता है।

-नीलेश नागर इन्दौर

नागर कैलेण्डर 2010 के बारे में

बहुरंगी नागर कैलेण्डर 2010 तैयार हो गया है। आगामी 15 दिसम्बर 09 से यह कैलेण्डर सभी सदस्य बंधू स्थानीय संवाददाताओं से प्राप्त कर सकते हैं। डाक से कैलेण्डर भेजा जाना सम्भव नहीं है। इन्दौर महानगर के सभी नागरबंधु यह कैलेण्डर 20,जूनी कसेरा बाखल, इन्दौर से प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही विजय नगर क्षेत्र के सदस्य श्रीमती शारदा मंडलोई स्कीम नं. 74,पलासिया क्षेत्र के सदस्य श्री संतोष व्यास बीमा नगर एवं सुदामा नगर क्षेत्र के सदस्य श्री महेश मेहता गौतमाश्रम के सामने से कैलेण्डर प्राप्त कर लेवें। किताब के साथ कैलेण्डर रियायती डाक दर पर नहीं भेजा जा सकता है अतः व्यवस्था बनाने में मदद करें।

इस कैलेण्डर को अपने कलाकोशल से आकर्षक स्वरूप प्रदान करने पर श्री अखिलेश एस.जोशी का हम सभी आभार व्यक्त करें। श्री अखिलेशजी को विज्ञापन क्षेत्र का खासा अनुभव है। आपने कई नए संस्थानों को अपने 23 वर्षों के अनुभव के फलस्वरूप नवीन आयडियाज से विज्ञापन कर जगप्रसिद्धी प्राप्त करवा दी है। आपने अपने प्रयास एवं अनुभव से पत्रिका 'मॉलकल्चर' को नई बुलंदियों पर पहुंचा दिया है। सरल स्वभाव एवं विशिष्ट ज्ञान के साथ आपकी विशेष पहचान है। मासिक जय हाटकेश वाणी के वार्षिक कैलेण्डर की डिजाईन जिसके बेकग्राउण्ड में माह के अनुसार खिलने वाले फूल विशेषता लिये हुए है। साथ ही देशभर के ऐतिहासिक हाटकेश्वर मंदिरों का समावेश आपकी कल्पना शक्ति का परिणाम है। श्री जोशी के अनुभव का लाभ इसी प्रकार 'वाणी' के पाठकों को आकर्षक साज सज्जा के रूप में भविष्य में भी मिलता रहेगा। दिसम्बर 09 के मुख पृष्ठ की आकर्षक डिजाईन भी उन्होंने ही की है। कृपया श्री जोशी को उनके प्रयोगों के लिए मोबाईल 98261-61234 पर धन्यवाद अवश्य प्रेषित करें।

अखिलेश एस.जोशी

-सम्पादक

समाज उत्थान के लिए पत्रकारिता सशक्त माध्यम

होकर मायूस यूं न शाम से ढलते रहिये,
जिंदगी भोर है सूरज की तरह निकलते रहिये।
एक ही पांव पर खड़े रहोगे तो थक जाओगे,
धीरे-धीरे ही सही मगर राह पर चलते रहिये।

के संदर्भ में पत्रकारिता समाज के उत्थान के लिये सशक्त माध्यम है जैसा कहा गया है-

Eternal vigilence is the first prize of democracy

अर्थात् निरन्तर जागरूकता ही प्रजातंत्र की सफलता की प्रथम सीढ़ी है। पारिवारिक स्तर को हम व्यापक रूप से समस्त नागर बंधुओं को हम एक परिवार के रूप में अंगिकार करते हैं, इस व्यापक परिदृश्य में समाज के उत्थान हेतु 'जय हाटकेश वाणी' जैसी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो समाज के जनककल्याणकारी स्वरूप को बढ़ावा देने की दिशा में प्रयत्नशील है। विश्वस्तर पर जैसे फ्रांसीसी क्रांति, अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम या रूस की बोल्शेविक क्रांति आदि में सर्वप्रथम वैचारिक पृष्ठभूमि निर्मित हुई। पुर्नजागरण भी एक तरह से वैचारिक क्रांति का ही स्वरूप था। इन सबमें पहले वैचारिक मंथन हुए और बाद में उसका व्यावहारिक रूप दिखाई दिया।

सामाजिक सरोकार को मूर्त रूप देने में इस तरह की पत्रिकाओं का प्रकाशन हर दृष्टि से उचित है। इन पत्रिकाओं से देश के विभिन्न भागों में स्थित नागर समाज की गतिविधियों और उपलब्धियों की जानकारियां मिलती है। हाल ही में प्रकाशित स्व. भगवतरावजी मंडलोई की स्मृति में जो विशेषांक निकला है वह समस्त नागर समाज के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। उनका गौरवमय जीवन एवं पद्म भूषण से सम्मानित व्यक्तित्व हम सब नागरों के लिए आदर्श है।

The lives of the great man reminds us, they live footprints on the sards of time.

भारतीय संदर्भ में यदि हम इसका अवलोकन करें तो पाएंगे कि हमारा स्वतंत्रता संग्राम पत्रकारिता से प्रभावित था। गुलामी के समय भी 'अमृत बाजार' पत्रिका (बंगाल), महाराष्ट्र से 'केसरी' और 'मराठा' नामक पत्रिका, 'द हिन्दू' आदि ने अप्रत्यक्ष रूप से स्वतंत्रता, प्राप्ति के लिए प्रेरणा उत्पन्न की। समाज में व्याप्त कुरीतियां व धार्मिक मतभेद, जाति व्यवस्था आदि पर राजा राममोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी आदि विचारकों ने राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता बनाए रखने के लिए लोगों को संगठित और प्रेरित किए।

कहने का अभिप्राय नागर समाज को व्यापक रूप से एक परिवार समझकर सामाजिक क्षेत्र में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए ऐसी सशक्त पत्रिकाएं समय-समय पर प्रकाशित होनी चाहिए। ये समाज को एक सूत्र में बांधती है। जागरूकता उत्पन्न करती है। जैसा कहा गया है-

'जो जागत है सो पावत है और
जो सोवत है तो खोवत है'

इस संदर्भ में विवेकानन्द का उद्घोष भी प्रेरणास्पद है

'उठो, जागो और तब तक चलते रहो जब तक कि लक्ष्य प्राप्ति न हो'

उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट है कि समाज को सुसंस्कृत, संस्कारवान और एक आदर्श समाज के निर्माण हेतु पत्रकारिता की अहम भूमिका है। नागरों का गौरवशाली इतिहास आने वाली पीढ़ी को अवगत हो, अन्य समाजों की तुलना में हमारी जो पहचान थी उसे आज अक्षूण्ण बनाए रखना हम सबका नैतिक दायित्व है। हम महान् थे, आज हीन हो रहे हैं तो क्या कल फिर महान हो सकते हैं। समाचार पत्रों का क्या महत्व है वह हम नेपोलियन जैसे तानाशाह व्यक्ति के शब्दों में समझ सकते हैं-

'मुझे तीन हजार सैनिकों से इतना डर नहीं लगता, जितना कि तीन समाचार पत्रों से लगता है।'

-विनती हिन्दप्रकाश नागर
पूर्व प्राचार्य GOV.GIRLS COLLOGE BSW
घंटाघर के पास, नागर वाड़ा (बांसवाड़ा) राजस्थान
फोन 02962-240964, मो. 9414325444

निष्कर्ष- वाद-विवाद प्रतियोगिता में पाठकों के विचार आमंत्रित किए जाने से 'जनमत' सी स्थिति निर्मित होती है। 'जय हाटकेश वाणी' के प्रकाशन को लेकर भ्रांतियां एवं गलत फहमियां दूर करने के लिए पाठकों से विचार मांगे गए दरअसल ज्यादा वोट पाने वाला स्वतः जन प्रतिनिधि बन जाता है उसी प्रकार किसी वस्तु या व्यक्ति के बारे में आलोचना के बजाय प्रशंसा की बहुलता उसे अपने आप समाज में स्थापित कर देती है। आज मौका है कि हम एक-दूसरे को छोटा-बड़ा दिखाने के बजाय एक साथ मिलकर काम करें तथा अपनी पूरी ताकत समाजोत्थान में लगाएं। इस बार प्राप्त सुझावों के अन्तर्गत वाद-विवाद प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ विचार का चयन पाठकों पर छोड़ दिया गया है। ज्यादा पाठक जिस विचार को अपना मत देंगे उसे ही 501 रु. का पुरस्कार दिया जाएगा तथा पुरस्कृत प्रतियोगी का नाम भी आगामी माह की जय हाटकेश वाणी में आप पढ़ सकेंगे। निवेदन है कि अपने विचारों के साथ फोन या मोबाइल नं. अवश्य लिखें।

वाद-विवाद प्रतियोगिता-6 का विषय है 'क्या समाज में फैली कुरीतियों को खत्म करने की शुरुवात सम्पन्न-समृद्ध वर्ग से होना चाहिए। आपके विचार हमें 25 दिसम्बर 2009 तक प्राप्त हो जाना चाहिये।

-सम्पादक

नागर समाज हेल्प लाईन

चिकित्सा सेवाएं	डॉक्टर का नाम	पता एवं फोन नं.
1. पूर्व सिविल सर्जन, पैथालॉजिस्ट	डॉ. सतीश त्रिवेदी	एम.टी.एच. कम्पाउण्ड जिला अस्पताल मोबाईल 9425313378
2. शिशुरोग विशेषज्ञ	डॉ. रेणुका मेहता M.B.B.S.एम.डी.पीडियाट्रिक्स्	11/1, एल.आय.जी. चौराहा, इन्दौर फोन 2550550
3 हृदय रोग विशेषज्ञ	डॉ. प्रदीप मेहता M.B.B.S. एम.डी.मेडीसिन	10, ओल्ड पलासिया, श्रीनगर, इन्दौर फोन 2550550/गीता भवन, अस्पताल
4. कन्सल्टेंट यूरोलॉजिस्ट एवं एन्ड्रोलॉजिस्ट गुर्दा, मूत्र रोग विशेषज्ञ एवं सर्जन	डॉ. रवि नागर M.S.DNB (urolgy)	सी.एच.एल. अपोलो हास्पीटल, ए.बी. रोड, एल.आय.जी. तिराहे के पास, इन्दौर फोन 4072550, मो. 98263-68623
5. डेन्टल सर्जन	डॉ. सौरभ नागर BDS	4/5, नाथकृपा, नाथ मंदिर इन्दौर फोन 0731-3290725, मो. 98260-82494
6. शिशु रोग विशेषज्ञ	डॉ. लोकेश त्रिवेदी एम.बी.बी.एस. डीसीएच	12-13 सिद्धार्थ विहार, प्रकाश नगर नेमावर रोड, इन्दौर मो. 98260-11078
7. स्त्रीरोग विशेषज्ञ	डॉ. प्रीति त्रिवेदी एम.बी.बी.एस.डी.जी.ओ. (बाम्बे)	93, प्रकाश नगर, नवलखा, इन्दौर मो. 98264-22058
8. रेकी मास्टर	अनिता पुराणिक टच हीलिंग, हिस्टेन्ट हीलिंग	5 नवरतन बाग, इन्दौर फोन 2492042
9. नेत्र रोग विशेषज्ञ	डॉ. शेखर मांकड़ M.B.B.S. (एम.एस.आथ्यो)	निवास-40, इन्द्रपुरी कालोनी, इन्दौर मो. 98260-49050
10. योग चिकित्सा	डॉ. ए.के. रावल	25, पत्रकार कालोनी, (साकेत), इन्दौर
(नोट- नागर बंधुओं के लिए प्रति गुरुवार 4.30 से 5.30 बजे तक निःशुल्क सेवा फोन 2565052)		
8. निःशुल्क न्यायिक सेवा	श्री ऋषि शर्मा एड्व्होकेट	49, कैलाश पार्क कालोनी मो. 9301370059

जय हाटकेश वाणी के पाठक सभी नागरबंधु अपना जातिगत परिचय देकर उपरोक्त सुविधाओं में निःशुल्क या रियायती दरों पर लाभ ले सकते हैं।

मोतिया बिंद के निःशुल्क ऑपरेशन

सुप्रसिद्ध नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. पी.एस. हार्डिया के राऊ स्थित हास्पीटल में आगामी 19 मार्च 2010 को आयोजित निःशुल्क नेत्र शिविर में मोतियाबिंद पश्चात लैंस प्रत्यारोपण निःशुल्क कराने के इच्छुक समाजजन कृपया मो. 94250-63129 से सम्पर्क करें। यदि आपको चश्मा उतारने की लेसिक सर्जरी कराना है तो इसी शिविर में आधे शुल्क में ऑपरेशन किए जाते हैं। कृपया जरूरत मंद समाज बंधु ही सम्पर्क करें।

धन्यवाद।

दशपुर से विस्थापन के पश्चात वे प्रश्नोरा से दशोरा हो गए

दशपुर में आगमन- दशोरा ब्राह्मणों का दशपुर में आगमन कई कारणों से यशोधर्मन के समय ही सिद्ध होता है। किन्तु यशोधर्मन का इस जाति को यज्ञ की दक्षिणा में दशपुर का राज्य सौंप देना सिद्ध नहीं होता। यज्ञ की यह घटना राष्ट्रकूटों के समय ई. 730 के आसपास की है जिसका किसी ने राजा यशोधर्मन अथवा दशरथ देव से जोड़ दिया हो। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि यह जाति जूनागढ़ एवं अन्य स्थानों से यवनों के आक्रमण के कारण दशपुर में राजा की शरण में आई होगी। यशोधर्मन से पूर्व यहां वैष्णव धर्मावलम्बी ही थे। यह जाति चूंकि पाशुपत मत को मानने वाली शिवोपासक जाति थी एवं हाटकेश्वर इसके इष्टदेव थे अतः इसके पहुंचने पर ही यहां पाशुपत मत का प्रचार हुआ एवं इसका प्राधान्य रहा। इन्हीं से प्रभावित होकर यशोधर्मा ने भी शैवमत को स्वीकार किया। जिससे इस मत को मानने वालों का आधिक्य हो गया। ये शिवोपासक लोग उस समय गुजरात एवं दक्षिण में ही थे तथा मध्य प्रदेश एवं अन्य उत्तरी राज्यों में वैष्णव धर्म की प्रधानता थी। अतः निश्चित ही यहां शैव धर्म का प्रचार एवं प्रसार इन्हीं के पहुंचने से हुआ। यशोधर्मन से पूर्व यहां पाशुपत मत वालों के कोई प्रमाण नहीं मिलते।

इस जाति के यशोधर्मन के समय दशपुर में पहुंचने की पुष्टि इससे भी होती है कि ये ब्राह्मण अष्टकुल के थे जिससे इन्होंने यहां हाटकेश्वर की अष्टमुखी मूर्ति का निर्माण यशोधर्मन के समय ही किया जिसके ऐतिहासिक प्रमाण हैं। यह मूर्ति इन्हीं के निर्देशन में तैयार की गई होंगी क्योंकि ऐसी मूर्ति अन्यत्र नहीं मिलती। चूंकि इनके इष्टदेव हाटकेश्वर थे अतः ये इसे हाटकेश्वर की मूर्ति मानकर इसकी आराधना, उपासना करते रहे एवं पाशुपत मत के कारण इसे पशुपतिनाथ कहा जाने लगा।

यशोधर्मा के समय इस जाति को राज्य सौंपना तो प्रमाणित नहीं होता किन्तु इसके शासन में विद्वान होने के कारण इनका प्रभुत्व अवश्य रहा था तथा शासन व्यवस्था का कार्य इन्हें सौंपा हो तथा इन्हें उच्चपदों पर नियुक्त किया हो जिससे यहां पाशुपत मत का अधिक प्रचार हुआ एवं दशपुर शैव धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। इन्हीं ब्राह्मणों के कारण यहां इस समय कला एवं साहित्य का चतुर्दिक विकास हुआ जिसका वर्णन कालीदास एवं हेवनसांग ने भी किया है। यशोधर्मा के समय वासुल एवं कक्क जैसे महान कवि एवं प्रशस्तिकार हुए जो सम्भवतः इसी जाति के लोग थे। जिनकी परम्परा मेवाड़ में आने के बाद बस-तराय सोमनाथ, नरहरि सोटिंग भट्ट, अत्रि, महेश भट्ट, एकनाथ आदि तक चलती रही। यशोधर्मन के बाद इस जाति का प्रभुत्व- यशोधर्मन के बाद भी इस शैव जाति का प्रभुत्व दशपुर पर बना रहा। राष्ट्रकूटों के प्रथम शासक नन्न के समय (ई.711) भी यहां पाशुपत मत का प्राधान्य था जिसमें 'बिनीत राशि' एवं 'दान राशि' इस मत के आचार्य थे तथा इस समय इस मत को राज्धयाश्रय प्राप्त था। ई. 1296-1314 के मध्य जब अल्लाउद्दीन ने मन्दसोर पर आक्रमण किया था तभी सम्भवतः इस जाति का कत्लेआम हुआ हो अथवा जैसा पहले कहा गया है कि किले के निर्माण के समय यह घटना हुई हो जिससे इस जाति के बचे हुए लोग मेवाड़ के राणा की शरण में आये हों। यह घटना अलाउद्दीन के समय की है क्योंकि मेवाड़ में सर्व प्रथम बसन्तराय-शोमनाथ का वर्णन उपलब्ध है जिनका जन्म बि.स.1367 (ई.1310) के आसपास माना जाता है। सम्भवतः इनके पिता जिनका जन्म विक्रम स. 1337 (ई. 1280) के लगभग हुआ था, सर्व प्रथ मेवाड़ में आये हों। इन सब प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि दशपुर में रहने वाले ये पाशुपत मत को मानने वाले निश्चित ही प्रश्नोरा नागर (दशोरा) ही थे जो यहां से विस्थापत होने के बाद अपने को 'दशोरा ब्राह्मण' कहने लगे।

नोट- इस पुस्तक के सम्मति संख्या 1 में श्री भंवरलालजी दशोरा ने संकेत दिया है कि इसमें प्रमाणिक ऐतिहासिक सामग्री जुटाने के प्रयास में कुछ कमियां रही हैं। इससे इसकी प्रामाणिकता विवादग्रस्त बनी है। इस कमी को पूरा करने हेतु यह प्रकरण जोड़ा गया है जिससे इसकी प्रामाणिकता में सन्देह न रहे। फिर भी विद्वानों के सुझाव आमंत्रित हैं।

-सौ. शीला जगदीश दशोरा

गतांक में आपने पढ़ा...

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्पष्टहै कि दशपुर में दशोरों का शासन कभी नहीं रहा। पूर्व प्रकरणों में बताया गया है कि यशोधर्मन अथवा अन्य किसी राजा ने इन्हें यज्ञ की दक्षिणा में राज्य दिया था, इस यज्ञ में गुर्जर नरेश को प्रतिहार बनाया गया था। उपरोक्त विवरण में दशपुर का राज्य दक्षिणा में देना प्रमाणित नहीं होता। इस प्रकार इन दशोरा ब्राह्मणों का राज्य मन्दसौर में होना किसी भी प्रकार से ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं होता यह जन श्रुति मात्र ही है... अब आगे..

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान
(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)
10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 3097990, मो. 9425963751

व्यंजन विधि प्रतियोगिता-3

नागर परिवारों में स्वाद की बयार बहाने तथा व्यंजन विधियों का आदान-प्रदान करने के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता शुरु की गई है। व्यंजन विधि प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार भी अब पाठकों की सहमति के आधार पर दिए जाएंगे। पाठक सबसे अच्छी विधि के बारे में कृपया प्रतियोगिता संयोजक श्रीमती अरुणा अश्विन व्यास फोन 0731-2493706 को अवगत कराने का कष्ट करें। प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार 300रु. हैं तथा व्यंजन का आगामी विषय है- मटर। तो जल्दी से जल्दी अपनी विधि हमारे पास भेज देवें।

लौकी मन्चूरीयन

सामग्री- 1/2किग्रा कीसी लौकी, 100ग्राम कीसी पनीर कार्नफ्लोर 50ग्राम, सोया सॉस, ग्रीन चीली सॉस, बारीक कटी अदरक लहसुन और हरी मिर्च। 1/2कप बारीक कटे हरे प्याज के पत्ते, नमक

विधि- मन्चूरीयन बाल्स- सर्वप्रथम लौकी, पनीर, प्याज के पत्ते नमक, 1-1/2 चम्मच सोया सॉस, 1 चम्मच चिली सॉस मिलाए। losnlloor मिला कर कोफ्ते बना कर सुनहरा होने तक तल कर अलग रखें।

ग्रेवी- एक कढ़ाई में 1 बड़ा चम्मच तेल डाल कर गर्म करें। उसमें अदरक, लहसुन, हरी मिर्चके टुकड़े डाले। 2 कप पानी में 2 चम्मच सोया सॉस, 1 चम्मच ग्रीन चिली सॉस और नमक डालें। जब ग्रेवी गाढ़ी होने लगे तब मन्चूरीयन बाल्स डाले और 1 मिनिट बाद गैस बंद करे। आप स्वादानुसार ग्रेवी पतली या गाड़ी कर सकती है। steamed rice के साथ serve करें।

नोट- मन्चूरीयन बाल्स में चाहें तो आप पत्ता गोभी, गाजर, मूली आदि grate कर के डाल सकते है।

-श्रीमती सोनिया विवेक मण्डलोई, अहमदाबाद
मो. 09712138061

फलाहारी व्यंजन-लौकी की खिचड़ी

आवश्यक सामग्री- लौकी (नर्म व बीज रहित) 1/2किग्रा, घी-2 बड़े चम्मच, जीरा 1/2 चम्मच, लाल मिर्च पावडर 1 चम्मच धनिया पावडर 1 चम्मच, हरी मिर्च 2 व हरा धनिया बारीक कटे हुए। मुंगफली दाना कुटा हुआ 250 ग्राम, नींबू-1 अनार के दाने व खोपरा कीसा हुआ सजाने के लिए।

विधि- लौकी को धोकर कद्दूकस कर ले। घी गर्म करके उसमें जीरा, धनिया पावडर, लालमिर्च पावडर तथा कद्दूकस की हुई लौकी डाले। हिलाकर पकने के लिए ढंक दें। पांच मिनिट तक पकने दें। उसमें नमक स्वादानुसार, मूंगफली के दाने कुटे हुए, शक्कर, तथा नींबू का रस डाले तथा 2 मिनट पकने दें। प्लेट में गर्म-गर्म परोसे व ऊपर से धनिया, अनार दाने व खोपरे से सजाकर दही के साथ सर्व करें।

उपवास में लौकी की खिचड़ी आयरन व विटामीन से भरपूर पौष्टिक आहार है।

-अल्पना दवे
259-सी राजेन्द्र नगर, इन्दौर
फोन 2321470

अलौकिक सूप

1/2 किग्रा लौकी नरम ताजी, 2 टमाटर, इच्छानुसार अदरक का रस, इच्छानुसार नींबू का रस (शक्कर-एक चुटकी), इच्छानुसार कार्न प्लोर (एक छोटा चम्मच), नमक, कालीमिर्च

विधि- लौकी के छिलके सहित, साथ ही टमाटर के बड़े-बड़े टुकड़े काटकर उबाले। मिक्सी में पीसकर मोटी-चलनी से छान ले। इस रस में कार्न प्लोर मिलाकर उबालें। नमक, कालीमिर्च अदरक, नींबू का रस मिला लें। सूप परोसने के लिये तैयार है- हींग जीरा का थोड़े से मक्खन में छौंक अपनी पसन्द और इच्छानुसार कर सकते हैं। तुलसी/पुदीना/हरी धनिया की बारीक कटी ताजी पत्तियां तथा इच्छानुसार मक्खन या पनीर से भी स्वाद बढ़ा सकते है।

-सौ. सीमा मण्डलोई, इन्दौर

स्टफ लौकी

1/2 किग्रा अच्छी नरम (ज्यादा कोटी की नहीं) लौकी, लौकी के अन्दर करने का मसालाः-

1/2 कटोरी टुकड़ी काजू, 1 चम्मच खसखस, 1/2 कटोरी मावा या आजकल मावा काम में नही लेना हो तो मिल्क पावडर या पनीर, 10दाने किशमिश, 1 चम्मच खोपरा बूरा, हरा धनिया अच्छी तादाद में, नमक स्वाद अनुसार आधी चम्मच जीरा हरी मीर्च बारीक कटी हुई अदरक कीसा हुआ, 1 चम्मच नींबू का रस या थोड़ा अमचूर पकाने के लिये तेल

विधि- लौकी को धोने के बाद छिलकर अन्दर से सब गूदा निकाल लीजिए। करीब 6 इंच की लौकी को दोनों तरफ से होल करके Scoop कर लीजिए। अब थोड़े पानी में एक की नहीं आधी सीटी बचे ऐसे अन्दर से Pressure कर लीजिये। फिर ठंडी होने तक आधा घंटे छलनी में रख दीजिये। आधे घंटे में पानी नीथर जावेगा। अब सब मसाला लेकर एक साथ एक छोटी थाली में मिला लीजिये। काजू टुकड़ी को और टुकड़ी कर लेना चाहिये। अब 1 चम्मच तेल में सब मसालों को थोड़ा सा सेक लीजिए। धनिये (कोथमीर) को छोड़कर लौकी का गूदा की इसमें सोकना है।

लौकी के दोनों तरफ से Hols में से सब मसाला Stuff करके Pressure cooker में तेल रखकर लौकी को रख दीजिये ढक्कन लगा कर 5 मिनिट तक होने दीजिये सीटी नहीं लगानी है। 5 मिनिट बाद खोलकर उसी kooker में लौकी को खुर में की मदद से उलटा-पलटा करके थोड़ा Brourn होने दीजिये। अब अच्छी धार वाली छुरी से गोल-गोल Ring की Shape में काट कर Serve करीये। स्वादिष्ट Stuff लौकी फलाहार में भी काम आ सकती है। Decoration आप अपनी इच्छानुसार कर सकती है।

-श्रीमती प्रियबाला मेहता
12, बी.एफ. स्कीम नं. 74-4 विजय नगर इन्दौर-10 (म.प्र.)

लौकी के टापू

सामग्री- लौकी, आटा, बेसन, चावल का आटा, नमक, हरीमिर्च, अदरक, हरा धनिया, लहसुन, जीरा, हल्दी।

विधि- लोकी को छीलकर कीसले और किसी हुई लोकी का पानी नितार ले। फिर आटे में नमक बेसन, चावल का आटा, जीरा, अदरक, लहसुन, हरा धनिया ये सब मिलाकर गुंथ ले। फिर पुरी जैसा बेलकर हलका सा घी लगाकर सेक ले और निंबू के अचार के साथ परोसे।

-अर्पणा मेहता

लौकी की बोट

सामग्री- लोकी 1 मध्यम आकार की, प्याज 1, गाजर 50ग्राम, फ्रेंचबीन 50ग्राम, मटर 150ग्राम, मिर्च स्वाद के अनुसार, हरा धनिया 50ग्राम, हरी मिर्च 2कटी हुई, हल्दी 1 चम्मच, सुखा धनिया पावडर 1 चम्मच, घी या तेल।

विधि- सर्वप्रथम लौकी का छीलका उतारकर उसे लम्बाई में आधा काट लें, फिर दोनों के बीच का गुदा निकालकर उन्हें घी में तल लें। जब लौकी के टूकड़े गल जाए तो निकालकर अलग रखें। ध्यान रहे लौकी के टुकड़े-टुकड़े ना हो जाए। एक कड़ाही में दो चम्मच घी गर्म करें व प्याज बारीक काटकर घी में गुलाबी तल ले उसमें हरी मिर्च बारीक काटकर डाले व सब मसाले डालकर भूनें मसाला भूनने पर एक टमाटर को बारीक काट कर डाले पांच मिनिट बाद गाजर व फ्रेंचबीन काटकर डालें साथ में लोकी का निकला हुआ गुदा व मटर के दाने डालें और गलने तक पकाएं इस सब्जी के मिश्रण को सावधानी से लौकी के खोखले भाग में भर दें। उपर हरा धनियां बारीक काटकर बुरक दें। एक टमाटर को गोल काटकर उपर से सजा दें।

बोट के आकार की लौकी तैयार हो गई यह स्वास्थ्य के लिए विशेषकर हृदय रोगी के लिये फायदेमंद है।

-प्रेषक श्रीमती कुसुम शर्मा
मेघा मेडिकल नयापुरा, राऊ
मो. 98260-12430, मो. 93030-50930

लौकी (आल) के मुठिये

सामग्री- लौकी 500ग्राम, मोटा बेसन-2 टेबल स्पून, गेहूं का आटा आवश्यकतानुसार, तेल-2 टेवल स्पून, नमक 1 चाय का चम्मच, लाल मिर्ची 1 चाय का चम्मच, हल्दी 1/2 चाय का चम्मच, जीरा 1/2 चाय का चम्मच, शक्कर 1 चाय का चम्मच, मीठा खाने का सोडा 1/2 चाय का चम्मच।

विधि- लौकी को कीसनी पर कद्दूकस कर लेवें।

कीसी हुई लौकी को उपरोक्त सभी मसाले डालकर तेल का मोयन डालकर एकजूट मिलाये।

मोटा बेसन डालकर, जितना लौकी के उक्त मिक्स में गेहूं का आटा आवश्यक हो मिलाकर इसे गूंथ लेवें।

इस प्रकार गूंथे हुए आटे के चार बड़े गोले बनाए।

चारों गोलों को इडली-पात्र के चारों खानों में रखें, इडली पात्र के निचले पात्र में पानी भर कर उपर से ढक देवें।

पूरे इडली पात्र को माइक्रोवेव-ओव्हन में 7 मिनिट तक रखें, साथ ही 20 मिनिट का स्टेडिंग टाईम भी देवें।

आगर चाहे तो गैस पर भी इडली मेकर में इन्हें पकाया जा सकता है।

इस प्रकार पके हुए गोले इडली मेकर से निकाल लेवें।

इन पके हुए गोले के छोटे-छोटे मुठिये के रूप में काट लेवें।

इन तैय्यार मुठिये को चाहे तो डिप फ्राय (तलकरके) अथवा थोड़े से तेल में धीमी आंच में कुरकुरे होने तक लगातार हिलाते रहें।

आपके मुठिये तैयार है, गरम-गरम भी है, टमाटर सॉस या हरी मिर्ची धनिये नींबू की चटनी या इमली की चटनी के साथ परोस कर करारे मुठिये का आनन्द उठाए। स्वादिष्ट हुए है ना!

-श्रीमती जया नागर
54, प्रकाश नगर, इन्दौर-1
फोन 2402502

लौकी (आल) की कचोरी

(20-22 कचोरी के लिए)

सामग्री- 250, ग्राम लौकी, 100 ग्राम पोहें, आवश्यकतानुसार तेल, आधा चाय का चम्मच जीरा, एक चुटकी हींग, एक नींबू (आधा चाय चम्मच, नींबू का रस), 2 चाय चम्मच शक्कर, 2 चाय चम्मच अदरक हरीमिर्चीका पेस्ट (सीलबट्टे पर पिसा हुआ), 2 टेबल चम्मच बारीक कटी कोथमीर (धनिया) 250 ग्राम मैदा, नमक आवश्यकतानुसार, लाल चटनी, लाल मिर्ची

विधि- लौकी को किसनी से कीस लेवें।

लौकी का कीस पानी में उबाल कर पका लेवें।

उबालने बाद लौकी के कीस से पानी पूरी तरह निचोड़ लें।

लौकी के पानी रहित गूदे में 100 ग्राम पोहे मिलावे

एक बर्तन में 2 टेबल चम्मच तेल लेकर हींग व जीरे का बघार कर उसमें शक्कर, खटाई, नमक, अदरक-मिर्ची का पेस्ट मिर्ची, हरा कटा धनिया डालकर कुछ पकने बाद, लौकी पोहे का मिश्रण इसमें डालकर उसको बघारे मसाले के साथ एकजाई करें।

इस प्रकार तैय्यार मिश्रण को गोलियां बना लेवें गोलियों में स्वाद के हेतु द्राक्षा, काजू की कली। अनार दाने भी रखे जा सकते है।

मैदे के आटे में आवश्यकतानुसार नमक व तेल का मोयन देकर उसे गूंथ लें।

गूंथे मैदे की पूरिया बेल कर तेय्यार लौकी पोहे के मिश्रण की गोलियां भरकर कचौरी बनाएं

कचौरियों को कढ़ाई में तलकर तैय्यार कर लेवें।

गरम-गरम कचोरियों को लाल चटनी/धनिये की चटनी के साथ परोस कर उसका आनन्द लिया जावे।

-श्रीमती विभूति आ.जोशी
528, उषानगर एक्सटेंशन, इन्दौर-9 (म.प्र.)
फोन 2485153

लौकी की चाट

सामग्री- छोटी नरम लौकी, नमक, काला नमक, काली मिर्च, हरी मिर्च कलोंजी, पिसा जीरा, एवं हरा धनिया।

टॉमेटो सॉस, इमली की चटनी, हरी चटनी एवं भुजिया सेव

विधि- छोटी नरम लौकी को बड़े छेद वाली किसनी पर किस लें एवं थोड़ा सा तेल कढ़ाई में डाल कर हरी मिर्च एवं कलोंजी का बघार लगावें एवं ढक कर केवल 5 मिनिट पकाये। अब इसमें नमक, काला नमक, पिसा जीरा आदि डालकर एक मिनिट और पकाये।

अब प्लेट में डालकर उस पर हरी चटनी, मिठी लाल चटनी, टॉमेटो सॉस एवं भुजिया सेव डालकर गर्म-गर्म सर्व करें याद रहे भुजिया सेव खाने के समय ही डाले वर्ना वह गल जावेगी।

-श्रीमती मोना नागर
फोन 2403951

लौकी की टिकिया

सामग्री- लौकी (कच्ची) 250 ग्राम, बेसन 50 ग्राम, सूजी 50 ग्राम, पोहे का चूरा 50 ग्राम, नमक, मिर्च, गरम मसाला, हल्दी, हरी मिर्च एवं अदरक का पेन्ट सभी स्वादानुसार। गाढ़ा दही एवं इमली की चटनी।

विधि- लौकी को बारीक काट करके उसमें सभी सामग्री, बेसन, सूजी, पोहे का चूरा एवं सभी मसाले मिला कर छोटी-छेटी टिकिया बनाकर गर्म तवे पर तेल डालकर गिले हाथ से थपथपाइये एवं ढककर दो से तीन मिनिट के लिये सेकिये। उसके बाद कुरकुरी करने हेतु खोल कर मध्यम आंच पर सेकिये। लीजिये तैयार है गर्मा-गर्म कुरकुरी टिकिया अब इसे बीच में से चाकू से दो पीस करके दही एवं चटनी के साथ सर्व करें।

-श्रीमती कल्पना नागर
1, मंगलमूर्ती धाम, नेमावर रोड, इन्दौर

प्रकाश

टूटे हुए दर्पण के टुकड़ों पर।
सूरज की पावन किरण से।
चमचमाते हुए लोगों।
सूरज किसी की राह नहीं देखता।
उसकी राह कोई नहीं रोकता।
वह तो शाम होते ही अपने घर जायेगा,
और धरती पर अंधियारा छायेगा।
तब तुम्हारे कांच के टुकड़े किस काम के।
ये प्रकाश नहीं फैला सकते।
दीपक की तरह नहीं जल सकते।
इसीलिए माटी के दीये लो।
उन्हें अक्षय स्नेह से भर दो।
बाती के मस्तक पर ज्वाला से तिलक कर दो।
दीया, स्नेह, ज्वाला का सम्यक संयोग ही प्रकाश है।

संकलित, श्रीमती शारदा मण्डलोई

अब दुनियाभर में उपलब्ध मासिक 'जय हाटकेश वाणी'

कृपया विदेश में बसे अपने परिजनों से निवेदन करें कि जय हाटकेश वाणी के माध्यम से वे इंटरनेट से न केवल अपने समाज से जुड़े रहें बल्कि गतिविधियों के सहभागी बनें तथा स्वदेश में अपने परिजनों को अपनी उपलब्धियों से अवगत कराते रहें। वैवाहिक सम्बंधों के लिए भी कृपया लॉग ऑन करें।

www.jaihatkeshvani.com

विवाह की 25वीं वर्षगांठ का रंगारंग आयोजन सम्पन्न

उज्जैन। मिलनसार व सहयोग की भावना से भरपूर व्यक्तित्व वरिष्ठ समाजसेवी व श्री हाटकेश्वर देवालय ट्रस्ट बम्बाखाना उज्जैन के सचिव श्री मनुभाई मेहता के सुपुत्र श्री विनोद मेहता पुत्रवधू श्रीमती आशा मेहता व मप्र नागर ब्राह्मण युवक परिषद शाखा उज्जैन के कोषाध्यक्ष, लायन्स क्लब महाकाल के अध्यक्ष श्री दिलीप मेहता-श्रीमती सुनिता मेहता ने अपने दाम्पत्य जीवन के 25 वर्ष दिनांक 19.11.09 को पूर्ण कर लिए आप दोनों का विवाह दिनांक 19.11.84 को श्री यशवन्तलाल नागर, नाथद्वारा की सुपुत्री से हुआ था। दिनांक 19.11.09 को महाकाल परिसर उज्जैन में एक भव्य पारिवारिक कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर 'मंगलाष्टक से श्री विनोद-आशा मेहता श्री दिलीप-सुनीता मेहता के भावी सुदीर्घ, स्वस्थ एवं मंगलमय दाम्पत्य जीवन की शुभकामना भी की गई। श्री मनुभाई-इन्दिरा मेहता, श्री यशवन्तलाल-माया नागर, श्रीमती सुशीला मेहता ने आशीर्वचनों की वर्षा से इस आयोजन को गरिमामय आनन्दपूर्ण वातावरण में परिणित किया। इस अवसर के साक्षी बने श्री किरीट नागर बड़ौदा श्री लव मेहता, श्री कुश मेहता, डॉ. वमशंकर जोशी, श्रीमती विजयालक्ष्मी नागर लायन्स क्लब के सभी सदस्य श्री योगेन्द्र त्रिवेदी, श्री हेमन्तत्रिवेदी, श्री रमेश मेहता 'प्रतीक' श्री दीपक शर्मा इन्दौर, श्री मनीष मेहता, श्री अजय मेहता, डॉ. जी.के. नागर, डॉ. नरेन्द्र नागर, डॉ. रमाकान्त नागर, डॉ. चन्द्रकांत नागर, डॉ. मनोज शर्मा, श्री राकेश नागर, श्री कृष्णकान्त शुक्ल, पं. कैलाश शुक्ल, डॉ. अशोक नागर, श्री नरेन्द्र नागर, श्री विजय पुराणिक, श्री नवीन त्रिवेदी, श्री महेश नागर, श्री हेमन्त व्यास आदि मित्रगण एवं समाजजन मौजूद थे।

मनीष मेहता, उज्जैन

२०१३ में महान संत नरसी मेहता की

६००वीं जयंती धूमधाम से मनायी जाना चाहिए

संत नरसी मेहता को भारत वर्ष में कौन नहीं जानता है? वह केवल गुजरात प्रदेश के ही महान संत नहीं थे बल्कि पूरे भारतवर्ष के पूज्य संत थे। जो स्थान राजस्थान में भक्ति के क्षेत्र में मीरा बाई का है। वही स्थान गुजरात में संत नरसी का है। वह न केवल भक्ति के क्षेत्र में ऊंचा स्थान रखते हैं बल्कि अध्यात्म के क्षेत्र में उनकी अच्छी जानकारी थी। इनके भक्ति पदों में भक्ति के साथ-साथ तत्व ज्ञान का अच्छा समन्वय है। इसलिये उनके पद हृदय तथा बुद्धि दोनों को स्पर्श करते हैं।

भक्त नरसी का जन्म, सौराष्ट्र क्षेत्र के भाव नगर शहर के पास तलाजा गांव में हुआ था। इनके पिता श्री कृष्णदास मेहता एक उच्च कुल के बड़नगरा नागर ब्राह्मण थे। इनका जन्मवर्ष तथा जन्मतिथि विवादग्रस्त है। परन्तु अधिकतम विद्वान इनकी जन्मतिथि हिन्दू केलेन्डर के हिसाब से मास-मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष सप्तमी वि.स.1470 मानते है। यह तिथि अधिकतर प्रचलित है। अब इनकी 600वीं जन्मदिन वि.स. 2070, जो 4 वर्ष बाद मनाया जायेगा। इनके माता-पिता, इनके अल्पआयु में स्वर्गवासी हो गये थे। इनका पालन-पोषण इनकी दादी ने किया। भक्त नरसी जन्म से लगभग 8 वर्ष तक बोल नहीं पाये थे। इनकी वाणी एक महात्मा के आशीर्वाद से खुली थी। इसलिए बाल्यकाल में इनकी शिक्षा ठीक प्रकार से नहीं हो सकी थी प्रारम्भ से ही इनका ध्यान, कथा, कीर्तन तथा महात्माओं के सत्संग में रहने लगा। सत्संग से ही उन्हें तत्व ज्ञान की शिक्षा प्राप्त हुई। वह प्रारम्भ से भक्ति पद लिखने तथा गाने लगे थे. इनके स्वभाव को देखकर इनके घर वालों को इनके विवाह की चिन्ता सताने लगी। इसलिये इनका विवाह छोटी आयु में एक सुशील कन्या माणिक बाई से कर दिया। तीन वर्ष के कालान्तर में एक पुत्र तथा एक पुत्री का जन्म हुआ।

नरसी घर के काम के अलावा, सब समय पूजा पाठ तथा संत्सग में बिताते थे। घर में कोई अन्य आय का साधन नहीं था। इनकी आर्थिक अवस्था दिन पर दिन गिरने लगी। इनकी यह हालात देखकर उनके बड़े भाई वंशीधर उनके परिवार को जूनागढ़ ले गये। बड़े भाई के यहां भी उनके स्वभाव में कोई विशेष अन्तर नहीं आया। दिन का पूरा समय पूजा-पाठ में बिताने लगे। यह सब देखकर वंशीधर की पत्नी तथा अन्य समाज के लोग नरसी को तथा उनकी पत्नी को ताने कसने लगे। इस सबसे नरसी तथा उनकी पत्नी बहुत दुखी रहने लगी थी। मीराबाई की तरह नरसी को कृष्णभक्ति में अनेक कष्ट सहने पड़े। नरसी एक स्थान पर लिखते है-

'ऐ वारे, अमो ऐवारे, तमो कहो छो तेवा रे'
भक्ति करता तमे भ्रष्ट कहशो, तो किम करु दमोदर सेवा रे'

संत नरसी ने मीरा की तरह, कृष्ण भक्ति समर्पण भाव से की। उनका कहना था भगवान आपने यह सन्तान दी है। तो विवाह आदि की चिन्ता भी आपको ही करनी है। मैंने तो संतान मांगी नहीं थी। कहते है। भगवान ने उनके समर्पण भाव को स्वीकार किया। उनको भगवान की भक्ति पर अटूट विश्वास था। भगवान ने भी पग पगपर स्वयं आकर उनकी सहायता की समाज तथा घर के लोग उनकी सच्ची भक्ति को नहीं समझ पाये। वे उनका स्थान-स्थान पर मजाक उड़ाते थे। उनके जीवन की अनेकों घटनाये है जब स्वयं भगवान ने आकर उनकी सहायता की। उनके जीवन की एक प्रसिद्ध घटना है। उनकी पुत्री का विवाह एक सम्पन्न घराने में हुआ था। जब उनकी पुत्री की पहली संतान होने वाली थी पुत्री के सुसराल वालों ने बहु के 'आठमास' (अद्येणी) गोद भराई का उत्सव मनाने का निश्चित किया। पहले नरसी की दरिद्रता जानकर उनको न बुलाने का निश्चय किया था। पुत्री के बहुत आग्रह पर उत्सव के अन्त समय पर निमंत्रण भेजा गया। नरसी अपने साथी साधु सन्तों को लेकर बेटी के ससुराल पहुंचे। उन्हें दूर अलग एक निम्न कोटि के निवास स्थान पर ठहराया गया। पुत्री उनका अपमान देखकर बहुत दुखी हुई। पर क्या करती? भगवान स्वयं नरसी की सहायता के लिये ठीक समय पर पहुंचे। और कहां मैं नरसी का एक मित्र हूं। आपके सबके लिये 'भात' स्वरूप, वस्त्र तथा आभूषण लाया हूं। यह जानकर सब ससुराल वालों को बहुत आश्चर्य हुआ। वस्त्र तथा आभूषणों को देखकर, नरसी का अपमान करने पर सब ससुराल वाले बहुत शर्मिन्दा हुए तथा नरसी से बार-बार क्षमा मांगी। यह घटना नरसी के 'भात' के नाम से भारत वर्ष में प्रसिद्ध है। इसके अलावा भगवान ने अनेक स्थानों पर स्वयं आकर नरसी की सहायता की। द्वारका के सेठ सामलिया शाह द्वारा हुन्डी स्वीकार की घटना, पिता के वार्षिक श्राद्ध की घटना, आदि अनेक स्थानों पर आकर स्वयं भगवान ने उनकी सहायता की। नरसी को यह सब मालुम पड़ा तो नरसी बोले आपको मेरे लिये भगवान बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। इस सन्त नरसी ने हमारे 'नागर समाज' का पूरे देश में बहुत गौरव बढ़ाया। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी इनके परम भक्त थे। महात्मा गांधी ने इनका एक प्रेरणादायी भजन वैष्णव जन तो तैने कहियेजो पीर पराई जाणे रे... को अपनी अध्यात्मिक उन्नति के लिये मूल मंत्र बनाया। इस भजन को प्रतिदिन प्रार्थना सभा में उन्होंने शामिल किया। इनका वैकुण्ठ वास 1544 वि.स. श्रावणी वदी अष्ठमी को हुआ था। इनके जीवन काल में अपने नागर समाज ने वह सम्मान नहीं दिया जिसके वह हकदार थे। इसे हम तत्कालिन रुढ़ीवादी समाज की गलती मानते है। अब हमें प्रतिवर्ष जयन्ती वाले दिन सामूहिक रूप से एकत्र होकर नरसी को श्रद्धाजंलि अर्पित करनी चाहिये। अब हम इस संत को श्रद्धान्जलि देकर हम अपने समाज का ही गौरव बढ़ायेंगे। सन् 2013 में इनकी 600वीं जयन्ति बड़ी धूम-धाम से मनाई जानी चाहिये, इस अवसर पर हमें सरकार से उनके 600वीं जन्मस्मृति पर डाक टिकट निकलवाने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सब कार्य हम सबके प्रयत्न से ही संभव होगा। अन्त में मुझे यह कहना है इस महान सन्त को श्रद्धांजली देकर, हम अपने नागर समाज का गौरव बढ़ायेंगे।

-विनोदकान्त नागर
रोहिणी, दिल्ली

एक परिचयः म.प्र. नागर युवक परिषद के अध्यक्ष का

भवनों में ईंटे जोड़ते–जोड़ते, नागर युवकों को जोड़ने में जुटे मधुरकंठी गायक श्री हेमन्त व्यास

नागर ब्राह्मण समाज में जब भी भवन निर्माण सम्बंधि चर्चा होती है तो एक ही नाम जुबां पर आता है, और वह है श्री हेमन्त व्यास का। जिन्होंने भवन निर्माण के व्यवसाय के साथ ही सेवा के क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान बनाई है।

श्री हेमन्त व्यास का जन्म दिनांक 23 फरवरी 1975 को पिपलरावां निवासी डॉ. चन्द्रकांतजी व्यास- श्रीमती सुशीलादेवी व्यास के यहां हुआ। इनके दादाजी श्री गौरीशंकरजी व्यास पटवारी थे। इनका परिवार कोठावाला के नाम से प्रसिद्ध है। चि. हेमन्त व्यास अपने विद्यार्थी जीवन में मेघावी छात्र रहे हैं। शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोनकच्छ में छात्रसंघ के अध्यक्ष मनोनीत होकर विद्यालय छात्र कल्याण के लिये समाज सेवा की भूमिका का भलीभांति निर्वाह किया। हायर सेकण्डरी परीक्षा सोनकच्छ तहसील में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर आपको तत्कालीन विधायक श्री कैलाश दायमा द्वारा पुरस्कृत किया गया। इसके पश्चात् बी.कॉम. अंग्रेजी साहित्य एवं एल.एल.बी. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। इनका विवाह तराना निवासी श्री रामेश्वरजी नागर की सुपुत्री सुश्री वर्षा से दिनांक 12 मई 1999 को हुआ।

यद्यपि भवन निर्माण के क्षेत्र में कोई पारिवारिक पृष्ठ भूमि नहीं मिली तथापि अपने माता-पिता की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से इन्होंने भवन निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा और अपनी रूचि, लगन, श्रम, दक्षता एवं कर्मनिष्ठा के बल पर प्रभु हाटकेश की कृपा से निरंतर सफलता प्राप्त करते रहे एवं विगत 12 वर्षों से दीर्घ अनुभव से उज्जैन नगर के प्रमुख बिल्डर के रूप में विख्यात हुए। उज्जैन नगर के विभिन्न क्षेत्र में इन्होंने भवन निर्माण करवाये है। भवन निर्माण कर विक्रय करना एक व्यवसाय अवश्य है किन्तु इनमें मात्र व्यवसायिकता की भावना नहीं है। नागर परिवारों को निर्धारित मूल्य से कम मूल्य पर भवन विक्रय किये गये हैं। भवन निर्माण के व्यवसाय में इनके दोनों अनुज श्री संजय व्यास एवं शैलेन्द्र व्यास सम्बद्ध है जो सम्पूर्ण कार्य में पूर्ण सहयोग-सहभागिता के साथ अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

इनके प्रतिष्ठान 'व्यास बिल्डर्स एण्ड डेवलपर्स' ने अच्छी खासी ख्याति अर्जित की है। निर्माण की दिशा में आगे बढ़ते हुए निकट भविष्य में एवं स्वतंत्र कालोनाईजर के रूप में ये प्रतिष्ठित होंगे, ऐसा विश्वास है। हाटकेश्वरधाम के नाम से एक कालोनी बनाने जिसमें नागर ब्राह्मण परिवार को विशेष रियायत के साथ भवन आवंटित करने की योजना विचाराधीन है जो भगवान हाटकेश्वर की कृपा से शीघ्र मूर्त रूप लेगी। यह इनकी व्यावसायिक उदारता एवं समाज सेवा की भावना की मिसाल होगी। वस्तुतः श्री हेमन्त व्यास भवन निर्माण क्षेत्र के एक ऐसे धूमकेतु है जो सर्वत्र आलौकित करते रहेंगे। अपने व्यवसाय के साथ ही समाज सेवा के क्षेत्र में भी इनकी महती भूमिका रही है, जिसकी प्रेरणा इनके पिता श्री डॉ. चन्द्रकांत व्यासजी से मिली है। डॉ. चन्द्रकांत व्यासजी चिकित्सक के रूप में सेवा भावना से कई वर्षों तक कार्य करते रहे एवं निर्धन परिवारों का निःशुल्क उपचार भी किया। साथ ही नागर समाज के सभी आयोजनों में डॉ. चन्द्रकांत व्यास सक्रिय रहते है।

समाज सेवा में सक्रियता, मिलनसारिता, क्षमता एवं कर्मठता के फलस्वरूप मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण परिषद के प्रांतीय अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रजी व्यास ने श्री हेमन्त व्यास को मध्यप्रदेश नागर ब्राह्मण युवक परिषद का प्रांतीय अध्यक्ष मनोनीत किया है एवं इन्होंने पदाधिकारियों एवं सदस्यों सहित 71 युवकों की विशद् कार्यकारिणी गठित की है जिसमें मध्यप्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व मिला है जो सामाजिक एकता, संगठन एवं रचनात्मक कार्यों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य है। इसके साथ ही 8 अक्टूबर 2009 को उज्जैन में मध्यप्रदेश नागर युवक परिषद का प्रांतीय सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रांतीय अध्यक्ष मनोनीत होने से पूर्व श्री हेमन्त व्यास युवक परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष थे एवं अनेक वर्षों से समाज के विभिन्न आयोजन, परिचय सम्मेलन, सामूहिक विवाह, नवरात्रि महोत्सव, हाटकेश्वर जयंति, नृसिंह मेहता जयंती आदि में पूरे व्यास परिवार का सक्रिय योगदान करता है। इसके साथ ही आप लायन्स क्लब महाकाल के सदस्य होकर सामाजिक कार्य में सहयोग दे रहे हैं।

अपने व्यवसाय एवं समाज सेवा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करने के साथ ही श्री हेमन्त व्यास ने गायन के क्षेत्र में भी अपना परचम लहराया है। मधुर कंठी गायक के रूप में कई सार्वजनिक कार्यक्रमों में इन्होंने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को भाव विभोर एवं मंत्रमुग्ध किया है। व्यावसायिक उत्थान, सामाजिक चेतना के अग्रणी एवं संगीत में स्वर लहरी गुंजाने वाले श्री हेमन्त व्यास का अनवरत आगे बढ़ने का उद्देश्य हिन्दी के मूर्धन्य कवि श्री जयशंकरप्रसाद की इन पंक्तियों में सार्थक होता है।

'इस पथ का उद्देश्य नहीं है, श्रांत भवन में टिक रहना,

किन्तु पहुंचना उस सीमा पर, जिसके आगे राह नहीं।'

इस सरल, सरस, सक्रिय एवं सक्षम धूमकेतु का प्रकाश सर्वत्र व्याप्त हो इसी आशा के साथ इनके यशस्वी, सुखी जीवन एवं उज्जवल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

-रमेश मेहता प्रतीक
530, सेठी नगर, उज्जैन

धारावाहिक भाग-3 दाम्पत्य जीवन के स्वर्ण सूत्र...

एक-दूसरे में घुल-मिल जाने का नाम ही जिन्दगी है

अभी तक आपने पढ़ा....

सब प्रकार की उन्नति के लिए दाम्पत्य जीवन आपको अवसर प्रदान करता है। गृहस्थाश्रम पति और पत्नी की साधना का आश्रम है। जहां जीवन में धर्म, अर्थ और काम की साधना की जाती है। दम्पत्ति में एक बहुत बड़े गुण का होना अत्यावश्यक है वह है एक दूसरे की तथा अन्य निकट सम्बंधियों, साथियों की प्रवृत्ति तथा इच्छाओं को परखने की शक्ति इसके लिए तो, कुछ समय के लिए उनके जीवन के साथ अपने निजी जीवन को बिल्कुल मिला देना होगा। अपने स्वभाव के साथ रिश्तेदारों की पसंद-नापसंद एकमेव करने के पश्चात ही सुख की प्राप्ति हो सकेगी तथा दाम्पत्य जीवन की सार्थकता भी सिद्ध होगी। आगे...

दार्शनिक श्री बर्ट्रेण्ड रसेल लिखते हैंः- 'यथा संभव परिवार के सदस्यों और मित्रों के सुसम्बंध को दृढ़तर बनाने का उपाय किया जाना चाहिये। अगर पति को पत्नी के दैनन्दिन कार्यों में अभिरूचि रखने और पिता को अपने बच्चों के साथ खेलने-खिलाने का समय न मिले, तो यह बहुत ही खेद जनक बात है। ये दोनों बात कभी-कभी ही होतीहै। मुझे उस समय बड़ी निराशा होती है जब मैं किसी ऐसे दम्पत्ति से मिलता हूं जो बीस या तीस वर्ष तक अपने शब्दों में सुखद दाम्पत्य-जीवन व्यतीत करने के बाद भी एक-दूसरे के आन्तरिक जीवन विचार और अन्य आदतों से बिल्कुल अपरिचित होते है। एक-दूसरे के मित्रों, माता-पिता, भाई-बहन आदि का उचित सम्मान और सत्कार करना चाहिए। उनकी आलोचना न करें। उनके विषय में वार्तालाप करते समय सावधान रहिये कि पारस्परिक बातों से किसी प्रकार का अपमान न टपके। सब से बढ़कर ध्यान रखने की बात यह है कि मिलने-जुलने वालों या अन्य व्यक्तियों के सामने एक-दूसरे की आलोचना या शिकायत कदापि न करें। 'आलोचना विश्वास की नींव को हिलाने वाली सिढ़ी है।' अपने में से किसी को दूसरों की निगाह से हीन प्रमाणित करने की भूल न कर बैठें।इस से आत्म गौरव को ठेंस लगेगी। जो कुछ भी कहना या सुनना हो एकान्त में ही समझना चाहिये। सब के सामने नहीं। पति या पत्नी जब एक-दूसरे की कमजोरियां, खराबियां, मूर्खताएं छांटने लगते हैं, तो फिर प्रेम-डोर टूट जाती है। प्रेम की उच्च भूमिका में आप को एक-दूसरे के दुर्गुणों, कमजोरियों को भी सहन करना है। यदि सदैव ही एक-दूसरे की त्रुटियों पर एकाग्र रहे, तो एकाग्रता के नियमों के अनुसार उन्हीं की अभिवृद्धि होगी। श्री लेमर्सिन लिखते हैंः- जो व्यक्ति नारी के प्रति असीम श्रद्धा नहीं रखता, वह वास्तव में पुरुष कहलाने का अधिकारी नहीं है। वह वास्तव में नारी कहलाने की अधिकारिणी नहीं है, जो अपने समुचित व्यवहार से पुरुष को अपना सम्मान करने के लिये प्रेरित व मजबूर न कर सके। स्त्री और पुरुष में (दम्पत्ति में) वैमनस्य नितान्त मूर्खता ही है।

-प्रस्तुति- डॉ. सूर्यकांत पौराणिक,
भौरांसा (देवास) फोन 07270-273321

सिर्फ नागर बंधुओं हेतु

जय हाटकेश — जय श्री कृष्ण

व्यापारी बनें मात्र 500/- रुपए से शुरु करें...

आप हमारे उत्पादन MRP. से आधे दाम पर प्राप्त करें और MRP. पर बिक्री करें।

हमारे उत्पादन- * जालिम-एक्स मलम * जालिम-एक्स [illegible] * जालिम-एक्स लोशन * पंचसुधा * वामा क्रीम * अंजू बाम * अंजू कफ सायरप * सुगम चूर्ण * पेन क्योर आइंटमेंट * मेकाडो बाम * पाचक चूर्ण * अर्शोमृत टेबलेट * पेन ऑफ ऑईल * हजम टेबलेट * नारी रसायन

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें- नवीन झा

Anju
अंजू फार्मास्यूटिकल्स

111/112, अलंकार चेम्बर्स, रतलाम कोठी, ए.बी. रोड, इन्दौर-452001-(म.प्र.) मोबाईल 094250-62415

अकेला चला था मैं....

98 वर्ष की उम्र में देश-विदेश का भ्रमण कर रहें हैं श्री कृष्ण प्रसाद मेहता

इलाहाबाद। पं. कालीप्रसादजी मेहता के सुपुत्र श्री कृष्णप्रसाद मेहता का जन्म 19 अगस्त 1912 में हुआ था तथा वर्तमान में वे 98 वर्ष के हैं इस उम्र में भी वे अकेले ही देश-विदेश में भ्रमण कर आते हैं विगत दिनों वे इन्दौर में अपने रिश्तेदार श्री प्रदीप शर्मा के लक्ष्य विहार स्थित निवास पर आए तो उनसे मुलाकात का अवसर प्राप्त हुआ। उनके जीवन से जो अध्यात्मिक प्रेरणा प्राप्त होती है वह ये है कि मृत्यु के बाद जब इंसान को अकेले ही यात्रा करनी होती है तो वह जीवन के सफर में अकेला क्यों नहीं चल सकता? श्रीकृष्ण प्रसाद मेहता को अपनी पत्नी श्रीमती कमला मेहता (ग्रेज्युएट) के स्वर्गवासी होने के पश्चात जीवन के सफर में बढ़ती उम्र के बावजूद सहारा मंजूर नहीं है। वे अपने पुत्र-पुत्री के पास साल में एक बार विदेश तो हो ही आते हैं देश के किसी भी कोने में जाते हैं तो अकेले। बकौल श्री मेहता कि पिताजी एजुकेशन डिपार्टमेन्ट में प्रिंसीपल थे तथा विभिन्न शहरों में उनके तबादले होते रांची, झांसी, इलाहबाद, फैजाबाद, लखनऊ तो उनके साथ-साथ ही रहना पड़ता। 1937 में इलाहाबाद युनिवर्सिटी से एम.एस.सी. करने के बाद उन्होंने आर्डिनेंस फेक्ट्री मैं नौकरी कर ली तथा इस दौरान जबलपुर, इलाहाबाद, चौकी पानागढ़ (पं. बंगाल) में नौकरी की खास बात यह रही कि इलाहाबाद से नौकरी के लिए ट्रेनिंग ली तथा वहीं पर जा कर सेवा निवृत्त हुए। सन् 1970 में अर्थात 40 वर्ष सेवा निवृत्ति के हो गए। नौकरी के साथ ही फोटोग्राफी का शोक रहा जिसमें 'कोडक फिल्म अवार्ड' भी प्राप्त किया। पैदल चलना, हॉकी में रूचि-जिसमें विश्वविद्यालय हॉकी टीम का प्रतिनिधित्व भी किया। भरा पूरा परिवार है- बड़ी पुत्री रुचि मेहता, द्वितीय पुत्र रवि मेहता (विदेश में है) तृतीय पुत्री डॉ. रति भट्ट (विदेश मेंहै) चतुर्थ पुत्र ऋषि मेहता सभी सुख पूर्वक है, तथा अपने पिताजी की आत्मनिर्भरता एवं जीवटता से सन्तुष्ट भी। उन्हें जब इच्छा होती है तो 98 वर्ष की अवस्था में भी अपने बच्चों से मिलने विदेश चले जाते हैं। चारों धाम की तीर्थ यात्राएं कर ली है। अपने सगे-सम्बंधियों से लगातार सम्पर्क बनाए रखते हैं खंडवा के प्रसिद्ध श्री ऋषि कुमार शर्माजी भी इनके समधि है उनसे मिलने ही खंडवा एवं इन्दौर आए थे। श्री कृष्णप्रसादजी मेहता से दो प्रेरणाएं ली जा सकती है। अपने रिश्तेदारों से सतत सम्पर्क बनाए रखना तथा अकेलापन ओढ़कर रखने के बजाय आत्मनिर्भर बनना। नई पीढ़ी को कहीं जाना हो तो वह पहले साथ ढूंढती है। 98 वर्षीय श्री मेहता उन्हें भी अकेले चलने की प्रेरणा देते हैं। अकेला चला था मैं.... न आया अकेला..... मेरे संग-संग आया मेरी यादों का मेला....

-पवन शर्मा

फन का फंडा

सवाल- यदि कंगारु का बच्चा खो जाए तो कंगारु क्या कहेगा?

जवाब- आइला! किसी ने मेरा पॉकेट मार लिया।

प्रो. नितिन व्यास
नवीन व्यास

।। जय हाटकेश्वराय नमः ।।

99814-16455,
91652-52497

व्यास रेडियोज

जय महालक्ष्मी लाईट डेकोरेशन एण्ड डी.जे. साउण्ड सर्विस

नोट- शादी, पार्टी, भागवत कथा भजन संध्या, महिला संगीत हेतु सम्पर्क करें।

142-एलआईजी विकास नगर, देवास फोन 07272-408008

हंसी के गोलगप्पे

❊ शरारत ❊

आरोपी- अगर बचपन में मां की बात सुन लेता तो आज यह हालत नहीं होती।
जज- क्या कहती थी तुम्हारी माँ?
आरोपी- जब सुनी ही नहीं तो बताऊं क्या?

❊ रिश्ते ❊

पति बीवी से- वो देखों कितने सारे सुअर उधर खड़े हैं और सब तुम्हें देख रहे हैं। लगता है तुम्हारे रिश्तेदार हैं।
बीवी- हां, मेरी शादी इसी परिवार में हुई है।

❊ पॉजिटिव ❊

लड़की वाले लड़के से- नॉनवेज खाते हो?
लड़का- हां।
लड़की वाले- शराब?
लड़का-जी पीता हूं।
लड़की वाले- और ड्रग्स?
लड़का- कभी-कभार
लड़की वाले- सब कुछ नेगेटिव है। क्या कुछ पॉजिटिव भी है?
लड़का- जी एचआईवी

❊ हद है ❊

एक कंजूस के पिता की मृत्यु हो गई। शोक संदेश छपवाने के लिए उसने अखबार के दफ्तर में फोन लगया और रेट पूछा।
विज्ञापन प्रमुख ने कहा-50रु. प्रति शब्द।
कंजूस ने कहा- अच्छा ठीक है लिखिए- पापा डेड।
विज्ञापन प्रमुख- सॉरी सर। कम से कम पांच शब्द होने चाहिए।
कंजूस- पापा डेड वीलचेयर फॉर सेल।

❊ जान ❊

दो आदमी कब्रिस्तान से गुजर रहे थे।
एक ने कहा- यार इन्हें देखों, ये कितने आराम से सो रहे है।
अचानक आवाज आई- क्यों न सोएं? ये जगह हमने जान देकर हासिल की है।

❊ ये पति ❊

एक बैंक लुटेरे ने बैंक लूटने के बाद एक क्लर्क के सिर पर पिस्तौल लगाई और पूछा- क्या तुमने हमें बैक लूटते देखा?
क्लर्क ने कहा- हाँ। लुटेरे ने उसे गोली मार दी। लुटेरे ने दूसरे क्लर्क के सिर पर भी पिस्तौल लगाकर पूछा- क्या तुमने मुझे बैंक लूटते देखा?
क्लर्क ने कहा- नहीं, लेकिन मेरी बीवी ने देखा है।

❊ मेल फीमेल ❊

पति को किचन में झाड़ू लेकर दौड़ते देख पत्नी ने पूछा- क्या कर रहे हो?
मधुमक्खियां मार रहा हूं।
कितनी मारीं?
तीन मेल तीन फीमेल फ्लाईज
तुम्हें कैसे पता चला?
तीन बीयर कैन पर बैठे थे और तीन फोन पर।

❊ बहाना ❊

बॉयफ्रेंड- लगता है कि हम दोनों जिंदगी भर साथ नहीं रह पाएंगे..
गर्लफ्रैंड- अरे क्यों? मेरे पापा से मिले थे क्या?
बॉयफ्रेंड- नहीं तुम्हारी बहन से।

❊ पेट्रोल पंप ❊

बंटू पेट्रोल पंप पर गया। वहां लिखा देखा- कृपया मोबाइल का इस्तेमाल न करें।
बंटू ने मोबाइल निकाला और सबको फोन किया- यार कॉल मत करना। मैं पेट्रोल पंप पर हूं।

❊ ए बी सी डी छोड़ो ❊

पप्पू- भैया कुछ विटामिन की गोलियां देना।
केमिस्ट- कौन सा विटामिन सर ! ए, बी, सी...
पप्पू- अरे यार! कोई भी दो, मेरा बेटा अभी ए बी सी डी नहीं जानता।

जिस तरफ मुड़ जाएंगे...रास्ता बन जाएगा

ना हमें जीत पर खुश होना चाहिए न हार पर दुःखी प्रत्येक हार सफलता की तरफ बढ़ता एक मजबूत कदम हैं। जरूरत है तो केवल एक कि अपना अगला कदम रोकें मत। क्या आप जानते है, मनुष्य और जानवर का मूलभूत अंतर क्या है? मैं आपको बताती हूं मनुष्य प्रत्येक हार से कुछ सीखता है जानवर नहीं। अतः खुद को मजबूत करो। जीत का सामना वही कर सकता हैं, जिसमें हार का सामना करने का मुद्दा हो। इतिहास उठा के देख ले जीता वहीं हैं, जो कभी कई बार हारा था, किंतु अपने को इतना मजबूत करो कि तुम्हारे लिए सफलता अपने रास्ते खुद खोल दें किसी ने कहा भी हैं-

'हम दरिया हैं, हमें अपना हुनर मालूम हैं,
जिस तरफ मुड़ जाएंगे रास्ता बन जाएगा।

-शीतल पौराणिक
70, एम.आई.जी. सांदीपनी नगर, उज्जैन

ऊंचा लक्ष्य रखें तथा उसे पाने के लिये पूरी ताकत लगा दें

उत्पन्न होना, प्रगति करना और आगे बढ़ना प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है और इस अधिकार का पूर्ण उपयोग उसका कर्तव्य होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्दजी का कहना है कि लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो, हर समय उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखों, उसी के सहारे जीवित रहो। जो अपने लक्ष्य के प्रति पागल हो गया, उसे ही प्रकाश के दर्शन होते हैं। अपने जीवन का लक्ष्य बनाइए और उसके बाद अपने सम्पूर्ण शारीरिक एवं मानसिक बल से उसमें लग जाइए। लक्ष्य के हाथ तदाकार होने पर आप उतने ही महान बन जायेंगे, जितना महान आपका लक्ष्य है। साध्य के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं लगन रखने वाला व्यक्ति साधन भी जुटा लेता है। इसी को लक्ष्य करके कहा जाता है। जो स्वयं अपनी सहायता करता है, उसकी सहायता करने को परमात्मा विवश हो जाता है। महानतम मानी गई प्रत्येक उपलब्धि किसी न किसी विचार या चिंतन के रूप में आरंभ हुई होगी। वस्तुतः विचारों से ही दुनिया चलती है। जब आप सोचते हैं कि आपकी जीत अवश्य है तो अवश्य ही जीतेंगे। अंततः यह आपकी इच्छा शक्ति की दृढ़ता और धैर्य पर निर्भर है। पूरे धैर्य और अध्यवसाय के साथ निरन्तर प्रयास करने से पर्वत भी हिल जाते हैं। सफलता सदैव कठिन परिश्रम के पश्चात ही मिलती है। सफलता केवल भाग्य या असाधारण प्रतिभा की परिणति नहीं है। यह समग्र रूप से उचित तैयारी, योग्य निष्पादन और इच्छाशक्ति पर भी निर्भर करती है। सूर्य पर संधान करो हो सकता है आपका तीर सूर्य तक न पहुंचे, परन्तु इतना विश्वास है कि तुम्हारे स्तर पर स्थित लक्ष्य की अपेक्षा वह कहीं अधिक ऊंचाई तक उड़कर पहुंच जाएगा। इस कथन को ध्यान में रखते हुए हर किसी को चाहिए कि वह अपना ऊंचा लक्ष्य रखे और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिकतम प्रयत्न करे, उसे उसी अनुपात में सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

-श्रीमती पुष्पा पौराणिक
भौरासा
फोन 07270-273321

चमन की खुशबू

दुनिया में कुछ ऐसा करें, कि लोग याद रखें। पढ़ना लिखना, पैसे कमाना, बच्चे पालना और मर जाना, यह प्रत्येक सामान्य मानव का कार्य हैं, इसके अतिरिक्त आपने क्या किया वह महत्वपूर्ण हैं। हर कोई दुनिया से लेता हैं, और उससे अधिक लेना चाहता हैं। किन्तु लोग उन्हें याद रखते हैं जो दुनिया को कुछ देते हैं। अर्थात् कुछ करने की चेष्टा करें अपने व्यक्तित्व को मजबूत बनाएं। अपने व्यक्तिव में खुशबू बढ़ाएं ताकि लोग आपको प्यार करें। जिंदगी में अपनी पृथक पहचान बनाने की चेष्टा करें। स्वयं को भीड़ का हिस्सा ना बनाये। किसी ने कहा हैं-

रहना है चमन में तो खुशबू की तरह रहिए,
वरना सूखे हुए पत्तों को हर लोग कुचलते हैं।

-मधू नागर 130, गणेशपुरी, खजराना इन्दौर मो. 9424059992

चन्द गड़बड़ियां भीड़ पर

1

भीड़-भवानी दोस्तों, भीड़ खुशी की खान।
भीड़-से लक्ष्मी मिले, नोट करो नादान।
नोट-करो नादान-भीड़ शक्ति देती है।
कवि, पुलिस, भाषणदाता की परीक्षा लेती है।।
कह गड़बड़, कविराय भीड़-जयी बन जाओ।
सिक्कों से तुल कर डीयर परम आनन्द पाओ।

2

सभा, रैली, जुलूस, जलसा प्रियवर श्रीमान।
भीड़ बिना सब सून है कीर्तन औं कल्याण।।
कीर्तन और कल्याण, ले-भीड़ से सत्कार।
भीड़ बढ़ाती जोश है, और लुटाती प्यार।।
कड़ गड़बड़, कविवर भीड़ जीवन का अलंकार है।
हाट-घाट, मेले और प्लेटफार्म से हमें प्यार है।

3

भीड़ में ही भाव है-भीड़ में है जोश।
यारो ग्रेट है वहीं, जो भीड़ रखे खामोश।।
भीड़ रखे खामोश, ऊंचा नाम करे जो।
लिए भीड़ के हरदम चक्का जाम करे जो।।
कह-गड़बड़ कविराय, भीड़ को सदा पटाओ।
भद्रों-भावुक सदा गीत भीड़ के-गाओ।।

-गड़बड़ नागर
78/2, वररुचि मार्ग, उज्जैन
फोन 2510992

पाठकों की प्रतिक्रिया

पं. मंडलोईजी के जीवनदर्शन से परिचित हुए

महोदया,

आप के द्वारा प्रेषित 'मासिक जय हाटकेश वाणी' का नवम्बर मास का अंक हमारे महाप्रबंधक श्री मौलेश बुच के माध्यम से प्राप्त हुआ। एतदर्थ धन्यवाद।

पत्रिका के माध्यम से नागर गौरव पूर्व मुख्यमंत्री पद्मभूषण पण्डित भगवंतरावजी मंडलोई के महत्व से हम लोग परिचित हुए। उनके नाम से लोग परिचित हैं, किन्तु वे कितने बड़े निर्माता थे-इसे सामान्य वर्ग नहीं जानता। हाटकेश वाणी के द्वारा हम उनके, निर्माता-पक्ष को जान पाए। यह हर्षदायी है।

श्री मंडलोईजी वास्तव में नागर थे, सभी अर्थों में-सुसंस्कृत, सभ्य, शालीन, भद्र और परम्परा विकास। आप को कोटि-कोटि शुभकामनाएं। सम्भव है, पितृ-ऋण से सकृण होने की दिशा में आप को देखकर और लोग भी उन्मुख हों।

-पवन कुमार
प्रबंधक (राजभाषा) राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आणंद (गुज.)

लोकप्रिय हो रही है प्राकृतिक चिकित्सा

श्रीमती संगीता नागर

जीवन के सुखों में पहला सुख निरोगी काया को माना गया है। आधुनिक युग में मनुष्य कई तरह की बीमारियों से ग्रस्त हो रहा है। एलोपैथी, होम्योपैथी व आयुर्वेद के साथ-साथ वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति प्राचीन काल से इलाज हेतु प्रयोग में लाई जा रही है। वर्तमान परिस्थितियों में वैकल्पिक चिकित्सा में प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति अधिक लोकप्रिय हो रही है। इसका प्रयोग प्राचीन काल में ऋषि-मुनि भी करते थे। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति द्वारा अस्वस्थ मनुष्यों का इलाज किया जाता है तथा स्वस्थ मनुष्य को स्वस्थ बनाए रखने में मदद मिलती है। इस पद्धति में पोषण, जल चिकित्सा, मिट्टी चिकित्सा, रंग चिकित्सा, चुंबक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, एरोमा चिकित्सा आदि आते है। इसके अतिरिक्त इसमें अष्टांग योग अर्थात यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा, समाधि आदि बातों पर भी ध्यान दिया जाता है।

शारीरिक रूप से स्वस्थ होना ही सेहतमंद होने की निशानी नहीं है बल्कि मानसिक व भावनात्मक रूप से भी व्यक्ति को स्वस्थ होना चाहिए। जब व्यक्ति की पोषण व निष्कासन क्रिया सही रूप से चलती है तभी वह विपरीत परिस्थितियों में भी सुखपूर्वक अपना जीवन जी सकता है। मनुष्य का शरीर पंच तत्वों से बना होता है। प्रकृति के इन पांच तत्वों मिट्टी पानी, आकाश, वायु और अग्नि द्वारा रोगों की चिकित्सा करना ही प्राकृतिक चिकित्सा कहलाती है। महात्मा गांधी भी प्राकृतिक चिकित्सा के प्रशंसक रहे हैं। पूना के उरली कांचन में उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सालय की स्थापना भी की। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति बहुत पुरानी तथा महत्वपूर्ण पद्धति है जिसकी सहायता से प्राणी प्रकृति के निर्दिष्ट नियमों पर निरंतर चलकर कभी अस्वस्थ नहीं हो सकता। यह पद्धति दीघार्यु, स्वस्थ तथा आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने की कला है। इस पद्धति का उद्‌गम वेदों से माना जाता है। ऋग्वेद, यजुर्वेद के साथ-साथ महाभारत जिसे पांचवा वेद माना जाता है, उसमें भी प्राकृतिक चिकित्सा का वर्णन मिलता है। यह प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलने पर जोर देती है।

यह पद्धति शरीर को स्वस्थ रखने में विश्वास करती है। तथा आधुनिक युग में मानव द्वारा विकसित नहीं होकर प्राचीन वैदिक ज्ञान पर आधारित है। इसमें संतुलित भोजन, योग व ध्यान को अपना कर शरीर को कई बीमारियों से दूर रखा जा सकता है। ऐसा भी माना जाता है कि आहार के समान कोई दवा नहीं। शरीर में रोग संचित होने से आंतों में भारीपन आता है तथा त्वचा का रंग भी बदल जाता है। अर्थात् अधिकांश रोगों की जड़ पेट में ही होती है। प्राकृतिक चिकित्सा में रोग मिटाने के जो भी प्रयास किए जाते है वे स्थाई होते हैं इस पद्धति में दवाई का उपयोग न करके पंचकर्म द्वारा रोग को दूर करने का प्रयास किया जाता है। पंच महाभूत ही जीवन के आधार हैं व इन्हीं के द्वारा रोग दूर किए जाते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के अपने कुछ सिद्धांत हैं। रोग का कारण कीटाणु नहीं बल्कि अनियमित खानपान ही रोग को उत्पन्न करते है। तीव्र रोग मनुष्य के शत्रु नहीं मित्र होते हैं क्योंकि इसके द्वारा ही शरीर से विजातीय द्रव्य बाहर निकलते हैं। जीर्ण रोगी इस पद्धति से देरी से ठीक होते हैं, क्योंकि उनके शरीर में विजातीय द्रव्यों के साथ-साथ अन्य पद्धतियों द्वारा जो दवाईयां दी जाती हैं, उनके भी द्रव्य शरीर में होते है।

प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से दबे रोग भी उभर सकते हैं जिन्हें उभाड़ कहते है। यह पद्धति शरीर के साथ-साथ मन व आत्मा की भी चिकित्सा करती है। चूंकि मन व आत्मा का घनिष्ठ संबंध होता है इसलिए रोगी शरीर, निर्बल आत्मा व कलुषित मन की चिकित्सा आवश्यक होती है। यह पद्धति रोग, शोक, दुख व विपत्ति को भी दूर करती है। इन सभी प्रक्रियाओं से शरीर की जीवनी शक्ति बढ़ती है और शरीर स्वस्थ होता है।

पंच महाभूतों के प्रयोग से हमारा जीवन सुखी, आनन्दमयी व चिंतामुक्त होता है। प्राचीनकाल में प्राकृतिक चिकित्सा व आयुर्वेद का साथ-साथ प्रयोग होता था। हमारे ऋषि मुनियों ने इसे धर्म के साथ जोड़ कर मनुष्य को प्राकृतिक नियमों पर चलना सीखाया। भारत में प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में सर्वश्री कुलरंजन मुखर्जी, महावीर प्रसाद, विठ्ठलदास मोदी, हीरालाल, डॉ. एम.सिंह, खुशीराम दिलकश, डॉ. कृष्णा जाजू, के.लक्ष्मण आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

भारत में प्राकृतिक चिकित्सा परिषद् की स्थापना सन् 1956 में की गई। सर्वप्रथम 1964 में कलकत्ता में प्राकृतिक चिकित्सा का चार वर्षीय पाठ्यक्रम प्रारंभ हुआ। केन्द्र सरकार ने भी योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान की स्थापना दिल्ली में की। पूना में भी संस्थान खोला गया। नई दिल्ली की महात्मा गांधी अकादमी ऑफ नेचरोपेथी देश के 70 केन्द्रों पर प्राकृतिक चिकित्सक तैयार करने का कार्य कर रही है। इन संस्थाओं में प्राकृतिक चिकित्सा से संबंधित काफी साहित्य उपलब्ध है। प्राकृतिक चिकित्सा और योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत मंचप्रदान करने के लिए वर्ष 2003 में नई दिल्ली में इन्टरनेशनल नैचरोपैथी आर्गेनाइजेशन की स्थापना की गई। संस्था का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक चिकित्सा और योग से जुड़ी संस्थाओं को संगठित कर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन, सेमिनार, वर्कशाप और शिविर आयोजित करना है। आई.एन.ओ. की 22 राज्य ईकाइयां तथा जिला ईकाइयां भी इस ओर सक्रिय है। हर साल 2 अक्टूबर को गांधी जयंती के अवसर पर प्राकृतिक चिकित्सा दिवस मनाया जाता है।

-श्रीमती संगीता नागर, इन्दौर

श्री रामचन्द्रजी के चतुर्दश वर्ष वनवास का तिथि पत्र

1. चैत्र शुक्ल नवमी श्री रामचन्द्रजी ने जन्म लिया था।

2. 15 वर्ष की अवस्था में विश्वामित्र के साथ वन को गए।

3. अगहन मास की शुक्ल पक्ष पंचमी को मीन लग्न में विवाह हुआ। जानकी जी 6 वर्ष की थी। बारह वर्ष तक अयोध्या में निवास किया।

4. वन प्रस्थान समय रघुनाथ सत्ताईस वर्ष के जानकीजी अठारह वर्ष की थी।

5. अयोध्या से चलने के बाद तीन बार जलपान किया।

6. चौथे दिन श्रृंगवेरपुर में पहुंचे। भारद्वाज मुनि के आश्रम में 1 दिन रहे। वाल्मिकी जी से मिलकर चित्रकुट में कुटी बनाकर रहने लगे।

7. चित्रकुट में 12 वर्ष रहकर पंचवटी में आये।

8. 13 वे वर्ष में सुर्पनखा की नाक काटी।

9. माघ शुक्ल अष्टमी को रावण मारीच के कपटवेश में सीताजी को लंका ले गया।

10. आषाढ़ मास में सुग्रीव जी से भेंट की।

11. मार्ग शीर्ष कृष्णपक्ष की एकादशी को महावीरजी लंका के लिये सागर को लांघकर चले।

12. तेरस के दिन हनुमानजी ने सीताजी को ढूंढा। चौदस को अशोक वन उजाड़कर अक्षयकुमार को मारा। फिर लंका दहन कर सीताजी के पास आये। उनसे चुडामणी लेकर चलें।

13. अगहन शुक्लपक्ष की छट को किष्कीन्धा में पहुंचकर सप्तमी शुक्रवार को प्रभुजी को जानकीजी के समाचार मिले।

14. अगहन सुदी अष्टमी के दिन प्रभुजी ने शुभ नक्षत्र में लंका को प्रस्थान किया।

15. सात दिन बाद पुर्णिमा को समुद्रतट पर पहुंचे। पोष शुक्ल तीज तक 3 दिन वहां व्यतीत किये। चौथ को विभीषण शरण में आये।

16. अष्टमी तक प्रभु ने सागर की और रोष किया।

17. नवमी के दिन सागर रामजी के शरण में आया। दशमी के दिन वानरों ने सागर पर दस योजना पुल बांधा। एकादशी को बीस, द्वादशी को तीस और तेरस को नील-नल ने चालीस योजना लम्बा पुल बांधा। इस प्रकार वारनों ने दस योजन पुल चौड़ा और सौ योजन लम्बा पुल बांधा।

18. चौदस से पौष शुक्ल द्वितीया तक सेना सागर के पार उतरी और आठ दिन में लंका को घेर लिया।

19. माघ कृष्ण प्रतिपदा के दिन अंगद रावण की सभा में गये और उसका गर्व दमन करके लौटे।

20. माघ कृष्ण द्वितीया से नौवमी तक दोनों सेनाओं में घोर युद्ध हुआ।

21. माघ शुक्ल की चौथ को रावण ने युद्ध किया। पंचमी से लेकर अष्टमी तक रावण ने कुंभकरण को जगाया और वह नौवमी से चौदस तक युद्ध करके श्री रामजी के हाथ मारा गया।

22. अमावस्या तक वानर सेना ने अनेक धैर्यवान राक्षस मार दिये।

23. फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को रावण लड़ने चला। और चैत्र कृष्ण अष्टमी तक उसके सब सेनापति मारे गये।

24. नवमी के दिन रावण ने लक्ष्मणजी को शक्ति मारी। उसी दिन हनुमानजी संजीवनी लाये और लक्ष्मणजी को जीवित किया।

25. दशमी के दिन भयंकर युद्ध हुआ।

26. द्वादशी से लेकर अठारह दिन रावण से बड़ा भारी युद्ध हुआ।

27. चैत्र शुक्ल, चौदस को रावण का वध हुआ।

28. वैशाख कृष्ण द्वितीया को प्रभु ने विभीषण को राज्य दिया।

29. चौदह माह और 10 दिन जानकीजी ने लंका में दुःख पाया।

30. चौथ को भगवान पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या को प्रस्थान किया।

31. पंचमी में प्रयाग में स्नान किया और षठ को भरतजी से मिले। सप्तमी को अयोध्या में आ गये।

32. वनवास से लौटने पर रामजी 41 वर्ष और जानकी जी 32 वर्ष की थी।

33. सप्तमी को ही रामजी सिंहासन पर विराजमान हुए और राजतिलक हुआ।

34. श्री रामजी ने 11 हजार वर्ष तक राज्य किया।

-प्रदीप शर्मा

68, लक्ष्यविहार, कनाड़िया रोड, इन्दौर

मो. 98260-58556

राष्ट्रीय बचत योजनाएं

आज की बचत

कल की मुस्कान

योजनाएं-

1. वरिष्ठ नागरिक बचत खाता 9 प्रतिशत ब्याज
2. मासिक आय योजना 8 प्रतिशत ब्याज 5 प्रतिशत बोनस
3. किसान विकास पत्र
4. 6 वर्षीय राष्ट्रीय पत्र 6 एन.एस.सी. आयकर में छूट
5. 1,2,3,5 वर्षीय सावधि खाता आकर्षक ब्याज तथा एजेन्ट द्वारा उपहार।

कृष्णकान्त शुक्ल

सी-59, अभिलाषा कालोनी, देवास रोड, उज्जैन मो. 94259-15292, फोन 2511885

लेखक अपनी कला से दिमाग के रास्ते दिल के मेहमान बन जाते है

लेखन एक ऐसी कला है, जिसके सहयोग से आप कई पाठकों के दिल और दिमाग में सहज भाव से पैठ कर जाते हैं। आप पढ़ने वाले के घर में स्वयं अवतरित भले ना हों, पर उसके दिमाग से होते हुए दिल के मेहमान बन जाते हैं। मेरे लेखन कौशल को मेरे साथ के लोगों ने पहचाना है और अपने कार्य क्षेत्र में इसका मैं बखुबी उपयोग करती हूं। मैं सर्वप्रथम अपने पुज्यनीय माता-पिता का स्मरण करके उन्हें नमन करूंगी क्योंकि मेरा अस्तित्व आज उन्हीं की वजह से है, पश्चात् मेरे स्वर्गगामी ससुर 'रामचन्द्र रावजी मण्डलोई' और सासुजी (काकीजी) गंगातुल्य 'द्रुपताबाई मण्डलोई' काकीजी को। मैं इनकी एकमात्र पुत्रवधु हूं। मेरे ससुर (काका) मेरे पदार्पण से, पूर्व स्वर्गगामी हो गए थे। किन्तु काकीजी थीं। इनसे ही मुझे अपने घर के बारे में बहुत कुछ जानने और समझने को मिला। काका सात गांव के जमींदार रहे हैं और मेरे पति 'श्री राघवेन्द्रराव मण्डलोई' के समान ही परिवार में दत्तक आए थे। नागपुर चूंकि म.प्र. का भाग था तो इसी युनिवर्सिटी से उच्च शिक्षा प्राप्त की। परन्तु काका ने रियासत को संभालते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान खंडवा के नागर समाज में बनाई। वे धार्मिक और अति सरल स्वभाव के धनि और परिवार में अपने भाइयों के साथ सुनियोजित तालमेल के बेहिसाब मालिक थे। हमारे घर में उनके समय की होली, मेहमाननवाजी और पूजा आज भी लोगों के स्मरण में विराजित है। काका की ज्ञात बातों में सबसे महान बात ये थी कि, वे प्रतिदिन पार्थिव पूजा करते थे, और मैं महसूस करती हूं कि हमारे परिवार को सिर्फ उसी का प्रतिफल प्राप्त हो रहा है। काकीजी को मैं जीवन की प्रेरणा मानती हूं। मेरे और उनके सम्बंध 'माँ' और 'बच्चे' जैसे थे प्रतिक्षण जैसे हम अपने बच्चे को सिखाते हैं वैसे वो मुझे सिखाती-गृहस्थी की पकड़, सविवेक परिवार का संचालन, लोगों को मानसम्मान देना और उससे परे जरूरत मन्द के बारे में ना केवल सोचना उनकी खासियत थी वरन् वे स्वयं अमल करती और मुझे भी प्रेरित करती। उनके साथ रहते हुए परिवार को सही दिशा में ले जाना कई गुण मैंने सहज सिख लिए। अपने इन गुणों के लिए वे समाज में भी चर्चित थीं। परिवार में इतना अच्छा सामंजस्य वे बिठाकर चलती थी कि कम शिक्षा के बाद भी हमें लगता वो हमसे ज्यादा अनुभवी है। सदैव उनसे सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती। कोई भी सामाजिक आयोजन परिवार में करना हो, किसे किस काम के लिये चुनना है, कब से इसकी शुरुआत की जाए और कैसे इसे गति देना है और उसका सफल समापन कैसे हो इत्यादि उनसे जो मैंने सिखा उसे ही अपने शिक्षिका के कार्यक्षेत्र में उपयोग करके मैं भी उसी सफलता को पाती हूं जो उन्हें मिलती थी। मेरे स्कूल के छोटे-छोटे आयोजन में काम की उन्हीं के समान चिन्ता करना, उसकी तैयारी करना योजना बनाना मेरे जहन में पहले से शुरु हो जाता है और जब सौ प्रतिशत समापन होता है तो प्रशासन तरीफ करता है। हर उम्र में हम सिखते है और यदि सिखाने वाले इतने अच्छे लोग के सानिध्य में हम रहे है तो निश्चित ही हम उनके आभारी है।

-निशी मण्डलोई
15, रामकृष्ण मंडलोई मार्ग, राष्ट्रकवि रसखान वार्ड
खंडवा-450001 फोन 2224604

देवी के 12 निग्रह

महाशक्ति माँ भगवती के प्रधान बारह (12) देवी विग्रह हैं तथा वे निम्न स्थानों पर स्थित है।

माँ भगवती के नाम	स्थान
1. कामाक्षी	कांची पुरी में
2. भ्रामरी	मलयाचल पर्वत पर
3. कुमारी	कन्या कुमारी (केरल) में
4. अम्बा	आनर्त (गुजरात) में
5. महालक्ष्मी	करवीर (कोल्हापुर) महाराष्ट्र
6. कालिका	मालवा (उज्जैन) M.P. में
7. ललिता (आलोपी)	प्रयाग राज में
8. विन्ध्यावासिनी	विन्ध्याचल पर्वत पर
9. विशालाक्षी	वाराणसी में
10. मंगलावती	गयाजी में
11. मंगलादेवी	बंगाल में
12. गुहाकेश्वरी	नेपाल में

भगवान शंकर के 12 ज्योतिर्लिंग

1. सोमनाथ- काठियावाढ़ (गुजरात) समुद्र तट पर। इस स्थान का प्राचीन नाम प्रमास क्षेत्र है।
2. मल्लिकार्जुन- आंध्रप्रदेश में कृष्णा नदी के तट पर श्री शैल पर्वत पर।
3. महाकालेश्वर- मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में शिप्रा नदी के तट पर।
4. ओंकारेश्वर- ममलेश्वर मध्यप्रदेश के मान्धातापर्वत पर शिवपुरी नर्मदा नदी के तट पर।
5. केदारनाथ- हिमालय पर्वत के केदार खण्ड में मन्दाकिनी के तट पर।
6. भीमशंकर- असम प्रदेश के गोहाटी शहर के पास ब्रह्मपुर (डाकिनी) पहाड़ी।
7. विश्वनाथ- उत्तरप्रदेश के वाराणसी शहर के गंगा तट पर।
8. त्रयंबकेश्वर-महाराष्ट्र में नासिक से 30 कि.मी. गोदावरी के तट पर
9. वैद्यनाथ- बिहार के देवघर नामक स्थान पर चिता भूमि में।
10. नागेश्वर- गुजरात प्रदेश में द्वारका से 27 कि.मी. दूर दासक वन में।
11. रामेश्वर- चेन्नई (मद्रास) सेतु बन्द समुद्र तट पर।
12. घुश्मेश्वर- महाराष्ट्र प्रदेश के दौलता बाद के पास वैलूर गांव में एलोरा की गुफाओं के पास।

शिव परमात्मा का दूसरा नाम है तथा ब्रह्मा का नामान्तर है। भगवान शिव की अष्ट मूर्तियों से यह समस्त जगत व्याप्त है इन अष्ट मूर्तियों के नाम और अधिष्ठान निम्नांकित है।

1. शर्व- पृथ्वी में (ऊं शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः)
2. भव- जल में (ऊं भवाय जल मूर्तय नमः)
3. रुद्र- अग्नि में (ऊं रुद्राय अग्नि मूर्तये नमः)
4. उग्र- वायु में (ऊं उग्राय वायू मूर्त ये नमः)
5. भीम- आकाश में (ऊं भीम आकाश मूर्तेये नमः)
6. पशुपति- यजमान (जीवात्मा में) ऊं पशुपति ये यजमान मूर्तये नमः
7. महादेव- सोम (चन्द्रमा में) ऊं महादेवाय सोम मूर्तये नमः
8. ईशान- सूर्य में (ऊं ईशानाय सूर्य मूर्त ये नमः)

संकलन- सुधीर पांडया दिल्ली

काम इंसान का, भरोसा भगवान का

भारत भगवानों का देश है। यहां हर कोई किसी न किसी भगवान में विश्वास रखता है। भगवान की छत्रछाया में, भगवान को मानने में जाने-अनजाने में कोई न कोई छोटा-बड़ा स्वार्थ अवश्य छुपा रहता है और भगवानों की आड़ में मनाए जाने वाले विभिन्न त्यौहारों में मनोरंजन की नीयत। अब चक्कर यह है कि हमारे यहां लोग कर्म तो करते हैं पर उससे अधिक की अपेक्षा भगवान से रखते हैं। कार्य के पूरा होने में संदेह हो तो भगवान पर जवाबदारी बढ़ा दी जाती है। जैसे लोगों की अपेक्षाएं पूरी करना भगवान की ड्यूटी हो। कई बार बिना कर्म किये चमत्कार की अपेक्षा भी की जाती है। मांगलिक अवसरों पर तो एडवांस में ही गणेशजी के माथे पर कार्य की जवाबदारी आ जाती है। हे प्रभु, हमारा कार्य पूर्ण करो। काम हम करें और ध्यान दूसरा रखे। परीक्षा के दिनों में भगवानों पर ज्यादा ही लोड रहता है। कारण, कि बहुत से संभावित फेल्युअर्स की गाड़ी भगवान भरोसे चलती है। घर का कोई सदस्य बीमार हो तो छोटे-मोटे इलाज डॉक्टर तक सीमित रहते है। रोग असाध्य हो तो भगवान को रेफर करो। जिस तरह डॉक्टर द्वारा मरीज की प्राथमिक जांच के समय उसे दवाइयां दी जाती है। फिर ब्लड इत्यादि और फिर एक्स-रे, सोनोग्राफी... आगे और भी गहन और सूक्ष्म जाचें। ठीक उसी तरह भगवान को शुरु-शुरु में थोड़ा बहलाया जाता है। फिर पूजा-पाठ। धीरे-धीरे अगरबत्ती दीये शुरु। अब तक केवल सुबह पूजा चलती हो तो अब दोनों टाईम। अब तक एक टाईम मंदिर में जाते हों तो अब दोनों टाईम। ज्यादा बड़ी बीमारी हो तो अखण्ड पूजा-पाठ हवन। फिर भी काम न बने तो और भी दूसरे टोने-टोटके शुरु। लोगों के भगवान भी चेन्ज होते रहते हैं। (डॉक्टरों के समान)। जैसे पहले जनरल फिजिशियन के बाद स्पेशलिस्ट के पास जाते हैं। छोटे भगवान से काम न बने तो बड़े वाले को पकड़ो। फिर भी न हो तो किसी देवीशक्ति को। गणेश नहीं तो उनके पिताजी भोलेनाथ के पास। बड़े डॉक्टर के पास। ज्यादा दिन धैर्य रख लेना हर किसी के बस की बात नहीं। होमियोपैथिक ट्रीटमेन्ट लेने में धैर्य रखना पड़ता है। तकलीफ बढ़ जाए तो एलोपैथिक दवाइयां लेकर फटाफट काम पूरा करो। गणेशजी की स्तुति कर मांगने में टेंशन नहीं रहता। दुर्गा मैय्या से मांगों तो कार्य पूर्ण होने की संभावना प्रबल रहती है पर देवीशक्ति का मनोवैज्ञानिक भय बना रहता है। कार्य पूरा होने पर देवी के पास पुनः जाकर थैंक्स बोलने और शुक्रिया अदा करने का नियम डराकर रखता है। हार्ट के लिये जिस तरह लोग चैन्नई जाया करते हैं उसी तरह किसी विशेष कार्य या मन्नत के लिये वैष्णोदेवी या किसी भी ऐसे ही अन्य स्थान पर। भगवान में इतनी सब श्रद्धा रखने के बावजूद यदि काम न बने तो मजा देखो। टोटके चालू। गणेश मन्दिर में जाकर धागा बांधो। हनुमानजी के मंदिर में नारियल फोड़ो या भोलेनाथ के मन्दिर में दूध और पानी चढ़ाकर ताली बजाओ। नवरात्रि में जूते-चप्पल मत पहनो। भगवान कुछ बोलते नहीं और इंसान कुछ भी हरकते कर मन समझाता रहे। बना रहता है यही सन्तुलन। भगवान को भ्रम में पटकते रहो और अपने मन को समझाते रहो। भगवान भी इंसान को कभी किसी कार्य के पूरा होने की गारन्टी नहीं देता। करे जाओ सब कुछ अपने मन से। यही कन्फ्यूजन चलता रहा है सदा से इंसान और भगवान के बीच। भगवानों में भी विशेषज्ञ होते हैं। जैसे डॉक्टरों में आंखों के या नाक कान गला विशेषज्ञ। हड्डी या हृदय रोग विशेषज्ञ। गणेशजी का रोल जनरल फिजिशियन जैसा है। सबसे सरल भगवान। क्योंकि वे सबसे पहले और कैसे भी इस्तेमाल हो जाते हैं। कहीं भी बैठा दो। लड़कियों में अच्छे वर प्राप्ति या महिलाओं के पतियों को दीर्घायु करवाने का काम शिवशंकर का। हनुमानजी, भूतप्रेत स्पेशलिस्ट। पैसे, कौड़ी, जमीन, जायदाद संबंधी तकलीफें लक्ष्मीजी के जिम्मे। दुष्कर कार्यों हेतु दुर्गा, काली...। ब्रह्माजी का रोल सिविल सर्जन जैसा है। ईलाज कम, एडमिनिस्ट्रेशन अधिक। कोई बड़ा कार्य सम्पन्न हो जाए तो सत्यनारायण भगवान की जय बोलकर आभार प्रदर्शन।एक रोचक तथ्य और है। प्रसाद और मन्नतों का। छोटे-मोटे इंजीनियरिंग, मेडिकल या मैनेजमेन्ट कॉलेज में प्रवेश के लिये कम राशि का प्रसाद। आई.आई.टी. और आई.आई.एम. के लिए बड़ी राशि का प्रसाद मानकर भगवान को ललचाओ। जितना बड़ा काम उतनी अधिक रिश्वत। भगवान से वादे किये जाते हैं। यह काम हो गया तो मैं आपके लिये वह कर दूंगा। जैसे भगवान कोई जरूरतमंद हों। गणेशजी तो लड्डू खाते नहीं। भोग लगाओ और अपनो को बांटों। कहीं श्रद्धा, तो कहीं खाने का बहाना। कुल मिलाकर हमारे देश में भगवान को एक मास्टर चाभी समझा जाता है। चाहे जहां लगा लो। कोरा मनोविज्ञान है, मन समझाने का। मानव द्वारा कार्य की पूर्णता का सन्देह हो तो भगवान को सौंप दो। कार्य को भगवान के सुपुर्द करने से जवाबदारी कम होती सी लगती है। आत्मविश्वास (कृत्रिम) बढ़ता सा लगता है। ऐसा लगता है जैसे हमने हमारी ड्यूटी कर दी भगवान। अब तुम जानो और तुम्हारा (हमारा) काम। गिर पड़ो पूरे वजन से भगवान के ऊपर। शादी करने की रिस्क तुम लो और बीवी और शेष जीवन भगवान भरोसे। संसार में जितने प्राणी है उनमें इंसान ही सबसे निकृष्ट है। झूठ बोलना, धोखाधड़ी करना, मजाक उड़ाना, नीचा दिखाना, अपने को श्रेष्ठ समझना, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, घमंड सभी इंसान के साथ जुड़े हैं। जानवर नहीं करते यह सब। इंसान दूसरे को भला बुरा कह लेता है। जानवर तो मूक हैं। बेचारे झूठ तो नहीं बोलते। दूसरों का मजाक नहीं उड़ाते। चोरी, धोखाधड़ी तो नहीं करते। रिश्वतखोरी, कामचोरी, छलकपट, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, सब इंसानों के साथ जुड़े हैं। पशु आतंकवादी हमले तो नहीं करते। सच तो यह है कि, इंसान जन्म से मृत्यु तक भयभीत और भ्रमित है। एक सीमा के बाद भगवान पर भरोसा करना यह दर्शाता है कि भक्त में सेल्फ कॉन्फिडेंस का अभाव है या वह काम पूरा करने के शॉर्टकट्स ढूंढ रहा है। हर व्यक्ति मरने से डरता है। भगवान और उनके चमत्कार देखने की इच्छा सबकी रहती है पर भगवान के पास जाने की किसी की नहीं। कैसे भी अपनी स्वार्थ सिद्धि होना। जीते जी भगवान के दर्शन की अभिलाषा। मरकर नहीं। अपने और अपनों के टेन्शनों का ध्यान रखो। भगवान को सब टेंशन देकर।

-विनय नागर
125, पलसीकर कॉलोनी, इन्दौर
मो. 98934-49974,98939-44336

स्मृति को पाथेय बनने दें

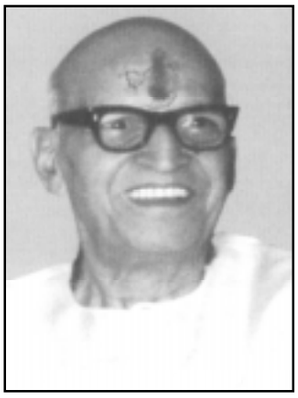

नैसर्गिक सम्बंधों में प्रेम, अपनापन, भावुकता, एक-दूसरे के लिय कुछ कर गुजरने की अपेक्षारहित तत्परता स्वभावगत रहती ही है किन्तु जो सम्बंध समाज द्वारा बनाये जाते हैं या परिस्थितिवश जिन सम्बंधों का निर्माण होता है उन्हें बनाये रखने के लिये वही प्रेम, वही दुलार, वही अपनापन देने का प्रयत्न करना पड़ता है अन्यथा समय की थपेड़ में सारे सम्बंध बनावटी हो जाते है, कभी-कभी बिखर जाते हैं।

सन् 1971 में, मैं बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा थी, उन्हीं दिनों मेरे म्होटा काकाजी श्री गिरधारीलाल मेहता एक बड़े आपरेशन के बाद आराम कर रहे थे तभी एक शाम मेरे भावी ससुरजी श्री ल.ओ. जोशी साहब का हमारे घर पदार्पण हुआ। मुझे बुलाया गया। ऊंचे-स्वस्थ, तेजमय मुखाकृति, चश्मे के पीछे छोटी पर गहरी बेधक आँखे, चेहरे पर मुस्कान, भारतीय वेषभूषा में इस दिव्य आकृति के प्रथम दर्शन में समादर उत्पन्न होना स्वाभाविक था। औपचारिक परिचय के बाद उन्होंने मेरे नाम का अर्थ पूछा और हंसते हुए बोले कि मैं सबसे नाम के अर्थ इसलिये पूछता हूं जिससे जिसे न पता हो वह सही अर्थ जान सके। मेरी घबराहट ताड़ कर कुछ देर बाद उन्होंने मुझे जाने की अनुमति देते हुए कहा कि तुम चाहो तो जा सकती है, you can but you may not और जोर से हंसते हुए बोले कि तुम न जाना चाहो तो यहां बैठ भी सकती हो, इस बात पर दोनों काकाजी इतना जोर से क्यों हंसे थे यह समझने की मुझे सुध नहीं थी। पूज्य काकाजी का हमारी शादी के पहले कई बार कलकत्ता आना-जाना रहा। सच पूछे तो जोशी परिवार में मैं, उन्हें ही जानने लगी थी। उनके आने पर हमारे संयुक्त परिवार के सारे पुरुष व कुछ बच्चे उन्हें घेर कर मंदिर में बैठते, उनकी धाराप्रवाह ज्ञानवर्धक बातें, एकाग्रता से सुनते, सब भोजन करने जाते और जब तक वे रहते, सब साथ रहते। निष्काम कर्मयोगी पू. काकाजी को मेहता परिवार के वैभव से कहीं अधिक ऋग्वेदीय सूक्त की संगच्छध्वं..संवदध्वं की संस्कृति प्रभावित कर गई होगी, ऐसा मुझे लगता है तभी तो उन्होंने मुझे अपने घर की बहू बनाने का सम्मान दिया। उन्हें विद्वान, कर्मठ आई.ए.एस. अधिकारी के रूप में जानने वाले अनेक हैं, एक सद्गृहस्थ के रूप में दृढ़ व्यक्तित्व के साथ उनके कोमल हृदय की अनुभूति मुझे कई बार हुई। शादी के पहले, अन्तिम बार जब वे कलकत्ता आये और उन्हें पता लगा कि मेरी माँ कुछ घबरा रही है तो वे हमारे कमरे में, विशेष रूप से माँ से मिलने और उन्हें आश्वस्त करने आए। मैं जिस सनातनी परिवार से आई थी वहां खाने में प्याज, लहसुन का प्रयोग नहीं किया जाता था। काकाजी यह जानते थे इसीलिये शादी के बाद जब मैं भोपाल आई तब उन्होंने स्वयं इस बात का ध्यान रखा कि खाने में प्याज लहसुन न बनाये जाये। कालान्तर में कई बार बड़ी दृढ़ता से उन्होंने इस वाक्य पर जोर दिया, इसे मैं लाया हूं। इस अधिकारपूर्ण अपनत्व की पूर्णाहुति उनके जीवन के अंतिम सप्ताह में हुई, जब मैं इन्दौर पहुंची तब पता लगा कि कुछ समय से कुछ भी नहीं ले रहे, कभी-कभी ठीक से पहचान भी नहीं पाते। पूज्य दादा सलाइन चढ़ाने का विचार कर रहे थे। कमरे में गई तो काकाजी की आंखे बन्द थी। पू.दादा जोर से बोले, देखो कौन आया है? काकाजी ने मेरी ओर देखा और हल्का सा भाव उनके चहरे पर पसर आया। कौन है बताओ? बड़ी कठिनाई से वे बोले 'मंजी....बम्बई। वे मुझे पहचान गए, यह मेरे लिये बहुत बड़ी बात थी। उनकी आंखों व चेहरे के भाव मुझे हमेशा याद रहेंगे। मैंने विकास-सिद्धार्थ दोनों के मुण्डन के समय विचलित होते उन्हें करीब से देखा। विकास बड़ा था पर रोया तो उसे गोदी में लेकर की फांके खिलाकर बहलाने लगे थे। सिद्धार्थ बहुत छोटा था, करीब नौ महीने का, उसके पूरे बाल, भी नहीं उगे थे और काफी कोमल भी था। बाल उतारते समय वह जोर-जोर से रोने लगा, पकड़ने वाले के हाथ से फिसलने लगा तब पू. काकाजी जोर से चिल्लाते हुए बोले, उसकी मां को दो और फिर स्वयं पासबैठकर जहां-जहां कटता जाता डेटौल छिड़कते जाते। अन्त में उन्होंने पूरे बाल उतराने को मना कर दिया। पू. काकाजी ने दोनों बच्चों को जनोई से पहले ही पूरा गायत्री मंत्र अर्थ सहित लिखवा कर कंठाग्र करवा दिया था इसीलिये आजतक दोनों को अर्थ सहित मंत्र भलीभांति याद है। चि. विकास को अपने हाथ से 'अर्थानाम अर्जन दुखं... श्लोक लिखकर दिया जिसकी प्रति हमारे पास सुरक्षित है। यात्रा उन्हें प्रिय थीं वे जब तक स्वस्थ रहे तब तक बम्बई पूना रहने के दौरान छोटी मोटी, आस-पास की कुछ अन्य यात्रा भी कर लेते थे। एक बार भीमाशंकर जाने की इच्छा हुई, हमारे पास गाड़ी नहीं थी, पूज्यादादा-सौ. भाभी औरंगाबाद में थे। सुबह-सुबह हम सब बस में सवार हुए, रास्ता उजाड़ था, रास्ते में खाने-पीने का भी विशेष नहीं था और फिर कच्ची सड़क पर दचकोले खाती बस से हम भीमाशंकर पहुंचे, वहां उतरने के पहले ही कण्डक्टर ने कह दिया कि यहां रुकने की व्यवस्था नहीं है, यह आखिरी बस है, जल्दी दर्शन कर वापस आओ। भाग-भाग कर सबने दर्शन किए और वापस बस में बैठे। ऐसी कठिन यात्रा में भी पू. काकाजी न तो नाराज हुए न ही धैर्य खोया, बस चुपचाप अविचलित बैठे रहे। ऐसा कम ही लोग कर पाते हैं। अपनी शारीरिक व्याधि को भी उन्होंने कभी बन्धन नहीं बनने दिया, निरन्तर अपने हिसाब से चलते, डॉक्टरों की सारी सलाह वे मानते। सही अर्थों में वे कर्मयोगी थे, जो मोटे तौर पर 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम् ' यह मानकर चलते रहे। पू. काकाजी को गतिशील और जीवन्त रखने का पूरा श्रेय पूज्य काकीजी (हमारी सासूजी) को जाता है जिन्होंने कभी शारीरिक व्याधि से पू. काकाजी को कमजोर नहीं बनने दिया बल्कि धैर्यता से, सहयोग देकर हमेशा उनका सम्बल बनी रहीं।मनुष्य केवल अपनी काया में ही नहीं जीता, वह जीता है अपनी कृति में, अपनी कीर्ति में और अपनी संतति में। पूज्य काकाजी की गरिमामय जीवनयात्रा ये इन तीनों दृष्टियो से पूर्ण है। उनकी अध्ययनशीलता एवं आध्यात्म, संस्कृति, साहित्य-प्रेम एवं संस्कार उनकी संतति में पूरी तरह जीवित हैं और आगे भी जीवित रहेंगे यह कहें तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

काल का प्रवाह नदी की तरह बहता जाता है, उसे उल्टा नहीं बहाया जा सकता। स्मृतियां और केवल स्मृतियां ही तो शेष रह जाती है, स्मृति की इस पूंजी को पाथेय बनने दें तो अच्छा...

-सौ. मंजुला विजय जोशी, मुंबई
-सौ. अरुणा-ललित जोशी, पूना
'ऊं शिवम्' 6, दुबे कालोनी, इन्दौर, फोन 2364656

श्री हरीशचन्द्र मेहता
स्मृति शेष 27-11-09

एक पाती दादाजी के नाम

चिट्ठी न कोई संदेश जाने वो
कौन सा देश जहां आप चले गए

आदरणीय एवं पूज्यनीय दादाजी,
सादरचरण स्पर्श,

हम सभी परिवारजन यहां सकुशल है एवं आशा करते हैं कि आप भी देवलोक में हमें देखकर प्रसन्न होंगे। आज आपके देवलोक गमन को एक वर्ष पूर्ण हो रहा है, किन्तु किंचित भी ये महसूस नहीं होता है कि आप हमारे पास नहीं है। प्रत्यक्ष न सही पर अप्रत्यक्ष रूप से आपके आशीष को हमने हर सुख-दुख में महसूस किया है।

दादाजी आप मुझे कहते थे कि हनी तेरे जन्म के वक्त मैं बैंक से रिटायर्ड हुआ था और आज तेरे बेटों यानि मेरे परपोतों का जन्म भी मेरी आंखों के सामने हुआ है। ऐसे किस्मत के धनी बिरले ही होते है जो अपने जीवनकाल में सपत्निक सभी नाती पोतों का विवाह देख सकें व परपोते, परपोती खेलाएं आप उन्हीं भाग्यशाली लोगों में से एक है।

दादाजी आज भी मुझे वे दिन याद है जब आप स्वास्थ्य व उम्र की लाचारी की वजह से किसी समारोह का न्यौता आने पर जा नहीं पाते थे तो आप चिट्ठी लिखकर अपनी मजबूरी बताते थे जो कि आपकी व्यवहार कुशलता को दर्शाता था।

घर का कोई भी सदस्य विदेश प्रवास या ट्रांसफर होकर जाता तो आप फूट-फूटकर रोते थे कभी भी किसी भी परिवार के सदस्य पर पारिवारिक या नौकरी में उथल-पुथल होती थी तो आप सुंदरकाण्ड का पाठ आरम्भ कर देते थे। आपने सदैव वसुदैव कुटुम्बकम् की परम्परा का निर्वाह करते हुए अपने परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखा। दादाजी, आपके कई किस्से कहावतें आए दिन याद आते रहते हैं जो कि प्रेरणात्मक भी होते थे जैसे आप बताया करते थे कि आपकी शादी के वक्त घूंघट प्रथा (गर्दन तक घूंघट) का प्रचलन था। आपने इसका विरोध किया व चार दिन तक भूख हड़ताल की अंत में घर के व समाज के वरिष्ठजनों को मना लिया, आप सामाजिक भेड़चाल को अपनाने के बजाए स्वयं की अलग सोच रखते थे अपने जीवनकाल में जिन गुणों का अनुसरण किया अपने नाम के **(हरीशचन्द्र मेहता)** पर्याय बने उसी परिपाटी को हम आगे बढ़ाने का संकल्प लेते हैं जैसे आप कहा करते थे 'सत्य परेशान हो सकता है पराजित नहीं, झूठ, राग, द्वेष, छल, कपट के साथ ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती है सत्य के आगे सभी को नतमस्तक होना पड़ता है। जिस प्रकार आपने अपने जीवनकाल में कईं लोगों की आजीविका के साधन उपलब्ध करवाए, कईं घरों के चूल्हे जलवाए और कभी जिक्र भी नहीं किया। उसी प्रकार हम भी आपसे आशीर्वाद मांगते हैं कि आपके पदचिन्हों पर चलकर आपके नाम को आगे बढ़ाएं। सम्पूर्ण मेहता परिवार की ओर से आपको शत् - शत् नमन

-हनी (अर्पित) मेहता
104, पलसीकर कालोनी, इन्दौर
मो. 9977006300

मंडलोई का निधन

खंडवा। वरिष्ठ पत्रकार आर.के. मंडलोई (81) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार ओंकारेश्वर नर्मदा तट पर किया गया। श्री मंडलोई लंबे समय तक नईदुनिया इन्दौर एवं पीटीआई से संबद्ध रहे। 1980 के दशक में मप्र शासन ने उन्हें जिला योजना मंडल का अध्यक्ष मनोनीत किया था। जनसंपर्क, संस्कृति, उच्च शिक्षा मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा, जिले की प्रभारी रंजना बघेल, आदिमजाति कल्याण मंत्री विजय शाह व कलेक्टर एसबी सिंह ने श्री मंडलोई के निधन पर शोक व्यक्त किया है। श्री मंडलोई नईदुनिया के पत्रकार निशिकांत मंडलोई के काकाश्री थे।

सादर नमन्

सर्वपूज्य श्री त्रिभुवनलालजी रावल

राजगढ़ (ब्यावरा)

स्मृति दिवस 27 अक्टूबर 2009

स्व. श्रद्धेय श्री त्रिभुवनलालजी रावल नागर मोहल्ला राजगढ़ (ब्यावरा) का देवलोकगमन 99 वर्ष की आयु में देवास में हुआ। आपकी 10वीं पुण्यतिथि के अवसर पर संपूर्ण परिवार नतमस्तक है। आप जैसी पुण्यात्मा जिनका जन्म भी आंवला नवमी के दिन हुआ तथा स्वर्गाराहण भी आंवला नवमी के दिन। सादर श्रद्धांजली

-डॉ. अवध बिहारी रावल
देवास, फोन 07272-228230,मो. 94248-98427

तृतीय पुण्य स्मरण- भावपूर्ण वंदन

स्व. दुर्गाशंकरजी नागर
28 नवम्बर

आपके पुरुषार्थ, परिवार, समाज एवं देश के प्रति कर्मण्यता-परोपकार की भावना की ज्योत से हमारा जीवन पथ प्रदर्शित होता रहे। हम जीवन के नैतिक मूल्यों का पालन करते रहने में सक्षम हों यही आपके प्रति सच्ची श्रद्धांजली है-

-विनोद नीता नागर,
सुनीता शैलेन्द्र पंड्या

पुण्य स्मरण

ब्रह्मलीन- कार्तिक सुदी
आवला नवमी, वि.सं. 2050
स्व. पं. श्री मोतीलालजी जोशी की 16वीं पुण्यतिथि पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित
शत् - शत् नमन
श्रद्धावनत- जोशी परिवार
उज्जैन एवं बिसनावदा के ग्रामवासी

अर्द्धरात्रि

आधी रात एक अजीब सा शीर्षक है लेकिन जीवन में अक्सर कितनी ही घटनाएं सामने आती है जो आधी रात को ही घटित होती है। बच्चनजी ने अपने उपन्यास 'नीड़ का निर्माण' लिखा है जीवन में जो भी कातर हैं, करुण है, रोमांचकारी है वह आधी रात को ही घटित होता है। रात के प्रथम प्रहर में अक्सर सपने नहीं आते, सपने आधी रात के बाद ही शुरू होते है कुछ बीच में टूट जाते हैं, कुछ सुबह तक चलते रहते हैं। उनमें से कुछ याद रह जाते हैं, कुछ भूल से जाते हैं, कुछ रोमांचकारी होते है, डरावने भी होते है, कुछ सच भी हो जाते है। इसीलिए बच्चन जी 'नीड़ का निर्माण' में आगे लिखते है। आधी रात शायद प्रतीक मात्र है दो तनावों के बीच की स्थिति का। जिन तनावों को मनुष्य झेलता है उन्हें निर्याति प्रकृति भी झेलती है। दुनिया का साहित्य और इतिहास चाहे वह भारतीय हो या पाश्चात्य में कई ऐसी घटनाओं के उदाहरण है जो रात को ही घटी है और वे अपने आप में बेमिसाल उदाहरण है- कुछ उदाहरण पेश हैं-

(1) भारतीय धर्मग्रंथों में सबसे पहले भगवान श्री कृष्ण का जन्म रात को 12 बजे होता है और वासुदेव उन्हें रातों रात मथुरा पहुंचाते है।

(2) रामचरित मानस में कैकेयी जब राजा दशरथ से भरत को राजतिलक और राम को 14 वर्ष का वनवास रूपी दो वर मांगती है तब राजा दशरथ कैकयी को हर तरह से मनाने की कोशिश करते है जब वह नहीं मानती तब अंत में वे कहते हैं

अवसि दूतु मैं पठइव प्राता। ऐहि बेगी सुनत दोअ भ्राता
(रा.च.मा.अयोध्याकांड)

या

बिलपत नृपहि मृयऊ मिनुसारा
(राम.च. मा.अयोध्याकांड)

इन पंक्तियों से ऐसा लगता है कि राजा दशरथ और कैकयी का यह संवाद आधी रात के आसपास के समय में हुआ होगा।राजा दशरथ की मृत्यु के बाद भरत को रात को भयानक सपने दिखने लगते हैं **देखाई राति भयानक सपना। जागि करहि-कटु कोटि कल्पना (अयोध्याकांड)**

राम अपने भरतवासियों को सोता छोड़कर चले जाते है सवेरा होते ही सब लोग जागे तो शोर मचा श्री रघुनाथ जी चले गये।

जागे सकल लोग भएं भोरू गें रघुनाथ मचऊं अति सोरू। (अयोध्याकांड)

लक्ष्मणजी की शक्तिबाण की घटना भी रात को ही होती है और जब हनुमानजी को संजीवनी बुटि लेकर लौटने में देर होती है तब श्री राम चिंता करते हुए कहते हैं

अर्धराति गई कपि नहीं अन्यऊ, राम उठाई अनुज उर लायऊ (लंकाकांड)

दशरथ भी रामवियोग में आधी रात को दृष्टिशुन्य होते होकर श्रवण कुमार के शाप की घटना याद करते हुए प्राण त्याग करते हैं।

कुमार सिद्धार्थ भी आधीरात को यशोधरा और अपने पुत्र को सोता छोड़कर महल के ऐशोआराम को त्याग कर बुधत्व को प्राप्त करने के लिए गृहत्याग करते है। पाश्चात्य साहित्य भी रात की घटनाओं से अछुता नहीं है कुछ उदाहरण देखिएः-

हैमलेट अपने मृत पिता की प्रेतात्मा को आधी रात को ही देखता है।

मैकवैथ राजा डंकन की हत्या आधी रात को ही करता है।

रोमियो आधीरात को ही जुलियट से मिलने उसके कक्ष में पहुंचता है। फाउस्ट के आगे मैफिस्टों शैलिज उसके स्वाध्याय कक्ष में आधी रात को ही प्रकट होता है। आज भी अनेकों सड़क दुर्घटनाएं आधी रात के समय के आसपास ही होती है जब ड्राइवर को थोड़ी झपकी आ जाती है या और किसी कारणवश असंतुलन या असावधानी के कारण दुर्घटना हो जाती है और उसकी भयंकरता का पता सुबह के अखबार से लगता है।

नोट- पाश्चात्य साहित्य के उदाहरण 'बच्चनजी' के नीड़ के निर्माण से लिखे गये है।

-सविता (नीलू) दवे
29, शांति बिहार, दिल्ली

प्रभू का वरदान है ये...

हमको तो प्राणों से भी प्यारी अपनी बेटियां।
अपने तो जीवन की खुशहाली है ये बेटियां।।
1. इनने ही राम को जाए, श्रीकृष्ण को गोद खिलाये।
शिव-शंकर हनुमान की, मां हैं ये ही बेटियां।।
2. राणा शिवा भी जाये, भगत सिंह को गोद खिलाये।
शेखर आजाद की भी, माँ है ये ही बेटियां।।
3. ये ही उमा-ब्रह्माणी, ये ही कमला कल्याणी।
सीता-सावित्री राधा भी है ये ही बेटियां।।
4. ममता की खान है ये सबका अरमान है ये।
माता-पिता की तो जान हैं ये बेटियां।।
5. विधी का विधान है ये, प्रभु का वरदान हैं ये।
शांति स्वरों की भी जान है ये बेटियां।
6. माता की आंखों का तारा, बाप का बनती सहारा।
कदम से कदम मिलाके चलती है ये बेटियां।।
7. पीहर से ससुराल है जाती, दोनों कुल की लाज निभाती।
सुख-दुख हो हंस कर सब, सह लेती है ये बेटियां।।
8. कुदरत की ये है गुलक्यारी, खुशियां लुटाने वाली।
घर को भी स्वर्ग बनाती है, ये ही बेटियां।।
9. इनको ना सताओ लोगों, इनको ना जलाओ लोगों।
ये ही दुर्गा, काली, महाकाली भी है बेटियां।।
10. नागर तो है बलि-हारी, तन-मन-धन सर्वस्ववारी।
भारत की आन-बान-शान हैं, ये बेटियां।

-सौ. सुमनलता नागर
मोहन बड़ोदिया
(शाजापुर)

श्री हाटकेश्वर नागर मण्डल खण्डवा (म.प्र.) द्वारा प्रायोजित

(सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता)

सामाजिक आयोजनों में सभी के लिए प्रतिस्पर्धा योग्य

नागर समाज के बारे में ज्ञानवर्द्धन के उद्देश्य से संलग्न प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की जा सकती है। उपरोक्त प्रश्नोत्तरी को मनोयोग से तैयार कर न केवल खंडवा में प्रतियोगिता आयोजित करने बल्कि इसे समस्त नागर बंधुओं हेतु उपलब्ध कराने के लिए हम श्री सरोज कुमार जोशी के आभारी हैं।

अवधि : 1 घंटा

(नागर ब्राह्मण जाति का इतिहास, संस्कृति एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों के जीवन पर आधारित)

नोटः- सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रश्नों में बहुविकल्प दिये जा रहे हैं उनमें से सही विकल्प पर (✓) 'टिक' सही का चिन्ह अंकित करें। सभी प्रश्नों पर समान अंक है।

प्र. 1. नागर ब्राह्मण समाज के प्रतीक चिन्ह में है-
(अ) कलम (ब) भाला (स) कड़छी (द) कलम, कड़छी, बरछी

प्र. 2 नागर ब्राह्मण गुजरात में रहने वाले कितने कुल के थे-
(अ) तीन कुल (ब) पंचकुल (स) षटकुल (द) अष्ट कुल

प्र. 3 नागर ब्राह्मण समाज के प्रतीक चिन्ह में प्रत्येक चिन्ह का अर्थ है-
(अ) विद्वान, ज्ञानी, स्वादिष्ट भोजन बनाने में निपुण, युद्ध में निपुण (ब) अशिक्षित, पाक कला, रक्षक (स) अज्ञानी, स्वादहीन भोजन, डरपोक
(द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 4. नागर ब्राह्मण समाज के द्वारा गुजरात से म.प्र. आगमन पर अपने ईष्टदेव भगवान हाटकेश्वर की अष्टमुखी विशाल मूर्ति स्थित है-
(अ) ममलेश्वर, ऊँकारेश्वर (ब) भोज महादेव मंदिर, धार
(स) पशुपतिनाथ, मंदसौर (द) महाकाल, उज्जैन

प्र. 5. हाटकेश्वर भगवान निवास करते हैं-
(अ) तीनों लोकों में (ब) पृथ्वी लोक में
(स) पाताल में (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 6. गुजरात से नागर ब्राह्मण समाज का पलायन क्यों हुआ-
(अ) व्यापार, व्यवसाय बढ़ाने हेतु (ब) जलवायु अनुकूल नहीं होने के कारण
(स) अन्य प्राकृतिक आपदाओं के कारण (द) मोहम्मद महमूद गजनवी के सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण एवं जबरिया धर्म परिवर्तन के कारण

प्र. 7. नागर ब्राह्मण समाज के प्रसिद्ध संत थे-
(अ) गोस्वामी तुलसीदास (ब) कालिदास (स) संत रैदास (द) नरसी मेहता

प्र. 8. नागर ब्राह्मण समाज म.प्र. के किन-किन जिलो में बसा हुआ है-
(अ) इन्दौर, खण्डवा (ब) उज्जैन, देवास
(स) शाजापुर, मंदसौर (द) उपरोक्त सभी जिलों में

प्र. 9. 'आकाशे तारकं लिंग, पाताले हाटकेश्वरम् । मृत्युलोके महाकालं, लिंग त्रय नमोस्तुते।।'
हाटकेश्वर के महात्म्य का उक्त श्लोक कहां से लिया गया है-
(अ) श्रीमद् भगवत् गीता पुराण (ब) गरुड़ पुराण
(स) स्कन्द पुराण (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 10. भगवान हाटकेश्वर का प्रधान मंदिर स्थित है-
(अ) नई दिल्ली में (ब) पूना में (महाराष्ट्र)
(स) उज्जैन (म.प्र.) (द) वडनगर (गुजरात)

प्र. 11. दिल्ली के हाटकेश्वर मंदिर का निर्माण हुआ था-
(अ) 12वीं शताब्दी (ब) 14वीं शताब्दी
(स) 16वीं शताब्दी (द) 21वीं शताब्दी

प्र. 12. नागर समाज के संत शिरोमणी संत नरसी मेहता का जन्म किस स्थान पर हुआ था-
(अ) उज्जैन (म.प्र.) (ब) बांसवाड़ा (राजस्थान)
(स) जूनागढ़ (गुजरात) (द) वड़नगर (गुजरात)

प्र. 13. नागरों की कुल देवी 'अंबाजी' का मंदिर बनाया गया था-
(अ) ग्यारवी शताब्दी (ब) पन्द्रहवी शताब्दी
(स) अठारहवी शताब्दी में (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 14. नागर समाज के प्रसिद्ध कथावाचक जिनके एकल प्रयास द्वारा ऊंकारेश्वर में प्रसिद्ध 'नागर घाट' का निर्माण किया गया-
(अ) पं. सूर्यनारायण व्यास (ब) पं. राधावल्लभ मेहता
(स) पं. कमलकिशोरजी नागर (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 15 मेवाड़ से पलायन होकर आई दशोरा नागर ब्राह्मण जाति का मूल स्थान दशपुर का वर्तमान नाम है-
(अ) उज्जैन (ब) शाजापुर (स) मंदसौर (द) देवास

प्र. 16. 'म्हारी हुण्डी चुकाओ महाराज रे सांवरा गिरधारी' भजन किस की रचना हैं?
(अ) मोरारी बाबू (ब) बालविदुषी वर्षा नागर
(स) संत नरसी मेहता (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 17. महमूद खिलजी ने मंदसौर के दशोरा (नागर) का रक्तपात किया था-
(अ) सन् 1857 (ब) सन् 1740 (स) सन् 1455 (द) सन् 1947

प्र. 18. 'हनुमान चालीसा' पर व्याख्यान एवं विश्लेषण नागर समाज के किस पंडित द्वारा प्रस्तुत किया गया
(अ) पं. राजेश्वर नागर (ब) पं. सूर्यनारायण व्यास
(स) पं. विजय शंकर मेहता (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 19. राष्ट्रीय स्तर पर 'पत्रकारिता' हेतु पद्मश्री से सम्मानित नागर समाज के गौरव का नाम है
(अ) राकेश त्रिवेदी (ब) विष्णुदत्त नागर
(स) डॉ. आलोक मेहता (द) इनमे से कोई नहीं

प्र. 20. स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु निमाड़ में स्वाधीनता आंदोलन के जनक पूर्व मुख्यमंत्री पं. भगवंतराव अन्नाभाऊ मण्डलोई को भारत शासन के किस सम्मान द्वारा विभूषित किया गया है-
(अ) पद्मश्री (ब) पद्मभूषण (स) पद्मविभूषण (द) भारत रत्न

प्र. 21. अखिल भारतीय नागर सम्मेलन/अधिवेशन खण्डवा में कब हुआ था-
(अ) सन् 1978 (ब) सन् 1980 (स) सन् 1982 (द) सन् 1984

प्र. 22. इंदौर/उज्जैन से प्रकाशित 'दैनिक अवंतिका' समाचार पत्र के संस्थापक है-
(अ) पं. राधावल्लभ नागर (ब) पं. विष्णुदत्त नागर
(स) पं. गोवर्धनलालजी मेहता (द) डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय

प्र. 23. स्व. श्रीमती कांता जोशी नागर समाज की प्रसिद्ध आकाशवाणी, दूरदर्शन कलाकार, निमाड़ी लोकगीत गायिका को कहा जाता है-

(अ) स्वर साधिका (ब) स्वर साम्राज्ञी
(स) निमाड़ कोकिला (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 24. इन्दौर के प्रसिद्ध समाज सेवी जिन्हें अंग्रेज सरकार द्वारा 'रायसाहब' की पदवी दी गई-
(अ) श्री गिरिजा शंकर त्रिवेदी (ब) स्व. दुर्गाशंकर त्रिवेदी
(स) श्री एल.ओ. जोशी (द) श्री बापूलालजी जोशी

प्र. 25. उज्जैन से प्रकाशित नागर समाज की पत्रिका का नाम है-
(अ) जय हाटकेश (ब) हाटकेश्वर-समाचार
(स) जय हाटकेश वाणी (द) कलम, कड़छी, बरछी

प्र. 26. इन्दौर से प्रकाशित नागर समाज की मासिक पत्रिका का नाम है-
(अ) हाटकेश्वर समाचार (ब) जय हाटकेश वाणी
(स) कलम, कड़छी, बरछी (द) उपरोक्त सभी

प्र. 27. नागर ब्राह्मण समाज में नागर जाति की उपजातियां है-
(अ) वड़नगरा, दशोरा (ब) विसनगरा, प्रश्नोरा
(स) कृषोरा, साहोदरा (द) उपरोक्त समस्त उपजातियां

प्र. 28. दशपुर (मंदसौर) में नागर पुरुषों के नरसंहार के पश्चात् 'सतियों के चबूतरे' कहां है
(अ) नर्मदा नदी में (ब) शिवना नदी में
(स) क्षिप्रा नदी में (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 29. नागर समाज की उत्पत्ति का मूल स्थान जहां त्रिलोक नापते समय भगवान वामन ने पहला पद (पाव रखा) था-
(अ) वड़नगर (गुजरात) (ब) अवंतिका (उज्जैन म.प्र.)
(स) नासिक (महाराष्ट्र) (द) बांसवाड़ा (राजस्थान)

प्र. 30. उज्जैन के प्रसिद्ध ज्योतिष शास्त्री जिन्होंने काल की गणना कर उज्जैयनी पंचाग का निर्माण किया-
(अ) पं. अवध नारायण त्रिवेदी (ब) पं. सूर्य नारायण व्यास
(स) पं. लक्ष्मीशंकर शास्त्री (द) इनमे से कोई नहीं।

प्र. 31. देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर के राष्ट्रीय सेवा योजना N.S.S.के मुख्य संगठक अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त प्राध्यापक जो नागर समाज के गौरव है-
(अ) डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय (ब) डॉ. विनोद नागर
(स) डॉ. महेन्द्र नागर (द) डॉ. वी.डी. नागर

प्र. 32. शिरडी वाले सांई बाबा के समकालीन भक्त मुंबई के प्रतिष्ठित नागर प्रसिद्ध वकील श्री एच.एस. दीक्षित (काका साहेब) का पूरा नाम है।
(अ) हरिशंकर दीक्षित (ब) हरिश्रवण दीक्षित
(स) हरि सीताराम दीक्षित (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 33. राजाराम सीताराम दीक्षित वाचनालय/पुस्तकालय कहां पर स्थित है।
(अ) खण्डवा (ब) इन्दौर (स) नागपुर (द) मुंबई

प्र. 34. उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश नागर समाज के व्यक्ति थे।
(अ) मोरेश्वर राव दीक्षित (ब) पी.एन. भगवती
(स) एम.एन. बुच (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 35. नागर समाज के गौरव का नाम बताईये जो केन्द्रीय मंत्री एवं राज्यपाल भी रहे।
(अ) हरेन पंड्या (ब) जयसुखलाल हाथी (स) कांतिलाल हाथी (द) हरिन पाठक

प्र. 36. म.प्र. के मुख्य न्यायाधीश का पद किस नागर व्यक्ति द्वारा सुशोभित किया गया।
(अ) व्ही.टी. मंडलोई (ब) पी.व्ही. दीक्षित
(स) एस.के. दवे (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 37. नागर समाज के अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त साहित्यकार थे।
(अ) डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय (ब) डॉ. अमृतलाल नागर
(स) डॉ. व्ही.डी. नागर (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 38. 'निकाह' फिल्म की पटकथा लिखी थी।
(अ) स्मिता ज्ञानिक (ब) डॉ. अचला नागर
(स) मीता वशिष्ट (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 39. संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के राजदूत कौन रहे थे
(अ) चिन्मय धारेखान (ब) सुधीर व्यास
(स) विष्णुदत्त नागर (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 40. बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी के कुलपति रहे हैं-
(अ) डॉ. एच.एस. मेहता (ब) डॉ. व्ही.एस. झा
(स) डॉ. श्यामसुन्दर व्यास (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 41. पी.के. दवे किसी केन्द्र शासित राज्य के उपराज्यपाल रहे-
(अ) दिल्ली (ब) पाण्डीचेरी (स) दमन एवं दीव (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 42. नागर समाज की प्रसिद्ध पार्श्व गायिका है-
(अ) प्रीति झा (ब) साधना सरगम (स) अलका याज्ञिक (द) वंदना याज्ञिक

प्र. 43. नाग के कांटने का जहर उतारने का मंत्र किस नागर पंडित के नाम से प्रसिद्ध है-
(अ) मुकुंदराम मण्डलोई (ब) मुकुंदराम दवे
(स) मुकुंदराम त्रिवेदी (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 44. नागर समाज की श्रीमती नंदा मण्डलोई किस पद पर रही-
(अ) महापौर (ब) जिला पंचायत अध्यक्ष
(स) सदस्य विधानसभा (द) सदस्य -संसद

प्र. 45. इनमें से किसे राय बहादुर की उपाधि प्राप्त थी-
(अ) वामनराव मण्डलोई (ब) कृष्णराव जोशी
(स) गोविन्दराव मण्डलोई (द) भगवंतराव मण्डलोई

प्र. 46. नार्मल स्कूल एवं कन्या महाविद्यालय की भूमि किसने दान की थी-
(अ) श्री भीका जी पोद्दार (ब) श्री अन्नाभाऊ मण्डलोई
(स) विनायक राव दीक्षित (द) इनमें से कोई नहीं

प्र. 47. 'माताजी' की समाधि कहां पर स्थित है-
(अ) सेंट पायस स्कूल के पीछे आनन्द नगर (ब) शास्त्री नगर में
(स) पदमनगर में (द) रामेश्वर नगर में

प्र. 48. नागर ब्राह्मण समाज द्वारा मनाई जाने वाली प्रमुख जयंती कौन सी है-
(अ) नर्मदा जयंती (ब) महेश जयंती (स) हाटकेश्वर जयंती (द) परशुराम जयंती

प्र. 49. अखिल भारतीय मण्डलोई कप प्रतियोगिता किस खेल से संबंधित है-
(अ) हॉकी (ब) फुटबॉल (स) टेनिस (द) क्रिकेट

प्र. 50. अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को किस नागर नेता ने सुशोभित किया-
(अ) डॉ. जीवराज मेहता (ब) हितेन्द्र देसाई
(स) के.एम. मुंशी (द) यू.एन. ढेबर

-संयोजक सरोज कुमार जोशी
323 'माधवनिकुंज', आनन्द नगर खण्डवा

उपरोक्त प्रतियोगिता के परिणाम आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रेम बढ़ता है साथ-साथ खाने से

परिवार के सभी सदस्यों का एक साथ मिल बैठकर भोजन करना न केवल आपसी सौहार्द बढ़ाता है बल्कि यह भोजन से प्राप्त होने वाले फायदों को भी बढ़ाता है, ऐसी विशेषज्ञों और डाक्टरों की राय है। एक शोध के अनुसार यह परिवार के अंदर कलह की संभावनाओं को भी कम करता है और आजकल इस भाग-दौड़ की जिंदगी में भी तनाव मुक्त जीवन सुलभ कराता है। एक साथ भोजन करने के लिए बैठना एक ऐसा मंच उपलब्ध कराता है जहां सभी सदस्य अपनी दिनभर की घटनाओं और उलझनों को एक दूसरे के साथ शेयर कर सकते हैं। आपसी वार्तालाप जहां कई समस्याओं का हल चुटकी में सुझा जाता है , वहीं एक दूसरे को समझने का एक बेहतर अवसर भी देता है। एक दूसरे की समस्याओं को समझना आपसी रिश्ते को प्रगाढ़ बनाता है। बच्चे बहुत जिज्ञासु और अनुकरण करने वाले होते हैं इसलिए उन्हें भी साथ ही भोजन पर बैठाने की आदत डालनी चाहिए। यह उनके लिए प्रतियोगिक पाठशाला होती है जहां वे अनुशासन और कर्त्तव्य सीख सकते हैं।

पर्याप्त समय दें:- भोजन करने के लिए कम से कम आधे घंटे का वक्त निर्धारित करना चाहिए। इससे बच्चों को भी भोजन समाप्त करने का पर्याप्त अवसर मिल जाता है और बात करने का सिलसिला भी पूरा हो जाता है। अक्सर दिन में सभी को अपने-अपने समय से ऑफिस आदि जाने की जल्दबाजी होती है। ऐसे में दिन के समय इतना वक्त निकालना प्रायः संभव नहीं होता लेकिन रात के भोजन के समय इसका खास ख्याल रखकर क्षतिपूर्ति की जा सकती है।

रुकावटें दूर करें:- टी.वी. के कोई मनपसंद धारावाहिक या ऑडियो का तेज गीत-संगीत आपसी बातचीत में बाधा उत्पन्न करते हैं। ध्यान दूसरी तरफ होने से जहां भूख कम हो जाती है वहीं साथ बैठकर भोजन करने का कोई मतलब भी नहीं रह जाता, इसलिए बेहतर है इस समय टी.वी. बंद कर दें।

खुशनुमा माहौल बनाएं:- भोजन के वक्त हंसी-खुशी की बातों पर ध्यान केन्द्रित कर माहौल खुशनुमा बनाया जा सकता है। डॉक्टरों का मानना है कि ऐसे माहौल में पाचन क्रिया सुचारू रूप से चलती है और पर्याप्त भोजन लिया भी जा सकता है।

कहने का मौका दें:-परिवार के सभी सदस्यों को अपनी पूरी बात कहने का मौका दें। बच्चों की भी पूरी बातें सुने। इससे मन के उद्‌गार निकलते हैं। मन हल्का होता है, संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न नहीं होती और न ही हीनभावना पनपने पाती है।

सहभागिता बढ़ाएं:- सभी को थोड़ा बहुत अवसर दें भोजन की आवश्यक चीजों को इकट्ठा करने का। इससे न केवल भोजन में विविधता आती है बल्कि उत्तरदायित्व का भी बोध होता है। इससे भोजन के प्रति ज्यादा रूचि और उत्साह पैदा होता है।

यादगार बनाएं:- विशेष रूप से डायनिंग टेबल और घर को सजा-संवार कर एवं खास व्यंजनों को भोजन में शामिल कर छुट्टी के दिन या विशेष अवसरों को यादगार बनाया जा सकता है।

संकलन - श्रुति शर्मा

भगवान श्री राम के आदर्श और वर्तमान परिप्रेक्ष

सबसे पहले तो हम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम से हाथ जोड़कर यह प्रार्थना करें कि जब तक पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व है, उनके आदर्शों का प्रभाव जनमानस पर बना रहे ताकि दुनिया में हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए शांतिपूर्ण ढंग से अपना जीवन व्यतीत कर सके।

भगवान राम का तो संपूर्ण जीवन चरित्र ही शिक्षा योग्य है वो ईश्वर है किन्तु उन्होंने मनुष्य के रूप में जन्म लेकर सारे रिश्ते नातों में बंधकर भी हर परिस्थिति में उच्चतम आदर्श स्थापित किये। राजा दशरथ के आदेश पर वनवास जाकर पिता की कठोर आज्ञा का पालन करना, राज परिवार में बहुपत्नी प्रथा होते हुए भी एक पत्नी व्रत धारण करना, अपने छोटे भाई लक्ष्मण को पुत्रवत स्नेह देना, भरत को उदार हृदय से क्षमा करते हुए गले लगाना रानी कैकई के प्रति कोई दुर्भावना न रहते हुए सम्मान देना यह सभी रक्त संबंधों में स्थापित सर्वोत्तम आदर्श है।

गरीब वृद्धा शबरी की झोपड़ी में झूठे बैर प्रेमपूर्वक खाना, सरयू नदी पार कराने के लिए निषाद राज का आभार मानना, गिद्धराज जटायु का उपकार मानते हुए ससम्मान दाहसंस्कार करना, वानर राज सुग्रीव से मित्रताकर उन्हे उनका राज्याधिकार पुनः दिलवाने, सामाजिक संबधों में स्थापित आदर्श हैं। वायुपुत्र हनुमान का नाम राम भक्ति का पर्यायवाची है हनुमानजी ने वानर के रूप में जन्म लिया, किन्तु श्री राम की भक्ति ने उन्हें पूज्यनीय ईश्वर बना दिया। प्रभु ने अपने भक्तों को प्रेम और सम्मान दिया एवं समय-समय पर आभार भी प्रकट किया। भगवान श्री राम शांति प्रिय है, उन्होंने रावण के साथ युद्ध को टालने का भरपूर प्रयास किया। स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर होते हुए भी पहले हनुमान जी और बाद में अंगद को शांति दूत बनाकर भेजा। वर्तमान संदर्भ में भी हमारी भारतीय मानसिकता पर प्रभु श्रीराम का प्रभाव चंहुओर दिखाई देता है। हम अपने पारिवारिक जीवन में छोटे-बड़े सभी सदस्यों से यथायोग्य व्यवहार करते है। हम घरेलु नौकरों से, दूधवाले, सब्जीवाले तथा इसी तरह के हमारे आसपास के अन्य लोगों से भी सम्मानपूर्वक व्यवहार करते है। वैश्विक संदर्भ में देखे तो भारत एक शांतिप्रिय देश की छवि रखता है पर अवसर आने पर अपनी शक्ति का परिचय भी देता है, प्रभु श्री राम के आदर्शों पर चलकर हम और हमारा राष्ट्र इसी तरह प्रगति के सोपानों पर आगे बढ़ता रहें।

-विभा मनोज नागर
166-169 गोयल नगर, 202,
सुखसागर अपार्टमेन्ट, इन्दौर

मंत्र साधना (जप) से मिलता है शुभ फल

आचार्य चाणक्य का कथन है किसी ज्ञानवान व्यक्ति का साथ मिल जाये तो हजारों यज्ञों से भी बढ़कर है, इसके विपरीत यदि मुर्खों व दुष्टों की संगति में रहना पड़े तो परिणाम दुःख दायी ही होगा।

कोटिल्य का नीति शास्त्र का संदेश है कि भले ही सारी जिन्दगी अकेला रहना पड़े, लेकिन दुष्ट मनुष्यों की संगति में कभी मत बैठना। दुष्टों की संगति आपके सुख चैन को बर्बाद कर देगी।

वर्तमान वैज्ञानिक युग में भी यदि हम विवेकपूर्ण दृष्टि से अखिल ब्रह्माण्ड का सरसरी तौर अध्ययन करें तो इस बात का पूर्णतया ज्ञान होती है कि भारतीय मानव जीवन एक मंत्र प्रधान जीवन है। हमारे प्राचीन संस्कार अनेक प्रकार की विपत्तियों-आपत्तियों के उपरान्त अभी तक सनातन धर्मावलंबी मानव समाज के अन्तस्थल में बीज के रूप में दिखाई देते है, जो यदाकदा दृष्टिगोचर होता रहता है। धर्म का परिपालन करने वाले संत महात्मा ज्ञानी ध्यानी त्यागी तपस्वी सत्यवादी व्यक्ति सत्याचरण करने वाले अखण्ड परम्परा रूप से उत्पन्न होते आये है। और भविष्य में भी इस परम्परा का लोप नहीं होगा। क्योंकि तपोवनों कन्दराओं, गुफाओं, वनों में भी इस परम्परा का अविरल स्त्रोत प्रभावित होता ही रहा है यतो धर्मोस्ततो जयः। जो समाज धर्मानुसार आचरण में अग्रसर होते है वे सदैव अडिग रहते है। भारत के ऋषिमुनि हजारों वर्षो तक एकान्त में अंगसाधना करते रहे वेदों में अनेक उपासनाओं का वर्णन मिलता है। तभी उपासना में मंत्रसाधना को विशेष महत्व दिया गया है हमारे पूर्वज पूज्य गौतम कणाद वशिष्ठ आदि ऋषि महर्षियों ने मंत्रों की साधना कर असंख्य शक्तियों को प्राप्त किया है, गायत्री मंत्र की साधना से राजर्षि विश्वामित्र ने ब्रह्मर्षि पद प्राप्त किया था। गायत्री मंत्र के प्रभाव से दुर्वासा आदि ऋषियों ने अद्भूत पराक्रम प्राप्त किये थे। गायत्री वे प्रभाव से रामानुजाचार्य, निम्बाकाचार्य माधवाचार्य आदि आचार्यों ने अद्भूत अलौकिक शक्ति आत्मबल प्राप्त करके इश्वरीय शक्ति प्राप्त कर प्रसिद्ध हुए है। मंत्र जप से मनुष्य की आत्मशुद्धि होती है। वह बर्हिमुखी से अन्तर्मुखी हो जाता है। मंत्र जाप से दैवीय शक्ति बढ़ जाती है। मंत्र जाप स्वयं एक चमात्कारिक शक्ति है। मंत्र जाप करने से श्रद्धाभक्ति और ईश्वर विश्वास की पूर्णता हो जाती है व जप में विश्वास श्रद्धा रखने वालों को उत्तम फल प्राप्त होता है, इसका उल्लेख कई ग्रंथों में मिलता है। जाप के समय माला का अपना स्थान है, शास्त्रों में कहा गया है कि जप गोपनीय रखना चाहिए माला को गोमुख में रखकर या वस्त्र में लपेटकर करना चाहिए जिससे जपसफल उत्तम बताया है मंत्र जाप के समय आलस्य जम्हाई निद्रा छींकना, थूकना, अपवित्र अंग का स्पर्श तथा क्रोधादि का परित्याग करना चाहिए। असत्य भाषण तथा कुटिलता का परित्याग करे। जाप कर्ता पैर फैलाकर जाप न करे। यहां तक कि सज्जनों से भी न बोले। प्रायः मौन धारण करें। साधना (उपासना स्थल) को पूर्ण सात्विक शुद्ध होना चाहिए। साधक को अपनी इन्द्रियों पर संयम रखना चाहिए। सात्विक आहार लेना चाहिए। मंत्र जाप करते समय उसके अर्थ का भी चिन्तन करना चाहिए। मंत्र जाप से एकाग्रता और शक्ति उत्पन्न होती है। मंत्र में ईश्वर के जिन मंत्रों का वर्णन किया गया है वह गुण हममे आ रहे है ऐसी भावना मन में दृढ़ करना इससे गुणों को अपने अंतःकरण में स्थापित करने में सहायता मिलती है। जपकर्ता का मुंह दक्षिण दिशा में वर्जित है। जप कर्ता को पूर्व-पश्चिम या उत्तराभिमुख होकर मंत्र जाप करना चाहिए। इससे अंतःकरण पवित्र होता है। मन में श्रद्धाभक्ति व सहनशीलता पैदा होती है। तंत्र शास्त्र के अनुसार मन की शुद्धि पवित्रता संयम वैराग्य मंत्रार्थ यह जपसिद्धी की प्रधान सम्पत्तियां है। मंत्र साधना से अपवित्रता, रागद्वेष बाधक माने गये है। मंत्रजाप के लिए चित्त का स्वस्थ व शांत होना आवश्यक है। जब मन में अशांति चिन्ता उत्तेजना भय व संदेह हो तब मन का एक स्थान पर स्थिर होना कठिन है ऐसी स्थिति में साधक का जाप में मन नहीं लगता है ध्यान में मन नहीं लगता है जब कर्ता माला को घुमाता है मंत्र भी बोलता है लेकिन चित्त (मन) इधर उधर भगता रहता है ऐसी स्थिति में सब ओर से मन हटाकर ईश्वर का ध्यान करें, गुरु का ध्यान करते हुए मंत्र जाप करे। वैसे भी हमारे नागर समाज में हमारे पूर्वज मंत्र साधना व वेद पाठ के अध्ययन के लिए प्रसिद्ध थे उन्होंने नागर समाज व गौरवान्वित किया। नागरसमाज में एवं कहावत प्रसिद्ध है नागर का बेटा हूं कई भी दुर्गा (दुर्गासप्तशती) ले के बैठी जावेगा तो भगवति की कृपा दृष्टि बरसने लगेगी जीवन आनन्द के साथ बीती जायगो। उपरोक्त कथन मैंने मेरे पू. स्व. दादाजी नाथू रामजी त्रिवेदी ओर मेरी मम्मी के मासाजी (मांसाजी बासाब) पं. हरिवल्लभ पंचोलीजी के श्री मुख से कई बार सुना है। जब सब ओर से निराशा हो तो माँ भगवती सही राह दिखाती है। यदि हम लोग भी इस भागमभाग के युग में अपनी रोज की दिनचर्या में कुछ समय देवी की उपासना करेंगे तो हमें मन की शांति मिलेगी।

-डॉ. उमा जयदेव त्रिवेदी
इन्दौर फोन 2400344

लघुकथा

माटी के दीये

एक कहानी है किसी गांव के पास एक ऊंची पहाड़ी है। कोई 15 कि.मी. की कठिन चढ़ाई के बाद ही उसके शिखर पर पहुंचा जा सकता है। गांव का एक किसान आकर्षणवश, उत्सुकतावश वहां पहुंचना चाहता है। दिन में गर्मी का ताप न लगे इसलिये वह तीसरे पहर घर से निकल पड़ता है। पहाड़ी पर चढ़ते-चढ़ते घना अंधेरा होता है। उसके पास एक छोटा कंदील भर है, जिसका प्रकाश बस कोई दस कदम तक ही जा पाता है। सोच में पड़ा किसान, दस मील का सफर और दस कदम का प्रकाश...। सोचते-सोचते वह तलहटी पर हतप्रभ खड़ा रहताहै। तभी एक उससे भी बूढ़ा आदमी एक छोटा सा दीया हाथ में लेकर उसके पास से निकल कर शिखर की ओर आगे बढ़ जाता है। किसान के पुकार कर रोकने पर, अपनी दुविधा बताने पर बूढ़ा आदमी ठठा कर हंस पड़ता है, कहता है 'अरे मूर्ख! दीया छोटा है तो क्या तू कदम तो आगे बढ़ा दस-दस कदम करके तो पृथ्वी की परिक्रमा लगाई जा सकती है।

यह है माटी के दीये का प्रकाश। हम सब माटी के दीये बनें व स्नेह की बाती लगाकर प्रकाश फैलाए-एक कदम या दस कदम।

-संकलित- कु. प्राची मण्डलोई, इन्दौर

दिसम्बर माह का राशिफल

चन्द्र राशि पर आधारित

मेष राशि- नामाक्षर- चू,चे,चो,ला,ली,लू,ले,लो,अ

मेष राशि वालों को यह महीना मिलाजुला रहेगा। कार्य व्यापार में वृद्धि होगी बहुत से रूके कार्य पूरे होंगे। वहीं चोरी बेइमानी से हानि की आशंका रहेगी। परिवार में सीनियर्स के स्वास्थ्य का समय कम ठीक है। अनावश्यक विवादों से बचें। गिरने पड़ने से चोट लग सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष राशि- नामाक्षर- इ,उ,ए,ओ,वा,वी,वू,वे,वो

इस राशि वालों को यह महीना अनुकूल रहेगा। इनके कार्य व्यापार में उन्नति के योग दिखते हैं लेकिन जो लोग स्पेकुलेशन आदि से जुड़े हैं उन्हें बहुत सावधानी की आवश्यकता रहेगी। वृष राशि वालों को इन दिनों अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कुछ लोगों को सन्तान की ओर से परेशानियां आएंगी।

मिथुन राशि- नामाक्षर- का,की,कू,घ,ड,छ,के,को,हा

मिथुन राशि वालों के लिए यह महीना अच्छा जायेगा। जो लोग साझे सहयोग का कार्य कर रहे हैं उनकी लगातार उन्नति होगी। व्यापारी वर्ग को यह महीना अच्छा ही रहेगा। घरेलू मामलों में तनाव होगा। परिवार में सीनियर्स के स्वास्थ्य को अच्छा नहीं है। जो लोग जमीन जायदाद की खरीद बिक्री कर रहे हैं उन्हें इस समय थोड़ा इन्तजार करना ठीक रहेगा।

कर्क राशि- नामाक्षर-ही,हू,हे,हो,ड़ा,डी,डू,डे,डो

इस राशि वालों को यह महीना मिलाजुला फल देगा। जो लोग किसी भी तरह के कर्ज ब्याज के कार्यों में फंसे हैं उन्हें कष्ट रहेगा। जो लोग नया कार्य कर रहे हैं उन्हें भी यह समय अच्छा नहीं है स्वास्थ्य की दृष्टि से भी ग्रह योग अच्छे नहीं है अतः कर्क राशि वालों को इस महीने अधिक सावधानी की आवश्यकता है।

सिंह राशि- नामाक्षर- मा,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे

सिंह राशि वालों को यह समय अनुकूल ही दिखता है। इनके एक तरफ शनि तो दूसरी तरफ मंगल है अतः जो लोग कर्ज ब्याज में फंसे है उनको यह समय काफी परेशानी का रहेगा। बहुत से लोग इन दिनों गलत निर्णय का शिकार होकर के अपने लिए समस्याएं खड़ी करेंगे। इन्हें इन दिनों सावधान रहना चाहिए तथा शनि के दान का उपाय करना चाहिए।

कन्या राशि- नामाक्षर- टो,पा,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो

कन्या राशि वालों के लिए समय ठीक रहेगा। साढ़ेसाती के बावजूद इनके कार्य व्यापार में वृद्धि रहेगी। अर्थ तंत्र मजबूत होगा। लेकिन जो लोग स्वास्थ्य की समस्या से ग्रस्त है उनको कोई विशेष राहत नहीं मिलेगी। इसी तरह पारिवारिक समस्याएं भी खड़ी हो सकती है इस राशि वालों को अगले चार पांच वर्ष तक मादक पदार्थों से दूर रहना चाहिए।

तुला राशि- नामाक्षर- रा,री,रु,रे,रो,ता,ती,तू,ते,

तुला राशि वालों के लिए यह महीना मिलाजुला रहेगा। कार्य व्यापार में वृद्धि रहेगी। धन बढ़ेगा। यात्रा होगी। स्वास्थ्य को अनुकूल समय रहेगा। जो लोग घर मकान वाहन आदि के फेर में हैं उन्हें सफलताए प्राप्त होंगी। परिवार वृद्धि, सन्तान योग भी इन दिनों बनने के योग हैं। सब कुछ ठीक होने के बाद भी यह लोग स्वयं को अकेला सा महसूस करेंगे।

वृश्चिक राशि- नामाक्षर- तो,ना,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू

वृश्चिक राशि वालों को यह महीना उत्तम रहेगा। आमदनी में वृद्धि होगी। लेकिन जो लोग किसी तरह की समस्या से ग्रस्त हैं उन्हें निकल पाना कठिन रहेगा। वृश्चिक राशि का स्वामी नीच घर में होने से इन्हें पैर पीड़ा या चोट ऑपरेशन आदि के योग बनते हैं। लिखा पढ़ी के कार्यों को करने वाले लाभ में रहेंगे।

धनु राशि- नामाक्षर- ये,यो,भा,भी,भू,धा,फा,ढ़ा,भे

इस राशि वालों को यह महीना उत्तम रहेगा। इनके कार्य व्यापार में वृद्धि रहेगी। स्वास्थ्य अनुकूल चलेगा। कुछ धार्मिक कार्यों, या यात्राओं के योग बनते हैं। जिन लोगों का पैसा कहीं फंसा हुआ है प्रयास करने पर उसे प्राप्त किया जा सकता है। नौकरी पेशा लोगों में से बहुत से एक कार्य छोड़कर के दूसरे की तलाश में रहेंगे।

मकर राशि- नामाक्षर- भो,जा,जी,खी,खू,खे,खो,गा,गी

मकर राशि वालों के लिए यह महीना अच्छा रहेगा। व्यापारी वर्ग के कार्यव्यापार में उन्नति रहेगी। बहुत से मकर राशि वालों को सन्तान आदि के योग बनते हैं। इस समय किसी बड़े के सहयोग या उनकी सलाह से कार्य करना लाभकारी रहेगा। अन्य कोई बहुत बड़े बदलाव नहीं आयेंगे। स्वास्थ्य अच्छा चलेगा। बहुत से रूके कार्य पूरे होंगे।

कुंभ राशि- नामाक्षर- गू,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,दा

कुंभ राशि वालों को यह समय अच्छा रहेगा। इनकी आर्थिक समस्याएं सुलझेंगी। दाम्पत्य जीवन में कुछ तनाव उत्पन्न हो सकता है। जो लोग वात रोग या रक्त तंत्र के विकारों से पीड़ित है उन्हें इन दिनों विशेष सावधान रहने की आवश्यकता है। व्यापारी वर्ग के लिए यह महीना कुछ खास नहीं दिखता है। सरकारी मामलों में सावधानी रखें।

मीन राशि- नामाक्षर- दी,दु,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची

मीन राशि वालों के लिए यह महीना अच्छा रहेगा। कार्य व्यापार में उन्नति होगी। लेकिन स्वास्थ्य के मामले में अधिक सावधानी की आवश्यकता रहेगी। इन दिनों मीन राशि वाले अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। लेकिन किसी भी प्राप्तब्य के लिए अधिक लालच करना हानिकारक रहेगा। आय के स्त्रोत बढ़ सकते है।

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्त रेखा विशेषज्ञ वास्तुविद्

फन का फंडा

जज ने चोर से कहा- मुझे याद है पांच साल पहले भी तुम कोट चुराने के जुर्म में लाए जा चुके हो।

चोर बोला- जी हां, लेकिन वह कोट अब फट चुका है।